पुञ्ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-IX

Hindi

Specimen Copy

Aug & Sept

2021-22

पाठ-सूची

क्रमांक	माह	पाठ का नाम	लेखक का नाम
०१	अगस्त	गद्य पाठ-३-एवरेस्ट-मेरी शिखर यात्रा	बच्छेन्द्रिपाल
०२		पद्य पाठ-११-आदमीनामा	नजीर अकबराबादी
०३		संचयन-३-कुल्लू कुम्हार की उना कोटि	के. विक्रम
		व्याकरण-संधि लेखन-अनुच्छेद,पत्र-लेखन	
०४	सितम्बर	गद्य-पाठ-४-अतिथि तुम कब जाओगे	शरद जोशी
०५		पद्य-पाठ-१२ -एक फूल की चाह	सियारामशरण गुप्त
०६		संचयन-मेरा छोटा सा निजी पुस्तकालय	धर्मवीर भारती
०७		व्याकरण-वर्ण-विच्छेदन लेखन-चित्र –लेखन	
०८		व्याकरण-उपसर्ग-प्रत्यय संवाद-लेखन	
०९		व्याकरण-विराम-संज्ञा,सर्वनाम,क्रिया,वाच्य लेखन-कहानी ,विज्ञापन	

पाठ-३-एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा

लेखिका बचेंद्री पाल -

जन्म – 1954

पाठ सार:

बचेंद्री पाल अपनी एवरेस्ट की चढ़ाई के सफर की बात करते हुए कहती हैं कि एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाला दल 7 मार्च को दिल्ली से हवाई जहाज़ से काठमांडू के लिए चल पड़ा था। उस दल से पहले ही एक मज़बूत दल बहुत पहले ही एवरेस्ट की चढ़ाई के लिए चला गया था जिससे कि वह बचेंद्री पाल वाले दल के पहुँचने से पहले बर्फ के गिरने के कारण 'बेस कैम्प' बने कठिन रास्ते को साफ कर सके। बचेंद्री पाल कहती हैं कि नमचे बाज़ार, शेरपालैंड का एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है।यहीं से बचेंद्री पाल ने सर्वप्रथम एवरेस्ट को देखा था। बचेंद्री पाल कहती हैं कि लोगों के द्वारा बचेंद्री पाल को बताया गया कि शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिणपूर्वी पहाड़ी पर तूफानों को झेलना पड़ता है-, विशेषकर जब मौसम खराब होता है। जब उनका दल 26 मार्च को पैरिच पहुँचा तो उन्हें हमें बर्फ के खिसकने के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दुःख भरा समाचार मिला। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे। इस समाचार के कारण बचेंद्री पाल के अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाई उदासी को देखकर उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने सभी सदस्यों को साफ़साफ़ कह दिया कि एवरेस्ट पर चढ़ाई करना कोई आसान काम नहीं है-, वहाँ पर जाना मौत के मुँह में कदम रखने के बराबर है। बचेंद्री पाल कहती हैं कि उपनेता प्रेमचंद, जो पहले वाले दल का नेतृत्व कर रहे थे, वे भी 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने बचेंद्री पाल के दल की पहली बड़ी समस्या बचेंद्री पाल और उनके साथियों को खुंभु हिमपात की स्थिति के बारे में बताया। उन्होंने बचेंद्री पाल और उनके साथियों को यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ते को चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने बचेंद्री पाल और उनके साथियों का ध्यान इस पर भी दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ की नदी है और बर्फ का गिरना अभी जारी है। जिसके कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और उन लोगों को रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है। बचेंद्री पाल कहती हैं कि में पहुँचने से पहले उन्हें और उनके 'बेस कैंप' साथियों को एक और मृत्यु की खबर मिली। जलवायु के सही न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से अब बचेंद्री पाल और उनके साथी आशा उत्पन्न करने स्थिति में नहीं चल रहे थे। सभी घबराए हुए थे। बेस कैंप पहुँचाने पर दूसरे दिन बचेंद्री

पाल ने एवरेस्ट पर्वत तथा इसकी अन्य श्रेणियों को देखा। बचेंद्री पाल हैरान होकर खड़ी रह गई। बचेंद्री पाल कहती हैं कि दूसरे दिन नए आने वाले अपने ज़्यादातर सामान को वे हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ मीनू मेहता ने बचेंद्री पाल और उनके साथियों को अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लठ्ठों और रस्सियों का उपयोग, बर्फ की आड़ीतिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और उनके पहले दल के तकनीकी कार-्यों के बारे में उन्हें विस्तार से सारी जानकारी दी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि उनका तीसरा दिन हिमपात से कैंपएक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए पहले से ही निश्चित - टॉकी था-साथ चढ़ रहे थे। उनके पास एक वॉकी-था। रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल साथ, जिससे वे अपने हर कदम की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल ने उन्हें अपने पहुँचने की सूचना दी क्योंकि कैंपएक पर पँहुचने - वाली केवल वे दो ही महिलाएँ थीं। जब अप्रैल में बचेंद्री पाल कैंप बेस में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ उनके पास आए थे। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्त्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जब उनकी बारी आई, तो उन्होंने अपना परिचय यह कहकर दिया कि वे इस चढ़ाई के लिए बिल्कुल ही नई सीखने वालीं हैं और एवरेस्ट उनका पहला अभियान है। तेनजिंग हँसे और बचेंद्री पाल से कहा कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि शिखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फिर अपना हाथ बचेंद्री पाल के कंधे पर रखते हुए उन्होंने कहा कि बचेंद्री पाल एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती है। उसे तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए। बचेंद्री पाल कहती हैं कि 15-16 मई 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन वह ल्होत्से की बर्फीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैंप तीन में थी। वह गहरी नींद में सोइ हुई थी कि रात में- 12.30 बजे के लगभग उनके सिर के पिछले हिस्से में किसी एक सख्त चीज़ के टकराने से उनकी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक ज़ोरदार धमाका भी हुआ। एक लंबा बर्फ का पिंड उनके कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और उसका एक बहुत बड़ा बर्फ का टुकड़ा बन गया था। लोपसांग अपनी स्विस छुरी की मदद से बचेंद्री पाल और उनके साथियों के तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे । उन्होंने बचेंद्री पाल के चारों तरफ की कड़ी जमी बर्फ की खुदाई की और बचेंद्री पाल को उस बर्फ की कब्र से निकाल कर बाहर खींच लाने में सफल हो गए। बचेंद्री पाल कहती हैं कि अगली सुबह तक सारे सुरक्षा दल आ गए थे और 16 मई को प्रातः 8 बजे तक वे सभी कैम्पदो पर पहुँच गए थे। बचेंद्री - पाल और उनके दल के नेता कर्नल खुल्लर ने पिछली रात को हुए हादसे को उनके शब्दों में

कुछ इस तरह कहा कि यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षाकार्य का एक अत्यंत साहस से भरा कार्य - था। बचेंद्री पाल कहती हैं कि सभी नौ पुरुष सदस्यों को जिन्हें चोटें आई थी और हड्डियां टूटी थी उन्हें बेस कैंप में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर बचेंद्री पाल की तरफ मुड़े और कहने लगे कि क्या वह डरी हुई है? इसके उत्तर में बचेंद्री पाल ने हाँ में उत्तर दिया। कर्नल खुल्लर के फिर से पूछने पर कि क्या वह वापिस जाना चाहती है? इस बार बचेंद्री पाल ने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया कि वह वापिस नहीं जाना चाहती।बचेंद्री पाल कहती हैं कि दोपहर बाद उन्होंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लिए नीचे जाने का निश्चय किया। उन्होंने बर्फीली हवा में ही तंबू से बाहर कदम रखा। बचेंद्री पाल को जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मिला। उसने बचेंद्री पाल के द्वारा लाई गई चाय वगैरह पी लेकिन बचेंद्री पाल को और आगे जाने से रोकने की कोशिश भी की। मगर बचेंद्री पाल को की से भी मिलना था। थोड़ासा और आगे - नीचे उतरने पर उन्होंने की को देखा। की बचेंद्री पाल को देखकर चौंक गयाऔर उसने बचेंद्री पाल से कहा कि उसने इतना बड़ा जोखिम क्यों उठाया? बचेंद्री पाल ने भी उसे दृढ़तापूर्वक कहा कि वह भी औरों की तरह एक पर्वतारोही है, इसीलिए वह इस दल में आई हुई है। बचेंद्री पाल कहती हैं कि साउथ कोल जगह के नाम से प्रसि 'पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर'द्ध है। बचेंद्री पाल कहती हैं कि अगले दिन वह सुबह चार बजे उठी। उसने बर्फ को पिघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चा ंकलेट का हलका नाश्ता करने के बाद वह लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि सुबह 6:20 पर जब अंगदोरजी और वह साउथ कोल से बाहर निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हलकीहलकी हवा चल रही थी-, लेकिन ठंड भी बहुत अधिक थी। बचेंद्री पाल और उनके साथियों ने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और बचेंद्री पाल को भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जमे हुए बर्फ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, ऐसा लगता था मानो शीशे की चादरें बिछी हों। उन सभी को बर्फ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना ही पड़ा और बचेंद्री पाल कहती हैं कि उन्हें इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे कि उस जमे हुए बर्फ की धरती को फावड़े के दाँते काट सके। बचेंद्री पाल कहती हैं कि उन्होंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोच-समझकर उठाया। क्योंकि वहाँ एक छोटी सी भी गलती मौत का कारण बन सकती थी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि दो घंटे से भी कम समय में ही वे सभी शिखर कैंप पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और उन्होंने कहा कि पहले वाले दल ने शिखर कैंप पर पहुँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि अब उनका दल इसी गति से चलता रहे तो वे शिखर पर

दोपहर एक बजे एक पहुँच जाएँगे। ल्हाटू ने ध्यान दिया कि बचेंद्री पाल इन ऊँचाइयों के लिए सामान्यतः आवश्यक, चार लीटर ऑक्सीजन की अपेक्षा, लगभग ढाई लीटर ऑक्सीजन प्रति मिनट की दर से लेकर चढ़ रही थी। बचेंद्री पाल कहती हैं कि जैसे ही उसने बचेंद्री पाल के रेगुलेटर पर ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ाई, बचेंद्री पाल कहती हैं कि उन्हें महसूस हुआ कि सीधी और कठिन चढ़ाई भी अब आसान लग रही थी।बचेंद्री पाल कहती हैं कि दक्षिणी शिखर के ऊपर हवा की गति बढ़ गई थी। उस ऊँचाई पर तेज़ हवा के झोंके भुरभुरे बर्फ के कणों को चारों तरफ़ उड़ा रहे थे, जिससे दृश्यता शून्य तक आ गई थी कुछ भी देख पाना संभव नहीं हो पा रहा था। अनेक बार देखा कि केवल थोड़ी दूर के बाद कोई ऊँची चढ़ाई नहीं है। ढलान एकदम सीधा नीचे चला गया है। यह देख कर बचेंद्री पाल कहती हैं कि उनकी तो साँस मानो रुक गई थी। उन्हें विचार आया कि सफलता बहुत नज़दीक है। 23 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर वह एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली बचेंद्री पाल प्रथम भारतीय महिला थी।बचेंद्री पाल कहती हैं कि एवरेस्ट की चोटी की नोक पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथसाथ खड़े हो सकें। चारों तरफ़ हजारों मीटर लंबी - सीधी ढलान को देखते हुए उन सभीके सामने प्रश्न अब सुरक्षा का था। उन्होंने पहले बर्फ के फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से खड़ा रहने लायक जगह बनाई। ख़ुशी के इस पल में बचेंद्री पाल को अपने मातापिता का ध्यान आया। बचेंद्री पाल कहती हैं - कि जैसे वह उठी, उन्होंने अपने हाथ जोड़े और वह अपने रज्जुनेता अंगदोरजी के प्रति आदर - भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने बचेंद्री पाल को प्रोत्साहित किया और लक्ष्य तक पहुँचाया। बचेंद्री पाल ने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने बचेंद्री पाल को गले से लगाया और उनके कानों में फुसफुसाया कि दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। वह बहुत प्रसन्न है। कर्नल खुल्लर उनकी सफलता से बहुत प्रसन्न थे। बचेंद्री पाल को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि वे बचेंद्री पाल की इस अलग प्राप्ति के लिए बचेंद्री पाल के मातापिता को बधाई देना चाहते- हैं। वे बोले कि देश को बचेंद्री पाल पर गर्व है और अब वह एक ऐसे संसार में वापस जाएगी, जो उसके द्वारा अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम अलग होगा|

* बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर:

प्रश्न 1 - एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाला दल दिल्ली से हवाई जहाज़ से काठमांडू कब चल पड़ा था?

(A) 7 मार्च को

(B) 5 मार्च को

(C) 10 मार्च को

(D) 8 मार्च को

प्रश्न 2 - बचेंद्री पाल ने सर्वप्रथम एवरेस्ट को कहाँ से देखा था?

(A) हवाई जहाज़ से

(B) बेस कैम्प से

(C) एवरेस्ट के तल से

(D) नमचे बाज़ार

प्रश्न 3 - शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को कहाँ से आने वाले तूफानों को झेलना पड़ता है?

(A) पूर्वी-दक्षिणी पहाड़ी से

(B) दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी से

(C) उत्तर-पूर्वी पहाड़ी से

(D) दक्षिणी-पश्चिमी पहाड़ी से

प्रश्न 4 - 26 मार्च को पैरिच पहुँचते ही लेखिका को कौन सा दुःख भरा समाचार मिला।

(A) बर्फ से रास्ता बंद होने का

(B) अभियान स्थगित होने का

(C) शेरपा कुली के घायल होने का

(D) एक शेरपा कुली की मृत्यु का

प्रश्न 5 - कर्नल खुल्लर ने सभी सदस्यों को सहज भाव से क्या स्वीकार करने को कहा?

(A) कठिन चढाई

(B) मृत्यु

(C) परेशानियाँ

(D) इनमें से कुछ नहीं

प्रश्न 6 - कैंप-एक कितनी ऊँचाई पर था?

(A) 600 मी.

(B) 5000 मी.

(C) 6000 मी.

(D) 8000 मी.

प्रश्न 7 - रसोई सहायक की मृत्यु किस कारण हो गई थी?

(A) हिमपात के कारण

(B) जलवायु के सही न होने के कारण

(C) हिमखंडों के खिसकने के कारण

(D) बिमारी के कारण

प्रश्न 8 - लेखिका के अनुसार अचानक हमेशा ही खतरनाक स्थिति कैसे बन जाया करती थी?

(A) बड़ी-बड़ी बर्फ की चट्टानों के अचानक से गिरने से

(B) अत्यधिक बर्फ गिरने से

(C) बर्फ के गलेशियर बनने के कारण

(D) बीमार पड़ने के कारण

प्रश्न 9 - कौन सा दिन हिमपात से कैंप-एक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए पहले से ही निश्चित था?

(A) पहला

(B) दूसरा

(C) तीसरा

(D) पाँचवा

प्रश्न 10 - कैंप-एक पर पँहुचने वाली दो महिलाएँ कौन थीं?

(A) डॉ मीनू मेहता तथा बचेंद्री पाल

(B) रीता गोंबू तथा बचेंद्री पाल

(C) डॉ मीनू मेहता तथा रीता गोंबू

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 11 - 29 अप्रैल को कैंप-चार कितनी ऊँचाई पर लगाया गया।

(A) 6900 मीटर

(B) 8900 मीटर

(C) 7900 मीटर

(D) 5900 मीटर

प्रश्न 12 - बचेंद्री पाल और उनके साथियों के तंबू का रास्ता साफ़ करने में कौन सफ़ल हो गए थे?

(A) लोपसांग

(B) तशारिंग

(C) एन.डी. शेरपा

(D) लोपसांग व् तशारिंग

प्रश्न 13 - बचेंद्री पाल को और आगे जाने से रोकने की कोशिश किसने की?

(A) की

(B) जय

(C) मीनू

(D) शेरपा

प्रश्न 14 - 'पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर' जगह के नाम से क्या प्रसिद्ध है?

(A) ईस्ट कोल

(B) वेस्ट कोल

(C) नार्थ कोल

(D) साउथ कोल

प्रश्न 15 - बिना ऑक्सीजन के कौन चढ़ाई करने वाला था?

(A) की

(B) जय

(C) अंगदोरजी

(D) बचेंद्री

प्रश्न 16 - बर्फ काटने के लिए किसका इस्तेमाल करना पड़ा?

(A) फावड़े का

(B स्विस छुरी का

(C) नुकीली छड़ी का

(D) इनमें से किसी का नहीं

प्रश्न 17 - कितने समय में वे सभी शिखर कैंप पर पहुँच गए?

(A) पाँच घंटे

(B) दो घंटे

(C) सात घंटे

(D) तीन घंटे

प्रश्न 18 - ऊँचाइयों के लिए सामान्यतः आवश्यक ऑक्सीजन की दर कितनी होती है?

(A) दो लीटर

(B) पाँच लीटर

(C) तीन लीटर

(D) चार लीटर

प्रश्न 19 - लेखिका एवरेस्ट की चोटी पर कब खड़ी थी?

(A) 23 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर

(B) 22 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर

(C) 29 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर

(D) 21 मई 1984 के दिन दोपहर के एक बजकर सात मिनट पर

प्रश्न 20 - लेखिका एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाली कौन सी महिला बनी?

(A) दूसरी

(B) पाँचवी

(C) पहली

(D) तीसरी

*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1.अग्रिम दल का नेतृत्व कौन कर रहा था?

उत्तर|अग्रिम दल का नेतृत्व प्रेमचंद कर रहे थे-

प्रश्न 2.लेखिका को सागरमाथा क्यों अच्छा लगा?

उत्तर-लेखिका को 'सागरमाथा' नाम इसलिए अच्छा लगा क्योंकि सागरमाथा का अर्थ है- सागर का माथा और एवरेस्ट संसार की सबसे ऊँची चोटी है।

प्रश्न 3.लेखिका को ध्वज जैसा क्या लगा?

उत्तर-लेखिका को तेज हवाओं के कारण उठी हुई चक्करदार बर्फीली आकृति ध्वज जैसी प्रतीत हुई।

प्रश्न 4.हिमस्खलन से कितने लोगों की मृत्यु हुई और कितने घायल हुए?

उत्तर-हिमस्खलन से दो व्यक्तियों की मृत्यु हुई और नौ लोग घायल हुए|

प्रश्न 5.मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा?

उत्तर-मृत्यु के अवसाद को देखकर कर्नल खुल्लर ने कहा कि ऐसे साहसिक अभियानों में होने वाली मृत्यु को सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए|

प्रश्न 6.रसोई सहायक की मृत्यु कैसे हुई?

उत्तर-रसोई सहायक की मृत्यु स्वास्थ्य के प्रतिकूल जलवायु में काम करने के कारण हुई|

प्रश्न 7.कैंप-चार कहाँ और कब लगाया गया?

उत्तर-कैंप-चार 7900 मीटर ऊँची 'साउथ कोल' नामक जगह पर 29 अप्रैल को लगाया गया था|

प्रश्न 8.लेखिका ने तेनजिंग को अपना परिचय किस तरह दिया?

उत्तर-लेखिका ने तेनजिंग को अपना परिचय देते हुए कहा कि वह नौसिखिया है और एवरेस्ट उसका पहला अभियान है।

प्रश्न 9.लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने उसे किन शब्दों में बधाई दी?

उत्तर-लेखिका की सफलता पर कर्नल खुल्लर ने कहा- मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा। देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा|

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

प्रश्न 1.नज़दीक से एवरेस्ट को देखकर लेखिका को कैसा लगा?
उत्तर-नजदीक से एवरेस्ट को देखने पर लेखिका भौंचक्की रह गई। उसे टेढ़ी-मेढ़ी चोटियाँ ऐसी लग रही थीं मानो कोई बरफ़ीली नदी बह रही हो।
प्रश्न 2.डॉ. मीनू मेहता ने क्या जानकारियाँ दीं?
उत्तर-डॉ. मीनू मेहता ने लेखिका को अल्युमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का निर्माण करने, लट्टों और रस्सियों का उपयोग करने, बर्फ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधने तथा अग्रिम दल के अभियांत्रिकीकार्यों की विस्तृत जानकारी दी|
प्रश्न 3.तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ में क्या कहा?
उत्तर-तेनजिंग ने लेखिका की तारीफ में कहा, "तुम पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो पहले ही प्रयास में शिखर पर पहुँच जाना चाहिए|
प्रश्न 4.लेखिका को किनके साथ चढ़ाई करनी थी?
उत्तर-लेखिका के अभियान-दल में यों तो लोपसांग, तशारिंग, एन.डी. शेरपा आदि अनेक सदस्य थे। किंतु उन्हें जिन साथियों के संग यात्रा करनी थी, वे थे-की, जय और मीनू|
प्रश्न 5.लोपसंगा ने तंबू का रास्ता कैसे साफ़ किया?
उत्तर-लोपसांग ने तंबू का रास्ता साफ़ करने के लिए अपनी स्विस छुरी निकाली। उन्होंने लेखिका के आसपास जमे बड़े-बड़े हिमपिंडों को हटाया और लेखिका के चारों ओर जमी कड़ी बरफ़ की खुदाई किया। उन्होंने बड़ी मेहनत से लेखिका को बरफ़ की कब्र से खींच निकाला।
प्रश्न 6.साउथ कोल कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी कैसे शूरू की?
उत्तर-'साउथ कोल' कैंप पहुँचकर लेखिका ने अगले दिन की चढ़ाई की तैयारी शुरू की। उसने खाना, कुकिंग गैस तथा ऑक्सीजन सिलेंडर इकट्टे किए। उसके बाद वह चाय बनाने की तैयारी करने लगी||

*-निम्नलिखित प्रश्नों के दीर्घ उत्तर लिखिए-

प्रश्न 1.उपनेता प्रेमचंद ने किन स्थितियों से अवगत कराया?
उत्तर-उपनेता प्रेमचंद ने अभियान दल को खंभु हिमपात की स्थिति की जानकारी देते हुए कहा कि उनके दल ने कैंप-एक जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है और फल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा इंडियों से रास्ता चिन्हित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बरफ़ की नदी है और बरफ़ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।
प्रश्न 2.हिमपात किस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?
उत्तर-बर्फ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही हिमपात कहलाता है। ग्लेशियर के बहने से बर्फ में हलचल मच जाती है। इस कारण बर्फ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें तत्काल गिर जाती हैं। इस अवसर पर

स्थिति ऐसी खतरनाक हो जाती है कि धरातल पर दरार पड़ने की संभावना बढ़ जाती है। अकसर बर्फ़ में गहरी-चौड़ी दरारें बन जाती हैं। हिमपात से पर्वतारोहियों की कठिनाइयाँ बहुत अधिक बढ़ जाती हैं|

प्रश्न 3.लेखिका ने तंबू में गिरे बरफ़ पिंड का वर्णन किस तरह किया है?

उत्तर-लेखिका ने तंबू में गिरे बरफ़ के पिंड का वर्णन करते हुए कहा है कि वह ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए नाइलान के तंबू के कैंप-तीन में थी। उसके तंबू में लोपसांग और तशारिंग उसके तंबू में थे। अचानक रात साढ़े बारह बजे उसके सिर में कोई सख्त चीज़ टकराई और उसकी नींद खुल गई। तभी एक जोरदार धमाका हुआ और उसे लगा कि एक ठंडी बहुत भारी चीज़ इसके शरीर को कुचलती चल रही थी। इससे उसे साँस लेने में कठिनाई होने लगी|

प्रश्न 4.लेखिका को देखकर 'की' हक्का-बक्का क्यों रह गया?

उत्तर-जय बचेंद्री पाल का पर्वतारोही साथी था। उसे भी बचेंद्री के साथ पर्वत-शिखर पर जाना था। शिखर कैंप पर पहुँचने में उसे देर हो गई थी। वह सामान ढोने के कारण पीछे रह गया था। अतः बचेंद्री उसके लिए चाय-जूस आदि लेकर उसे रास्ते में लिवाने के लिए पहुँची। जय को यह कल्पना नहीं थी कि बचेंद्री उसकी चिंता करेंगी और उसे लिवी लाने के लिए आएँगी। इसलिए जब उसने बचेंद्री पाल को चाय-जूस लिए आया देखा तो वह हक्का-बक्का रह गया|

प्रश्न 5.एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल कितने कैंप बनाए गए? उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर-पाठ से ज्ञात होता है कि एवरेस्ट पर चढ़ाई के लिए कुल पाँच कैंप बनाए गए। उनके दल का पहला कैंप 6000 मीटर की ऊँचाई पर था जो हिमपात से ठीक ऊपर था। दूसरा कैंप-चार 7900 मीटर की ऊँचाई पर बनाया गया था। कैंप-तीन ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी ढलान पर बनाया गया था। यहाँ नाइलोन के तंबू लगाए गए थे| एक कैंप साउथकोल पर बनाया गया था। यहीं से अभियान दल को एवरेस्ट पर चढ़ाई करनी थी। इसके अलावा एक बेस कैंप भी बनाया गया था।

प्रश्न 6.चढ़ाई के समय एवरेस्ट की चोटी की स्थिति कैसी थी?

उतर-जब बचेंद्री पाल एवरेस्ट की चोटी पर पहुँची तो वहाँ चारों ओर तेज़ हवा के कारण बर्फ़ उड़ रही थी। बर्फ़ इतनी अधिक थी कि सामने कुछ नहीं दिखाई दे रहा था। पर्वत की शंकु चोटी इतनी तंग थी कि दो आदमी वहाँ एक साथ खड़े नहीं हो सकते थे। नीचे हजारों मीटर तक ढलान ही ढलान थी। अतः वहाँ अपने आपको स्थिर खड़ा करना बहुत कठिन था। उन्होंने बर्फ के फावड़े से बर्फ़ तोड़कर अपने टिकने योग्य स्थान बनाया।

प्रश्न 7.सम्मिलित अभियान में सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के किस कार्य से मिलता है?

उत्तर-एवरेस्ट पर विजय पाने के अभियान के दौरान लेखिको बचेंद्री पाल अपने साथियो 'जय', की 'मीनू' के साथ चढाई कर रही थी, परंतु वह इनसे पहले साउथ कोल कैंप पर जा पहुँची क्योंकि वे बिना ऑक्सीजन के भारी बोझ लादे चढ़ाई कर रहे थे। लेखिका ने दोपहर बाद इन सदस्यों की मदद करने के लिए एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भर लिया और बरफ़ीली हवा में

कैंप से बाहर निकल कर उन सदस्यों की ओर नीचे उतरने लगी। उसके इस कार्य से सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय मिलता है।|

*-निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1.एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

उतर-एवरेस्ट की सर्वोच्च चोटी पर चढ़ना एक महान अभियान है। इसमें पग-पग पर जान जाने का खतरा होता है। अतः यदि ऐसा कठिन कार्य करते हुए मृत्यु भी हो जाए, तो उसे सहज घटना के रूप में लेना चाहिए। बहुत हाय-तौबा नहीं मचानी चाहिए।

प्रश्न 2.सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-विदर में बदल जाने का मात्र खयाल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि हमारे संपूर्ण प्रयास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

उत्तर-आशय यह है कि ग्लेशियरों के बहने से बरफ़ में हलचल होने से बरफ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें अचानक गिर जाती हैं। इससे धरातल पर दरार पड़ जाती है। यही दरारें हिम-विदर में बदल जाती हैं जो पर्वतारोहियों की मृत्यु का कारण बन जाती है। इसका ख्याल ही मन में भय पैदा कर देता है। दुर्भाग्य से यह भी जानकारी मिल गई थी कि इस अभियान दल को अपने अभियान के दौरान ऐसे हिमपात का सामना करना ही पड़ेगा।

प्रश्न 3.बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बरफ़ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता पिता का ध्यान आया।

उत्तर-जब बचेंद्री पाल हिमालय की चोटी पर सफलतापूर्वक पहुँच गई तो उसने घुटने के बल बैठकर बर्फ़ को माथे से छुआ। बिना सिर नीचे झुकाए हुए ही अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। उसँने इन्हें एक लाल कपड़े में लपेटा। थोड़ी सी पूजा की। फिर इस चित्र तथा हनुमान चालीसा को बर्फ में दबा दिया। उस समय उसे बहुत आनंद मिला। उसने प्रसन्नतापूर्वक अपने माता-पिता को याद किया।

काव्य११ पाठ--आदमीनामा

कवि -नज़ीर अकबराबादी

जन्म – 1735

पाठ सार:

यहाँ पर मियाँ नज़ीर की चार नज़्में दी गई हैं। मियाँ नज़ीर राह चलते नज़्में कहने के लिए मशहूर थे। वे आतेमें नज़ीर ने कुदरत के सबसे 'आदमी नामा' जाते हमेशा नज़्मे कहते रहते थे। प्रस्तुत नज़्म-नायाब बिरादर, आदमी को आईना दिखाते हुए उसकी अच्छाइयों, सीमाओं और संभावनाओं से परिचित कराया है।कवि कहता है कि दुनिया में तरह तरह के आदमी होते हैं। दुनिया में चाहे कोई राजा हो या कोई आम इंसान हो सभी आदमी ही हैं। चाहे कोई धनी हो या निर्धन हो दोनों आदमी ही हैं। हर आदमी की अपनी अलग जीवन शैली होती है। यदि कोई मालदार या दौलतमंद भी है, वह भी आदमी ही है। जो कोई स्वादिष्ट भोजन खा रहा है, वो भी आदमी है और जो सूखे टुकड़ों पर पल रहा है वो भी आदमी है।

नमाज़ और कुरान को बनाने वाले भी आदमी ही हैं और उस मस्जिद में नमाज पढ़ने और पढ़वाने वाले भी आदमी ही हैं। मस्जिद के बाहर से जूते चुराने वाला भी आदमी है और उसपर नज़र रखने वाला भी आदमी है। पाप करने वाला भी आदमी है और पुण्य करने वाला भी आदमी ही है। किसी की जान बचाने वाला भी आदमी ही है और किसी की जान लेने वाला भी आदमी ही है। किसी की इज़्ज़त को मिट्टी में मिलाने वाला भी आदमी है और मुसीबत में किसी को मदद के लिए पुकारने वाला भी आदमी ही है और उसकी पुकार सुनकर दौड़कर आनेवाला भी आदमी है। राजा से लेकर मंत्री तक भी सभी आदमी ही हैं। कवि कहता है कि वह आदमी ही है जो किसी दूसरे आदमी के दिल को खुश करने वाला काम करता है। वह आदमी ही है जो संसार में संत की भूमिका निभाता है और वह भी आदमी ही होता है जो उस संत का भक्त होता है। कवि यह भी कहता है कि आदमी अच्छा भी होता है और कभीकभी बुरा भी आदमी - ही बन जाता है

व्याख्या :

१-:आदमी नामा व्याख्या-

दुनिया में बादशाह है सो है वह भी आदमी
और मुफ़लिश-ओ-गदा है सो है वो भी आदमी
ज़रदार बेनवा है सो है वो भी आदमी
निअमत जो खा रहा है सो है वो भी आदमी
टुकड़े चबा रहा है सो है वो भी आदमी

व्याख्या कवि कहता है कि दुनिया में तरह तरह के आदमी होते हैं। दुनिया में चाहे कोई - अलग आदमी की-राजा हो या कोई आम इंसान हो सभी आदमी ही हैं। अलगअलगअलग -

जिम्मेदारियाँ होती हैं। कवि कहता है कि चाहे कोई धनी हो या निर्धन हो दोनों आदमी ही हैं। हर आदमी की अपनी अलग जीवन शैली होती है। यदि कोई मालदार या दौलतमंद भी है, वह भी आदमी ही है। कवि के कहने का तात्पर्य है कि अलगअलग काम -अलग आदमी अलग- करते हैं, अलगअलग गुणों वाले होते हैं। कवि यह भी -अलग व्यवहार करते हैं और अलग- स्पष्ट करता है कि जो कोई स्वादिष्ट भोजन खा रहा है, वो भी आदमी है और जो सूखे टुकड़ों पर पल रहा है वो भी आदमी है|

२- मसज़िद भी आदमी ने बनाई है यां मियाँ
बनते हैं आदमी ही इमाम और खुतबाख्वाँ
पढ़ते हैं आदमी ही कुरआन और नमाज यां
और आदमी ही उनकी चुराते हैं जूतियाँ
जो उनको ताड़ता है सो है वो भी आदमी

व्याख्या कवि आदमी को आईना दिखाते हुए कहता है कि जिसने मस्जिद बनाई है। नमाज़ - और कुरान को बनाने वाले भी आदमी ही हैं और उस मस्जिद में नमाज पढ़ने और पढ़वाने वाले भी आदमी ही हैं। मस्जिद के बाहर से जूते चुराने वाला भी आदमी है और उसपर नज़र रखने वाला भी आदमी है। कवि के कहने का अभिप्राय यह है कि पाप करने वाला भी आदमी है और पुण्य करने वाला भी आदमी ही है।

३-यां आदमी पै जान को वारे है आदमी
और आदमी पै तेग को मारे है आदमी
पगड़ी भी आदमी की उतारे है आदमी
चिल्ला के आदमी को पुकारे है आदमी
और सुनके दौड़ता है सो है वो भी आदमी

व्याख्या कवि आदमी को आदमी की सच्चाई दिखाते हुए कहता है कि किसी की जान - बचाने वाला भी आदमी ही है और किसी की जान लेने वाला भी आदमी ही है। किसी की इज्जत को मिट्टी में मिलाने वाला भी आदमी है और मुसीबत में किसी को मदद के लिए पुकारने वाला भी आदमी ही है और उसकी पुकार सुनकर दौड़कर आने वाला भी आदमी है। कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आदमी किसी को मुसीबत में डालने वाला है तो उस मुसीबत में पड़े हुए आदमी को बचाने वाला भी कोई आदमी ही होता है|

अशराफ और कमीने से ले शाह ता वजीर
ये आदमी ही करते हैं सब कारे दिलपजीर
यां आदमी मुरीद है और आदमी ही पीर

अच्छा भी आदमी ही कहाता है ए नजीर
और सबमें जो बुरा है सो है वो भी आदमी

व्याख्या कवि आदमी को आदमी की सच्चाई का आईना -दिखाते हुए कहता है कि शरीफ से लेकर कमीने तक सभी आदमी है और राजा से लेकर मंत्री तक भी सभी आदमी ही हैं। कवि कहता है कि वह आदमी ही है जो किसी दूसरे आदमी के दिल को खुश करने वाला काम करता है। वह आदमी ही है जो संसार में संत की भूमिका निभाता है और वह भी आदमी ही होता है जो उस संत का भक्त होता है। कवि यह भी कहता है कि आदमी अच्छा भी होता है और कभी कभी बुरा भी आदमी ही बन जाता है। -

*-बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर:-

प्रश्न 1 - यदि आदमी राजा है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) भिखारी

(B) रानी

(C) मंत्री

(D) प्रजा

प्रश्न 2 - यदि आदमी धनी है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) भिखारी

(B) रानी

(C) मंत्री

(D) प्रजा

प्रश्न 3 - यदि आदमी स्वादिष्ट भोजन करने वाले है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) पानी पिने वाला

(B) सूखे टुकडे खाने वाला

(C) भूखा रहने वाला

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4 - यदि आदमी नमाज़ और कुरान को बनाने वाले है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) नमाज़ और कुरान को नष्ट करने वाले

(B) नमाज़ और कुरान को पढ़ने व् पढ़ाने वाले

(C) नमाज़ और कुरान को पढ़ाने वाले

(D) नमाज़ और कुरान को पढ़ने वाले

प्रश्न 5 - यदि आदमी मस्जिद के बाहर से जूते चुराने वाला है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) उन जूतों को बनाने वाला

(B) रानी मस्जिद की पहरेदारी करने वाला

(C) मस्जिद के बाहर रखे जूतों पर नजर रखने वाला

(D) उन जूतों को पहनने वाला

प्रश्न 6 - यदि आदमी पाप करने वाला है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) परोपकार करने वाला

(B) पुण्य करने वाला

(C) इज्ज़त करने वाला

(D) पूजा करने वाला

प्रश्न 7 - यदि आदमी किसी की जान बचाने वाला है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) जान लेने वाला

(B) जान देने वाला

(C) परोपकार करने वाला

(D) इज्ज़त करने वाला

प्रश्न 8 - यदि आदमी किसी की इज्ज़त को मिट्टी में मिलाने वाला है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) जान लेने वाला

(B) जान देने वाला

(C) परोपकार करने वाला

(D) इज्जत करने वाला

प्रश्न 9 - यदि आदमी मुसीबत में किसी को मदद के लिए पुकारने वाला है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) उसकी पुकार सुनकर दौडकर आने वाला

(B) उसकी पुकार अनसुना करने वाला

(C) उसकी पुकार सुनकर न आने वाला

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 10 - यदि आदमी किसी को मुसीबत में डालने वाला है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) मुसीबत में पड़े हूए आदमी को अनदेखा करने वाला

(B) मुसीबत में पड़े हूए आदमी को न बचाने वाला

(C) मुसीबत में पडे हूए आदमी को बचाने वाला

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 11 - यदि आदमी शरीफ है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) भिखारी

(B) कमीना

(C) मंत्री

(D) प्रजा

प्रश्न 12 - यदि आदमी राजा है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) भिखारी

(B) रानी

(C) मंत्री

(D) प्रजा

प्रश्न 13 - यदि आदमी संत है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) भिखारी

(B) भक्त

(C) मंत्री

(D) प्रजा

प्रश्न 14 - यदि आदमी अच्छा है तो _____ भी आदमी ही है।

(A) भिखारी

(B) भक्त

(C) मंत्री

(D) बुरा

प्रश्न 15 - प्रस्तुत नज़्म का शीर्षक क्या है?

(A) आदमी नामा

(B) आदमी

(C) आदमी नाम

(D) आदमी नज़्म

*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1.'आदमी नामा' कविता का मूल कथ्य/प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'आदमी नामा' कविता का मूलकथ्य/प्रतिपाद्य है- आदमी को उसकी वास्तविकता का आइना दिखाना तथा विभिन्न प्रवृत्तियों और स्वभाव वाले व्यक्तियों के कार्य व्यवहार को अभिव्यक्त करना। आदमी ही है जो अच्छा या बुरा काम करता है और अपने कर्म के अनुसार पीर अथवा शैतान का दर्जा प्राप्त करता है|

प्रश्न 2.आदमी किन स्थितियों में पीर बन जाता है?

उत्तर-जब आदमी अच्छा कार्य करता है, दूसरों पर अपनी जान न्योछावर करता है, दूसरों को संकट में फँसा देखकर उसकी मदद के लिए दौड़ा जाता है तथा धर्मगुरु बनकर दूसरों को मानवता की सेवा करने का उपदेश देता है तो इन परिस्थितियों में आदमी पीर बन जाता है।

प्रश्न 3.'आदमी नामा' कविता व्यक्ति के स्वभाव के बारे में क्या अभिव्यक्त करती है?

उत्तर-'आदमी नामा' कविता किसी व्यक्ति के अच्छे स्वभाव का उल्लेख करती है, उसके कर्म और विशेषता को अभिव्यक्ति करती है तो दूसरों की जान लेने, बेइज्जती करने तथा जूतियाँ चुराने जैसे निकृष्ट कार्यों को भी अभिव्यक्त करती है। इस प्रकार यह कविता व्यक्ति के स्वभाव की विविधता का ज्ञान कराती है|

प्रश्न 4.'सुनके दौड़ता है सो है वो भी आदमी' के माध्यम से नज्मकार ने क्या कहना चाहा है?

उत्तर-सुनके दौड़ता है सो है वो भी आदमी के माध्यम से नज्मकार ने आदमी के मानवीय गुणों; जैसे- दयालुता, सहृदयता, संवेदनशीलता और उपकारी प्रवृत्ति का उल्लेख करना है। इन मानवीय गुणों के कारण व्यक्ति किसी की याचना भरी पुकार को अनसुना नहीं कर पाता है और मदद के लिए भाग जाता है|

प्रश्न 5.मसज़िद का उल्लेख करके नज्मकार ने किस पर व्यंग्य किया है? इसका उद्देश्य क्या है?

उत्तर-मसजिद का उल्लेख करके नज्मकार ने उस आदमी पर व्यंग्य किया है जो मसजिद में नमाज

और कुरान पढ़ने आए लोगों की जूतियाँ चुराता है। ऐसे आदमी पर व्यंग्य करने का उद्देश्य यह बताना है कि आदमी अलग-अलग स्वभाव वाले होते हैं जो अच्छे या बुरे कर्म करते हैं|

*दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.नज़ीर अकबराबादी ने आदमी के चरित्र की विविधता को किस तरह उभारा है?'आदमी नामा' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कवि नज़ीर अकबराबादी ने 'आदमी नामा' कविता में आदमी के चरित्र को उसके स्वभाव और कार्य के आधार पर उभारा है। उनका कहना है कि दुनिया में लोगों पर शासन करने वाला आदमी है, तो गरीब, दीन-दुखी और दरिद्र भी आदमी है। धनी और मालदार लोग आदमी हैं तो कमजोर व्यक्ति भी आदमी है। स्वादिष्ट पदार्थ खाने वाला आदमी है तो दूसरों के सूखे टुकड़े चबाने वाला भी आदमी है। इसी प्रकार दूसरों पर अपनी जान न्योछावर करनेवाला आदमी है तो किसी पर तलवार उठाने वाला भी आदमी है। एक आदमी अपने कार्यों से पीर बन जाता है तो दूसरा शैतान बन जाता है। इस तरह कवि ने आदमी के चरित्र की विविधता को उभारा है|

प्रश्न 2.नज्मकार ने मसजिद का उल्लेख किस संदर्भ में किया है और क्यों?

उत्तर-नज्मकार नज़ीर ने मसजिद का उल्लेख स्थान एवं आदमी की विविधता बताने के संदर्भ में किया मसजिद वह पवित्र स्थान है जहाँ व्यक्ति कुरान और नमाज़ पढ़ता है परंतु उसके दरवाजे पर चोरी भी की जाती है। इसके अलावा उसी मस्जिद को आदमी ने बनवाई, उसके अंदर इमाम कुरान और नमाज़ पढ़ाता है, जो अलग-अलग कोटि के आदमी है। वहीं जूतियाँ चुराने वाला अपना काम करने का प्रयास कर रहा है तो उनका रखवाला भी आदमी ही है। इस पवित्र स्थान पर भी मनुष्य अपने-अपने स्वभाव के अनुसार कार्य कर रहे हैं। उनकी प्रवृत्ति उनमें भिन्नता प्रकट कर रही है|

प्रश्न 3.'आदमी नामा' पाठ के आधार पर आदमी के उस रूप का वर्णन कीजिए जिसने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया?

उत्तर-'आदमी नामा' कविता में आदमी के जिस रूप ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया वह है उसका उच्च मानवीय वाला रूप। ऐसा आदमी ऊँच-नीच का भेद-भाव किए बिना मनुष्य पर जान न्योछावर करता है। वह सबको समान मानकर उनसे प्रेम करता है। वह मनुष्य की भलाई के लिए सदा परोपकार करता है और किसी संकटग्रस्त आदमी की पुकार सुनते ही उसकी मदद करने के लिए चल पड़ता है और उसे संकटमुक्त करने का हर संभव प्रयास करता है।

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

पहले छंद में कवि की दृष्टि आदमी के किन-किन रूपों का बखान करती है? क्रम से लिखिए।

चारों छंदों में कवि ने आदमी के सकारामक और नकारात्मक रूपों को परस्पर किन-किन रूपों में रखा है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

‘आदमी नामा’ शीर्षक कविता ने इन अंशों को पढ़कर आपके मन में मनुष्य के प्रति क्या धारणा बनती है?

इस कविता का कौन-सा भाग आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों ?

आदमी की प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर-1. पहले छंद में कवि की दृष्टि आदमी के विभिन्न रूपों, जैसे- बादशाह गरीब, भिखारी, मालदार एवं अमीर, कमजोर, स्वादिष्ट और दुर्लभ भोज्य पदार्थ खाने वाला तथा दूसरे छंद में। सूखी रोटी के टुकड़े चबाने वाले व्यक्ति का वर्णन हुआ है|

2. कवि ने अपने चारों छंदों में आदमी के सकारात्मक और नकारात्मक रूपों को परस्पर अनेक रूपों में रखा है; जैसे-

आदमी ही बादशाह है तो उसकी प्रजा भी आदमी ही है।

कुरान पढ़ाने वाला आदमी है तो उसे सुनने और समझने वाला भी आदमी ही है।

जतियाँ चुराने वाला आदमी है तो उन जूतियों को रक्षक भी आदमी ही है।

आदमी से प्यार करने वाला भी आदमी है तो उस पर तलवार उठाने वाला भी आदमी ही है।

अच्छे कार्य करने वाले भी आदमी हैं, तो बुरे काम करने वाले भी आदमी ही हैं

3. “आदमी नामा’ शीर्षक कविता के अंशों को पढ़कर हमारे मन में मनुष्य के प्रति यह धारणा बनती है कि, आदमी ही है जो अच्छा और बुरा दोनों कार्य करता है। अच्छे कार्य करने और दूसरों की भलाई करने के कारण वह पीर और देवता के समान बन जाती है, परंतु मनुष्य जब दूसरों को सताने का काम करता है तो वह निंदा का पात्र बन जाता है।

4. इस कविता में संकलित चारों ही नज्में अच्छी हैं, परंतु तीसरी नज्म मुझे विशेष रूप से अच्छी लगी क्योंकि आदमी ही आदमी से प्रेम करता है, अपनी जान न्योछावर करता है। वह भी आदमी ही है जो संकट में फँसे व्यक्ति की मदद करने के लिए भागा-भागा जाता है|

5. इस संसार में अनेक प्रवृत्तियों वाले आदमी हैं। इनमें मसजिद बनाने वाले, कुरान पढ़ने लोग है तो उसी मसजिद में कुरान पढ़ाने वालों के अलावा जूतियाँ चुराने वाले लोग भी है। एक ओर दूसरों पर जान न्योछावर करने वाले लोग हैं। तो ऐसे लोग भी हैं जो दूसरों पर तलवार उठाते हैं। आदमी की बेइज्जती करने वाले लोग हैं तो आदमी की मदद करने वाले लोगों की भी कमी नहीं है|

संचयन-पाठ-3-कल्लू कुम्हार की उनाकोटि

लेखक विक्रम सिंह .के -

जन्म – 1938

पाठ सार:

लेखक ध्वनि का एक अनोखा गुण बताते हुए कहता है कि वह एक क्षण में ही आपको किसी दूसरे ही समय संदर्भ में पहुँचा सकती है। लेखक ने-ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि लेखक यहाँ हमें यह समझाना चाहता है कि जब हम कभी कोई काम कर रहे होते है और अचानक ही कोई तेज आवाज हो तो हम हड़बड़ा जाते है और कुछ समय के लिए कभीकभी तो भूल भी जाते - हैं कि हम क्या काम कर रहे थे। लेखक अपने बारे में कहता है कि वह उन लोगोंं में से नहीं है जो सुबह चार बजे उठते हैं, पाँच बजे तक सुबह की सैर के लिए तैयार हो जाते हैं और फिर लोधी गार्डन पहुँच कर वहाँ बने मकबरों को निहारते रहते है और अपनी मेम साहबों के साथ में लंबी सैर पर निकल जाते हैं। लेखक तो आमतौर पर सूर्योदय के साथ उठता है और फिर अपनी चाय खुद बनाता है और फिर चाय और अखबार लेकर लंबी आलस से भरी हुई सुबह का मजा लेता है। लेखक कहता है कि अकसर अखबार की खबरों पर उसका कोई ध्यान नहीं रहता। उसका अखबार पढ़ना तो सिर्फ दिमाग को किसी कटी पतंग की तरह ऐसे ही हवा में तैरने देने का एक बहाना है। लेखक किसी एक दिन की सुबह का वर्णन करता हुआ कहता है कि उस दिन अभी लेखक की वह शांतिपूर्ण दिनचर्या शुरू ही हुई थी कि उसमें एक बाधा पड़ गई। उस सुबह लेखक एक ऐसी कान को फाड़ कर रख देने वाली तेज आवाज के कारण जागा, यह आवाज तोप दगने और बम फटने जैसी लग रही थी, उस आवाज को सुनकर लेखक को लगा कि गोया जार्ज डब्लूबुश और सद्दाम हुसैन की मेहरबानी से तीसरे विश्वयुद्ध की शुरुआत . हो चुकी हो। लेखक ने खुदा का शुक्रियादा किया क्योंकि ऐसी कोई बात नहीं थी। दरअसल यह तो सिर्फ स्वर्ग में चल रहा देवताओं का कोई खेल था, जिसकी झलक बिजलियों की चमक चमक और बादलों की गरज के रूप में देखने को मिल रही थी। लेखक ने खिड़की के बाहर झाँका। लेखक ने देखा कि आकाश बादलों से भरा था जिसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे सेनापतियों द्वारा छोड़ दिए गए सैनिक आतंक में एक दूसरे से टकरा रहे हो। इस तांडव-के

गर्जन-तर्जन ने लेखक को तीन साल पहले त्रिपुरा में उनाकोटी की एक शाम की याद दिला दी थी। लेखक कहता है कि वह तीन साल पहले दिसंबर 1999 में 'ऑन द रोड 'शीर्षक वाली एक टीवी शृंखला बनाने के सिलसिले में मैं त्रिपुरा की राजधानी अगरतला गया था। त्रिपुरा भारत के सबसे छोटे राज्यों में स े एक है। चैंतीस प्रतिशत से ज्यादा की इसकी जनसंख्या वृद्धि दर दूसरे राज्यों की अपेक्षा भी खासी ऊँची है। लेखक इसकी सीमा के बारे में बताते हुए कहता है कि यह तीन तरफ से तो बांग्लादेश से घिरा हुआ है और बाकी बचा शेष भाग भारत के साथ ऐसे स्थान से जुड़ा हुआ है जहाँ पर हर किसी का पहुँचना आसान नहीं है। बांग्लादेश से लोगों का बिना अनुमति के त्रिपुरा में आना और यहीं बस जाना जबर्दस्त है और इसे यहाँ सामाजिक रूप से स्वीकार भी किया गया है। यहाँ की असाधारण जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण लेखक इसी को मानता है। असम और पश्चिम बंगाल से भी लोगों का त्रिपुरा प्रवास यहाँ होता ही है। लेखक कहता है कि पहले के तीन दिनों में उसने अगरतला और उसके आसपास ही शूटिंग - की, जहाँ लेखक शूटिंग कर रहा था वह स्थान कभी मंदिरों और महलों के शहर के रूप में जाना जाता था। त्रिपुरा में लगातार बाहरी लोगों के आने और यहीं बस जाने से कुछ समस्याएँ तो पैदा हुई हैं लेकिन इसके कारण यह राज्य विभिन्न धर्मों वाले समाज का उदाहरण भी बना है। त्रिपुरा में उन्नीस अनुसूचित जनजातियों और विश्व के चारों बड़े धर्मों का प्रतिनिध्त्वि मौजूद है। लेखक कहता है कि अगरतला में शूटिंग के बाद उन्होंने त्रिपुरा का राष्ट्रीय राजमार्ग-44 पकड़ा और टीलियामुरा कस्बे में जा पहुँचे। यहाँ लेखक की मुलाकात हेमंत कुमार जमातिया से हुई जो वहाँ के एक बहुत ही प्रसिद्ध लोकगायक थे और उन्हें 1996 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कार भी दिए गए हैं। जिला परिषद ने लेखक की शूटिंग यूनिट के लिए एक भोज का प्रबंध किया था। त्रिपुरा के लोग अभी दिखावटी दुनिया से दूर थे, वे अपने रीतीरिवाजों को ही मानते - आ रहे थे। भोजन करने के बाद लेखक ने हेमंत कुमार जमातिया से एक गीत सुनाने की प्रार्थना की और उन्होंने अपनी धरती पर बहती शक्तिशाली नदियों, ताजगी भरी हवाओं और शांति से भरा एक गीत गाया। टीलियामुरा शहर के वार्ड नं .3 में लेखक की मुलाकात एक और गायक से हुई। वह गायक थी मंजु ऋषिदास। ऋषिदास मोचियों के एक समुदाय का नाम है। लेकिन जूते बनाने के अलावा इस समुदाय के कुछ लोग थाप वाले वाद्यों जैसे तबला और ढोल के निर्माण और उनकी मरम्मत के काम में भी बहुत ज्यादा अच्छे थे। मंजु ऋषिदास के बारे में लेखक बताते हैं कि मंजु ऋषिदास एक बहुत ही आकर्षक महिला थीं और वह एक रेडियो कलाकार भी थी। रेडियो कलाकार होने के अलावा वे नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व भी करती थीं। लेखक कहता है कि मंजु ऋषिदास भले ही पढ़ीलिखी नहीं थीं। - लेकिन वे अपने वार्ड की सबसे बड़ी आवश्यकता यानी साफ पीने के पानी के बारे में उन्हें पूरी

जानकारी थी। त्रिपुरा के उस मुख्य भाग में प्रवेश करने से पहले जहाँ पर हिंसा हो रही थी, टीलियामुरा वहाँ की आखिरी जगह थी। मुख्य सचिव और आई.जी., सीसे लेखक .एफ.पी.आर. ने निवेदन किया था कि वे लेखक और लेखक की पूरी यूनिट को घेरेबंदी में चलने वाले .जी.आगे चलने दें। इसके लिए मुख्य सचिव और आई-यात्रियों के दलों के आगे, सीपहले तो तैयार नहीं हुए परन .एफ.पी.आर.ंतु फिर थोड़ी नानुकुर करने के बाद वे इसके - लिए तैयार हो गए लेकिन उन्होंने लेखक के सामने एक शर्त रखी। वह शर्त थी कि लेखक की हथियारों से भरी गाड़ी में चलना होगा और .एफ.पी.आर.और लेखक के कैमरामैन को सी यह काम लेखक और लेखक के कैमरामैन को अपने जोखिम पर करना होगा। लेखक मनु कस्बे के बारे में बताता हुआ कहता है कि त्रिपुरा की प्रमुख नदियों में से एक मनु नदी है। जिसके किनारे स्थित मनु एक छोटा सा कस्बा है। जिस वक्त लेखक और लेखक की यूनिट मनु नदी के पार जाने वाले पुल पर पहुँची, तब शाम हो रही थी और लेखक उस शाम का सुन्दर वर्णन करता हुआ कहता है कि उस शाम को सूर्य की सुनहरी किरणें को मनु नदी के जल पर बिखरा हुआ देखकर ऐसा लग रहा था जैसे सूर्य मनु नदी के पानी में अपना सोना उँड़ेल रहा था। लेखक कहता है कि अब वे सब उत्तरी त्रिपुरा जिले में आ गए थे। यहाँ की लोकप्रिय घरेलू गतिविधियों में से एक गतिविधि अगरबत्तियों के लिए बाँस की पतली सींकें तैयार करना है। - अगरबत्तियों के लिए बाँस की पतली सींकें तैयार करने के बाद अगरबत्तियाँ बनाने के लिए इन्हें कर्नाटक और गुजरात भेजा जाता है। उत्तर त्रिपुरा पहुँचाने के बाद लेखक ने वहाँ के जिलाधिकारी सेमुलाकात की, वह जिलाधिकारी केरल से आया हुआ एक नौजवान निकला। उसके बारे में लेखक बताता है कि वह जिलाधिकारी बहुत तेज, सभी से अच्छी तरह मिलने वाला और उत्साह से भरा हुआ व्यक्ति था। जब लेखक और वह जिलाधिकारी चाय पी रहे थे उस दौरान उस जिलाधिकारी ने लेखक को बताया कि टीकी खेती (टरू पोटेटो सीड्स) .एस.पी. को त्रिपुरा में, खासकर पर उत्तरी जिले में किस तरह से सफलता मिली है। त्रिपुरा से टीको अब न सिर्फ असम .एस.पी., मिज़ोरम, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश को ही भेजा जाता है, बल्कि अब तो विदेशो में जैसे बांग्लादेश, मलेशिया और विएतनाम को भी भेजा जा रहा है। जिलाधिकारी ने अचानक लेखक से पूछा कि क्या वह उनाकोटी में शूटिंग करना पसंद करेंगा? जिलाधिकारी ने लेखक को उनाकोटी के बारे में आगे बताते हुए कहा कि उनाकोटी भारत का सबसे बड़ा तो नहीं परन्तु सबसे बड़े भगवान् शिव के तीर्थों में से एक जरूर है। जिलाधिकारी कहता है कि यह जगह जंगल में काफी भीतर है हालाँकि जहाँ लेखक और उसकी यूनिट अभी थी वहाँ से इसकी दूरी सिर्फ नौ किलोमीटर ही थी। अब तक जिलाधिकारी ने उनाकोटी के बारे में इतना सब कुछ बता दिया था कि लेखक के पर इस जगह का रंग पूरी तरह से चढ़ चुका

था। टीलियामुरा से मनु तक की यात्रा कर लेने के बाद तो लेखक अपने आप को कुछ ज्यादा ही साहसी महसूस करने लगा था। क्योंकि टीलियामुरा से मनु तक की यात्रा बहुत खतरनाक थी और लेखक उसे पार कर चूका था तो उसे लगता है कि वह टीलियामुरा से मनु तक की यात्रा को कर सकता है तो उनाकोटी पहुँचाने के लिए जंगल पार करना कौन सी बड़ी बात है। लेखक हमें उनाकोटी के बारे में बताता हुआ कहता है कि उनाकोटी का मतलब है एक कोटि, यानी एक करोड़ से एक कम। लेखक कहता है कि एक काल्पनिक कथा के अनुसार उनाकोटी में शिव की एक करोड़ से एक कम मूर्तियाँ हैं। यहाँ पहाड़ों को अंदर से काटकर विशाल आधारमूर्तियाँ - बनाई गई हैं। एक बहुत विशाल चट्टान ऋषि भगीरथ की प्रार्थना पर स्वर्ग से पृथ्वी पर गंगा के उतरने की पौराणिक कथा को चित्रित करती है। गंगा के पृथ्वी पर उतरने के धक्के से कहीं पृथ्वी धँसकर पाताल लोक में न चली जाए, इसी वजह से भगवान् शिव को इसके लिए तैयार किया गया कि वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें और इसके बाद इसे धीरेधीरे - पृथ्वी पर बहने दें। लेखक कहता है कि यहाँ पर भगवान शिव का चेहरा एक पूरी चट्टान पर बना हुआ है और उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हुईहैं। भारत में शिव की यह सबसे बड़ी आधारमूर्ति है। लेखक कहता है कि यहाँ पूरे साल बहने वाला एक झरना पहाड़ों से - उतरता है जिसे गंगा जितना ही पवित्र माना जाता है। यह पूरा इलाका ही प्रत्येक शब्द के देवताओं की मूर्तियों से भरा पड़ा है। यहाँ लेखक-अनुसार ही देवियों के कहने का अर्थ है कि यहाँ हर कदम पर आपको किसी न किसी देवीदेवता की मूर्ति जरूर मिल जाएगी। लेखक - मूर्तियों का निर्माण किसने किया है यह अभी तक -कहता है कि उनाकोटी में बनी इन आधार पता नहीं किया जा सका हैं। स्थानीय आदिवासियों का मानना है कि इन मूर्तियों का निर्माता कल्लू कुम्हार था। वह माता पार्वती का भक्त था और भगवान शिवमाता पार्वती के - साथ उनके निवास स्थान कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। परन्तु भगवान शिव उसे अपने साथ नहीं लेना चाहते थे। पार्वती के जोर देने पर शिव कल्लू को कैलाश ले चलने को तैयार तो हो गए लेकिन इसके लिए उन्होंने कल्लू के सामने एक शर्त रखी और वह शर्त थी कि उसे एक रात में शिव की एक करोड़ मूर्तियाँ बनानी होंगी। कल्लू अपनी धुन का पक्का व्यक्ति था इसलिए वह इस काम में जुट गया|

***-प्रश्नोत्तर:-**

प्रश्न 1.'उनाकोटी' का अर्थ स्पष्ट करते हुए बतलाएँ कि यह स्थान इस नाम से क्यों प्रसिद्ध है?
उत्तर-उनाकोटी का अर्थ है-एक कोटी अर्थात् एक करोड़ से एक कम। इस स्थान पर भगवान शिव की

एक करोड़ से एक कम मूर्तियाँ हैं। इतनी अधिक मूर्तियाँ एक ही स्थान पर होने के कारण यह स्थाने प्रसिद्ध है|

प्रश्न 2.पाठ के संदर्भ में उनाकोटी में स्थित गंगावतरण की कथा को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर-उनाकोटी में पहाड़ों को अंदर से काटकर विशाल आधार मूर्तियाँ बनाई गई हैं। अवतरण के धक्के से कहीं पृथ्वी धंसकर पाताल लोक में न चली जाए, इसके लिए शिव को राजी किया गया कि वे गंगा को अपनी जटाओं में उलझा लें और बाद में धीरे-धीरे बहने दें। शिव का चेहरा एक समूची चट्टान पर बना हुआ है। उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली है। यहाँ पूरे साल बहने वाला जल प्रपात है, जिसे गंगा जल की तरह ही पवित्र माना जाता है।

प्रश्न 3.कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से किस प्रकार जुड़ गया?

उत्तर-स्थानीय आदिवासियों के अनुसार कल्लू कुम्हार ने ही उनाकोटी की शिव मूर्तियों का निर्माण किया है। वह शिव का भक्त था। वह उनके साथ कैलाश पर्वत पर जाना चाहता था। भगवान शिव ने शर्त रखी कि वह एक रात में एक करोड़ शिव मूर्तियों का निर्माण करे। सुबह होने पर एक मूर्ति कम निकली। इस प्रकार शिव ने उसे वहीं छोड़ दिया। इसी मान्यता के कारण कल्लू कुम्हार का नाम उनाकोटी से जुड़ गया|

प्रश्न 4.मेरी रीढ़ में एक झुरझरी-सी दौड़ गई'-लेखक के इस कथन के पीछे कौन-सी घटना जुड़ी है?

उत्तर-लेखक राजमार्ग संख्या 44 पर टीलियामुरा से 83 किलोमीटर आगे मनु नामक स्थान पर शूटिंग के लिए जा रहा था। इ यात्रा में वह सी.आर.पी.एफ. की सुरक्षा में चल रहा था। लेखक और उसका कैमरा मैन हथियार बंद गाड़ी में चल रहे। थे। लेखक अपने काम में इतना व्यस्त था कि उसके मन में डर के लिए जगह न थी। तभी एक सुरक्षा कर्मी ने निचली पहाड़ियों पर रखे दो पत्थरों की ओर ध्यान आकृष्ट करके कहा कि दो दिन पहले उनका एक जवान विद्रोहियों द्वारा मार डाला गया था। यह सुनकर लेखक की रीढ़ में एक झुरझुरी-सी दौड़ गई|

प्रश्न 5.त्रिपुरा 'बहुधार्मिक समाज' का उदाहरण कैसे बना?

उत्तर-त्रिपुरा में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग बाहरी क्षेत्रों से आकर बस गए हैं। इस प्रकार यहाँ अनेक धर्मों का समावेश हो गया है। तब से यह राज्य बहुधार्मिक समाज का उदाहरण बन गया है।

प्रश्न 6.टीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय किन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ? समाज-कल्याण के कार्यों में उनका क्या योगदान था?

उत्तरटीलियामुरा कस्बे में लेखक का परिचय जिन दो प्रमुख हस्तियों से हुआ उनमें एक हैं- हेमंत कुमार जमातिया, जो त्रिपुरा के प्रसिद्ध लोक गायक हैं। जमातिया 1996 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत किए जा चुके हैं। अपनी युवावस्था में वे पीपुल्स लिबरेशन आर्गनाइजेशन के कार्यकर्ता थे, पर अब वे चुनाव लड़ने के बाद जिला परिषद के सदस्य बन गए हैं।लेखक की मुलाकात दूसरी प्रमुख हस्ती मंजु ऋषिदास से हुई, जो आकर्षक महिला थी। वे रेडियो कलाकार होने के साथसाथ नगर पंचायत की सदस्या भी थीं। लेखक ने उनके गाए दो गानों की शूटिंग की। गीत के तुरंत बाद मंजु ने एक कुशल गृहिणी के रूप में चाय बनाकर पिलाई।

प्रश्न 7.कैलासशहर के जिलाधिकारी ने आलू की खेती के विषय में लेखक को क्या जानकारी दी?
उत्तर-कैलासशहर के जिलाधिकारी ने लेखक को बताया कि यहाँ बुआई के लिए पारंपरिक आलू के बीजों के बजाय टी.पी.एस. नामक अलग किस्म के आलू के बीज का प्रयोग किया जाता है। इस बीज से कम मात्रा में ज्यादा पैदावार ली जा सकती है। यहाँ के निवासी इस तकनीक से काफी लाभ कमाते हैं|
प्रश्न 8.त्रिपुरा के घरेलू उद्योगों पर प्रकाश डालते हुए अपनी जानकारी के कुछ अन्य घरेलू उद्योगों के विषय में बताइए?
उत्तर-त्रिपुरा के लघु उद्योगों में मुख्यतः बाँस की पतली-पतली सीकें तैयार की जाती हैं। इनका प्रयोग अगरबत्तियाँ बनाने में किया जाता है। इन्हें कर्नाटक और गुजरात भेजा जाता है ताकि अगरबत्तियाँ तैयार की जा सकें। त्रिपुरा में बाँस बहुतायत मात्रा में पाया जाता है। इस बाँस से टोकरियाँ सजावटी वस्तुएँ आदि तैयार की जाती हैं|

*-प्रश्न लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.ध्वनि किस तरह व्यक्ति को किसी दूसरे समय-संदर्भ में पहुँचा देती है? पाठ के आधार पर लिखिए।
उत्तर-लेखक ने एक टीवी सीरियल 'ऑन द रोड' की शूटिंग के सिलसिले में त्रिपुरा गया था। वहाँ वह उनाकोटी में शूटिंग कर रहा था कि अचानक बादल घिर आए। लेखक जब तक अपना सामान समेटता तब तक बादल जोर से गर्जन-तर्जन करने लगे और तांडव शुरू हो गया। तीन साल बाद लेखक ने जब ऐसा ही गर्जन-तर्जन दिल्ली में देखा सुना तो उसे उनाकोरी की याद आ गई। इस तरह ध्वनि ने उसे दूसरे समय संदर्भ में पहुँचा दिया।
प्रश्न 2.लेखक की दिनचर्या कुछ लोगों से किस तरह भिन्न है? उनाकोटी के आधार पर लिखिए।
उत्तर-लेखक सूर्योदय के समय उठता है और अपनी चाय बनाता है। फिर वह चाय और अखबार के साथ अलसाई सुबह का आनंद लेता है जबकि कुछ लोग चार बजे उठते हैं, पाँच बजे तक तैयार होकर लोदी गार्डन पहुँच जाते हैं और मेम साहबों के साथ लंबी सैर के साथ निकल जाते हैं|
प्रश्न 3.लेखक ने अपनी शांतिपूर्ण जिंदगी में खलल पड़ने की बात लिखी है। ऐसा कब और कैसे हुआ?
उत्तर-लेखक की नींद एक दिन तब खुली जब उसने तोप दगने और बम फटने जैसी कानफोड़ आवाज सुनी। वास्तव में यह स्वर्ग में चलने वाला देवताओं का कोई खेल था, जिसकी झलक बिजलियों की चमक और बादलों की गरज में सुनने को मिली। इस तरह लेखक की शांतिपूर्ण जिंदगी में खलल पड़ गई।
प्रश्न 4.लेखक ने त्रिपुरा की यात्रा कब की? इस यात्रा का उद्देश्य क्या था?
उत्तर-लेखक ने त्रिपुरा की यात्रा दिसंबर 1999 में की। वह 'आन दि रोड' शीर्षक से बनने वाले टीवी धारावाहिक की शूटिंग के सिलसिले में त्रिपुरा की राजधानी अगरतला गया। इस यात्रा का उद्देश्य था त्रिपुरा की पूरी यात्रा कराने वाले राजमार्ग 44 से यात्रा करना तथा त्रिपुरा की विकास संबंधी गतिविधियों की जानकारी देना।

प्रश्न 5.त्रिपुरा में आदिवासियों के मुख्य असंतोष की वजह पर प्रकाश डालिए।
उत्तर-त्रिपुरा तीन ओर से बांग्लादेश से घिरा है। शेष भारत के साथ इसका दुर्गम जुड़ाव उत्तर-पूर्वी सीमा से सटे मिजोरम और असम के साथ बनता है। यहाँ बांग्लादेश के लोगों की जबरदस्त आवक है। असम और पश्चिम बंगाल से भी लोगों का प्रवास यहाँ होता है। इस भारी आवक ने जनसंख्या संतुलन को स्थानीय आदिवासियों के खिलाफ ला खड़ा किया। यही त्रिपुरा में आदिवासियों के असंतोष का मुख्य कारण है।
प्रश्न 6.लेखक ने त्रिपुरा में बौद्ध धर्म की क्या स्थिति देखी? कुल्लू कुम्हार की उनकोटी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-लेखक ने त्रिपुरा के बाहरी हिस्से पैचारथल में एक सुंदर बौद्ध-मंदिर देखा। पता चला कि त्रिपुरा के उन्नीस कबीलों में से दो-चकमा और मुध महायानी बौद्ध हैं, जो त्रिपुरा में म्यांमार से चटगाँव के रास्ते आए थे। इस मंदिर की मुख्य बुद्ध प्रतिमा भी 1930 के दशक में रंगून से लाई गई थी।
प्रश्न 7.लेखक ने त्रिपुरा के लोक संगीत का अनुभव कब और कैसे किया?
उत्तरत्रिपुरा की राजधानी अगरतला में लेखक की मुलाकात यहाँ के प्रसिद्ध लोकगायक हेमंत कुमार जमातिया से हुई, जो कोकबारोक बोली में गाते हैं। लेखक ने उनसे एक गीत सुनाने का अनुरोध किया। उन्होंने धरती पर बहती नदियों और ताजगी और शांति का गीत सुनाया। इसके अलावा उन्होंने मंजु ऋषिदास से दो गीत सुने ही नहीं बल्कि उनकी शूटिंग भी की।
प्रश्न 8.त्रिपुरा में उनाकोटी की प्रसिद्धि का कारण क्या है?
उत्तर-त्रिपुरा स्थिति उनाकोटी दस हजार वर्ग किलोमीटर से कुछ ज्यादा इलाके में फैला हुआ धार्मिक स्थल है। यह भारत का सबसे बड़ा तो नहीं, पर सबसे बड़े शैव स्थलों में एक है। संसार के इस हिस्से में स्थानीय आदिवासी धर्म फलत-फूलते रहे हैं।
प्रश्न 9.उनाकोटी में लेखक को शूटिंग का इंतज़ार क्यों करना पड़ा?
उत्तर-जिलाधिकारी द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा के साथ लेखक अपनी टीम सहित नौ बजे तक उनाकोटी पहुँच गया, परंतु यह स्थान खास ऊँचे पहाड़ों से घिरा है, इससे यहाँ सूरज की रोशनी दस बजे तक ही पहुँच पाती है। रोशनी के अभाव में शूटिंग करना संभव न था, इसलिए लेखक को शूटिंग के लिए इंतजार करना पड़ा|
दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-
प्रश्न 1.लेखक को अपनी यात्रा में शूटिंग के लिए क्या-क्या खतरे उठाने पड़े? इस तरह की परिस्थितियों का विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है? ऐसी परिस्थितियों को रोकने के लिए कुछ सुझाव दीजिए।
उत्तर-लेखक को एक धारावाहिक की शूटिंग के लिए त्रिपुरा जाना पड़ा। यहाँ बाहरी लोगों की भारी आवक के कारण स्थानीय लोगों में गहरा असंतोष है। इससे यह क्षेत्र हिंसा की चपेट में आ जाता है। इस हिंसाग्रस्त भाग में 83 किलोमीटर लंबी यात्रा में लेखक को सी.आर.पी.एफ. की सुरक्षा में काफिले के रूप में चलना पड़ा। मौत का भय उसे आशंकित बनाए हुए था। इस तरह की परिस्थितियों के कारण पर्यटन उद्योग बुरी तरह चरमरा जाता है| इसके अलावा अन्य उद्योग धंधों का विकास भी नहीं हो पाता

है जिसका दुष्प्रभाव प्रदेश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों को रोकने के लिए सरकार को असंतुष्ट लोगों के साथ मिलकर बातचीत करनी चाहिए, उनकी समस्याओं को ध्यान से सुनना चाहिए तथा उनके निवारण हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।

प्रश्न 2.-'कल्लू कुम्हार की उनाकोटी' पाठ के आधार पर गंगावतरण की कथा का उल्लेख कीजिए और बताइए कि ऐसे स्थलों की यात्रा करते समय हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर-त्रिपुरा राज्य में स्थित उनाकोटी नामक स्थान पर गंगावतरण की संपूर्ण कथा को पत्थरों पर उकेरा गया है। यहाँ एक विशाल चट्टान पर भागीरथ को तपस्या करते दर्शाया गया है तो दूसरी चट्टान पर शिव के चेहरे को बनाया गया है और उनकी जटाएँ दो पहाड़ों की चोटियों पर फैली हैं। यह साल भर बहने वाला जल प्रपात है जिसका जल गंगा जितना ही पवित्र माना जाता है।

ऐसे स्थलों की यात्रा करते समय हमें यह विशेष ध्यान रखना चाहिए कि-

हम वहाँ गंदगी न फैलाएँ।

अपनी ज़रूरी वस्तुएँ स्वयं ले जाएँ और लेकर वापस आएँ।

पेड़ों, चट्टानों या अन्य प्राकृतिक वस्तुओं पर अपना नाम लिखने का प्रयास न करें तथा न कोई प्रतीक चिह्न बनाएँ।

ऐसे स्थानों की पवित्रता का ध्यान रखें तथा पेड़-पौधों एवं अन्य वस्तुओं को नुकसान न पहुँचाएँ।

प्रश्न 3.लेखक को ऐसा क्यों लगा कि त्रिपुरा स्वच्छता के नाम पर उत्तर भारतीय गाँवों से अलग है? इससे आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर-त्रिपुरा में लेखक की मुलाकात गायिका मंजु ऋषिदास से हुई। वे रेडियो कलाकार होने के साथ नगर पंचायत में अपने वार्ड का प्रतिनिधित्व करती थी। वे अपने क्षेत्र की सबसे बड़ी आवश्यकता (स्वच्छ पेयजल) की पूरी जानकारी रखती थे। वे नगर पंचायत को इस बात के लिए राजी कर चुकी थीं कि उनके वार्ड में नल का पानी पहुँचाया जाए और गलियों में ईंटें बिछाई जाएँ। मंजु ऋषिदास का संबंध मोचियों के समुदाय से था।इस समुदाय की बस्तियों को प्रायः मलिन बस्ती के नाम से जाना जाता है, पर मंजु ने यहाँ शारीरिक और व्यक्तिगत स्वच्छता अभियान चलाया जबकि उत्तर भारतीय गाँवों में स्वच्छता के नाम पर एक नए किस्म की अछूत प्रथा अब भी चलन में दिखती है। इससे हमें भी अपने आसपास साफ़-सफ़ाई रखने की प्रेरणा मिलती है|

पाठ-४-तुम कब जाओगे अतिथि

लेखक शरद जोशी -

जन्म – 1931

पाठ सार:

लेखक अपने घर में आए अतिथि को अपने मन में संबोधित करते हुए कहता है कि आज अतिथि को लेखक के घर में आए हुए चार दिन हो गए हैं और लेखक के मन में यह प्रश्न बार-बार आ रहा है कि 'तुम कब जाओगे, अतिथि? लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि वह जहाँ बैठे बिना संकोच के सिगरेट का धुआँ उड़ा रहा है, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है।

लेखक कहता है कि पिछले दो दिनों से वह अतिथि को कलैंडर दिखाकर तारीखें बदल रहा है। ऐसा लेखक ने इसलिए कहा है क्योंकि लेखक अतिथि की सेवा करके थक गया है। पर चौथे दिन भी अतिथि के जाने की कोई संभावना नहीं लग रही थी। लेखक अपने मन में अतिथि को कहता है कि अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम बिल्कुल सही वक्त है। क्या उसे उसकी मातृभूमि नहीं पुकारती?

अर्थात क्या उसे उसके घर की याद नहीं आती। लेखक अपने मन में ही अतिथि से कहता है कि उस दिन जब वह आया था तो लेखक का हृदय ना जाने किसी अनजान डर के (किसी अन्जान डर से)धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं लेखक का बटुआ काँप गया।

उसके बावजूद एक प्यार से भीगी हुई मुस्कराहट के साथ लेखक ने अतिथि को गले लगाया था और मेरी लेखक की पत्नी ने अतिथि को सादर नमस्ते की थी।

अतिथि को याद होगा कि दो सब्ज़ियों और रायते के अलावा उन्होंने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में लेखक को एक उम्मीद थी। यह उम्मीद थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार अतिथि सत्कार की छाप अपने हृदय में ले कर अतिथि चला जायेगा। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी अतिथि मुस्कान बनाए लेखक के घर में ही बने रहे।

लेखक अपने मन में ही अतिथि से कहता है कि उन्होंने अपने दुःख को पी लिया और प्रसन्न बने रहे। लेखक ने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को अतिथि को सिनेमा दिखाया।

लेखक के सत्कार का यह आखिरी छोर था, जिससे आगे लेखक कभी किसी के लिए नहीं बढ़े। इसके तुरंत बाद लेखक को अनुमान था कि विदाई का वह प्रेम से ओत-प्रोत भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब अतिथि विदा होता और लेखक उसे स्टेशन तक छोड़ने जाता।

पर अतिथि ने ऐसा नहीं किया। वह लेखक के घर पर ही रहा।लेखक अपने मन में ही अतिथि से कहता है कि तीसरे दिन की सुबह अतिथि ने लेखक से कहा कि वह धोबी को कपड़े देना चाहता है। लेखक अतिथि से कहता है कि कपड़ों को किसी लॉण्ड्री में दे देते हैं इससे वे जल्दी धुल जाएंगे, लेखक के मन में एक विश्वास पल रहा था कि शायद अतिथि को अब जल्दी जाना है। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और अतिथि अब भी लेखक के घर पर ही था। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि उसके भारी भरकम शरीर से सलवटें पड़ी हुई चादर बदली जा चुकी है परन्तु अभी भी अतिथि यहीं है।

अतिथि को देखकर फूट पड़नेवाली मुस्कराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब कही गायब हो गई है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते।

परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, मँहगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर लेखक और अतिथि ने पुरानी प्रेमिकाओं का भी जिक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है।

ह्रदय की सरलता अब धीरे-धीरे बोरियत में बदल गई है। पर अतिथि जा नहीं रहा। लेखक के मन में बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है-तुम कब जाओगे, अतिथि? कल लेखक की पत्नी ने धीरे से लेखक से पूछा था,"कब तक टिकेंगे ये?" लेखक ने कंधे उचका कर कहा कि वह क्या कह सकता है? लेखक की पत्नी ने अब गुस्से से कहा कि वह अब खिंचड़ी बनाएगी क्योंकि वह खाने में हल्की रहेगी।

लेखक ने भी हाँ कह दिया।लेखक अपने मन ही कहता है कि अतिथि के सत्कार करने की उसकी क्षमता अब समाप्त हो रही थी। डिनर से चले थे, खिचड़ी पर आ गए थे। अब भी अगर अतिथि नहीं जाता तो हमें लेखक और उसकी पत्नी को उपवास तक जाना होगा। लेखक चाहता है कि अतिथि अब चला जाए।

लेखक अपने मन ही कहता है कि लेखक जानता है कि अतिथि को लेखक के घर में अच्छा लग रहा है। दूसरों के यहाँ अच्छा ही लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि अपने खर्राटों से एक और रात गुँजित करने के बाद कल जो किरण अतिथि के बिस्तर पर आएगी वह अतिथि के लेखक के घर में आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी।

लेखक अतिथि से उम्मीद करता है कि सूर्य की किरणें जब चूमेगी और अतिथि घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लेगा । लेखक अपने मन ही अतिथि से कहता है कि लेखक जानता है कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर लेखक भी मनुष्य ही है।

लेखक कोई अतिथि की तरह देवता नहीं है। लेखक कहता है कि एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। लेखक अतिथि को लौट जाने के लिए कहता है और कहता है कि इसी में अतिथि का देवत्व सुरक्षित रहेगा। लेखक अंत में दुखी हो कर अतिथि से कहता है उफ, तुम कब जाओगे, अतिथि?

* बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर:

प्रश्न 1 - लेखक किससे परेशान है?

(A) अपनी पत्नी से

(B) अतिथि से

(C) महँगाई से

(D) गर्मी से

प्रश्न 2 - लेखक के घर में अतिथि को कितने दिन हो गए थे?

(A) दो

(B) चार

(C) पाँच

(D) तीन

प्रश्न 3 - लेखक अतिथि से क्या चाहता है**?**

(A) वह लेखक के ही घर में रहे

(B) एकदो दिन और रुके-

(C) वह जल्दी चला जाए

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 4 - लेखक कितने दिनों से अतिथि को कलैंडर दिखाकर तारीखें बदल रहा है?

(A) दो

(B) चार

(C) तीन

(D) एक

प्रश्न 5 - लेखक को अतिथि से क्या उम्मीद थी?

(A) वह कुछ काम करेगा

(B) वह लेखक की मदद करेगा

(C) वह अगले ही दिन चला जाएगा

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 6 - लॉण्ड्री में कपड़े देने की बात सुनकर लेखक की पत्नी को क्या लगा?

(A) अब अतिथि चला जाएगा

(B) खर्च बढ़ेगा

(C) समय लगेगा

(D) अतिथि और कुछ दिन ठहरेगा

प्रश्न 7 - लेखक की पत्नी अतिथि के सत्कार से दुखी होकर क्या बनाने को कहती है?

(A) खिचड़ी

(B) पुलाव

(C) आलू

(D) खीर

प्रश्न 8 - लेखक की सहनशक्ति किस दिन ज़वाब देने वाली थी?

(A) दूसरे

(B) पाँचवे

(C) तीसरे

(D) चौथे

प्रश्न 9 - लेखक के अनुसार अतिथि के समय पर लौट जाने पर अतिथि का क्या सुरक्षित रहता है?

(A) सामान

(B) इज़्जत

(C) देवत्व

(D) मान

प्रश्न 10 - लेखक अंत में दुखी हो कर अतिथि से क्या कहता है?

(A) और कितना परेशान करोगे

(B) कब तक ठहरोगे

(C) कितनी बात करोगे

(D) उफ, तुम कब जाओगे, अतिथि?

*निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए-

प्रश्न 1.अतिथि कितने दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है?

उत्तर-अतिथि चार दिनों से लेखक के घर पर रह रहा है

प्रश्न 2.कैलेंडर की तारीखें किस तरह फड़फड़ा रही हैं?

उत्तर-कैलेंडर की तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ा रही हैं। मानों वे भी अतिथि को बता रही हों कि तुम्हें यहाँ आए। दो-तीन दिन बीत चुके हैं|

प्रश्न 3.पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया?

उत्तर-पति-पत्नी ने मेहमान का स्वागत प्रसन्नतापूर्वक किया। पति ने स्नेह से भीगी मुसकान से उसे गले लगाया तथा पत्नी ने सादर नमस्ते की।

प्रश्न 4.दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई?

उत्तर-दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की गई।

प्रश्न 5.तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा?

उत्तर-अतिथि ने तीसरे दिन कहा कि वह अपने कपड़े धोबी को देना चाहता है|

प्रश्न 6.सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर क्या हुआ?

उत्तर-सत्कार की ऊष्मा समाप्त होने पर लेखक उच्च मध्यमवर्गीय डिनर से खिचड़ी पर आ गया। यदि इसके बाद भी अतिथि नहीं गया तो उसे उपवास तक जाना पड़ सकता है।

*-निम्नलिखित कथनों की व्याख्या कीजिए-

1-अंदर ही अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया।

1-बिना सूचना दिए अतिथि को आया देख लेखक परेशान हो गया। वह सोचने लगा कि अतिथि की आवभगत में उसे अतिरिक्त खर्च करना पड़ेगा जो उसकी जेब के लिए भारी पड़ने वाला है।

2-अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

2-अतिथि देवता होता है पर अपना देवत्व बनाए रखकरे। यदि अतिथि अगले दिन वापस नहीं जाता है और मेजबान के लिए पीड़ा का कारण बनने लगता है तो मनुष्य न रहकर राक्षस नज़र आने लगता है। देवता कभी किसी के दुख का कारण नहीं बनते हैं।

3-लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़े।

3-जब अतिथि आकर समय से नहीं लौटते हैं तो मेजबान के परिवार में अशांति बढ़ने लगती है। उस परिवार का चैन खो जाता है। पारिवारिक समरसता कम होती जाती है और अतिथि का का ठहरना बुरा लगने लगता है।

4-मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी|

4-पहले दिन के बाद से ही लेखक को अतिथि का रुकना भारी पड़ रहा था। दूसरा तीसरा दिन तो जैसे तैसे बीता पर अगले दिन वह सोचने लगा कि यदि अतिथि पाँचवें दिन रुका तो उसे गेट आउट कहना पड़ेगा।

5-एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते।

5- देवता कुछ ही समय ठहरते हैं और दर्शन देकर चले जाते हैं। अतिथि कुछ ही समय के लिए देवता होते हैं, ज्यादा दिन ठहरने पर मनुष्य के लिए वह भारी पड़ने लगता है तब किसी भी तरह अतिथि को जाना ही पड़ता है|

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

प्रश्न 1.कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और उसका लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर-तीसरे दिन मेहमान का यह कहना कि वह धोबी से कपड़े धुलवाना चाहता है, एक अप्रत्याशित आघात था। यह फरमाइश एक ऐसी चोट के समान थी जिसकी लेखक ने आशा नहीं की थी। इस चोट का लेखक पर यह प्रभाव पड़ा कि वह अतिथि को राक्षस की तरह मानने लगा। उसके मन में अतिथि के प्रति सम्मान की बजाय बोरियत, बोझिलता और तिरस्कार की भावना आने लगी। वह चाहने लगा कि यह अतिथि इसी समय उसका घर छोड़कर चला जाए|

प्रश्न 2.'संबंधों का संक्रमण के दौर से गुजरना'-इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

उत्तर-संबंधों का संक्रमण दौर से गुजरने का आशय है-संबंधों में बदलाव आना। इस अवस्था में कोई वस्तु अपना मूल स्वरूप खो बैठती है और कोई दूसरा रूप ही अख्तियार कर लेती है। लेखक के घर आया अतिथि जब तीन दिन से अधिक समय रुक गया तो ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई। लेखक ने उससे अनेकानेक विषयों पर बातें करके विषय का ही अभाव बना लिया था। इससे चुप्पी की स्थिति बन गई, जो बोरियत लगने लगी। इस प्रकार उत्साहजनक संबंध बदलकर अब बोरियत में बदलने लगे थे|

अन्य दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.लेखक के व्यवहार में आधुनिक सभ्यता की कमियाँ झलकने लगती हैं। इससे आप कितना सहमत हैं, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-लेखक पहले तो घर आए अतिथि का गर्मजोशी से स्वागत करता है परंतु दूसरे ही दिन से उसके व्यवहार में बदलाव आने लगता है। यह बदलाव आधुनिक सभ्यता की कमियों का स्पष्ट लक्षण है। मैं इस बात से पूर्णतया सहमत हूँ। लेखक जिस अतिथि को देवतुल्य समझता है वही अतिथि मनुष्य और कुछ अंशों में राक्षस-सा नजर आने लगता है। उसे अपनी सहनशीलता की समाप्ति दिखाई देने लगती है तथा अपना बजट खराब होने लगता है, जो आधुनिक सभ्यता की कमियों का स्पष्ट प्रमाण है।

प्रश्न 2.दूसरे दिन अतिथि के न जाने पर लेखक और उसकी पत्नी का व्यवहार किस तरह बदलने लगता है?

उत्तर-लेखक के घर जब अतिथि आता है तो लेखक मुसकराकर उसे गले लगाता है और उसका स्वागत करता है। उसकी पत्नी भी उसे सादर नमस्ते करती है। उसे भोजन के बजाय उच्च माध्यम स्तरीय डिनर करवाते हैं। उससे तरह-तरह के विषयों पर बातें करते हुए उससे सौहार्द प्रकट करते हैं परंतु तीसरे दिन ही उसकी पत्नी खिचड़ी बनाने की बात कहती है। लेखक भी बातों के विषय की समाप्ति देखकर बोरियत महसूस करने लगता है। अंत में उन्हें अतिथि देवता कम मनुष्य और राक्षस-सा नज़र आने लगता है।

प्रश्न 3.अतिथि रूपी देवता और लेखक रूपी मनुष्य को साथ-साथ रहने में क्या परेशानियाँ दिख रही थीं?

उत्तर-भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता माना गया है जिसका स्वागत करना हर मनुष्य का कर्तव्य होता है। इस देवता और अतिथि को साथ रहने में यह परेशानी है कि देवता दर्शन देकर चले जाते हैं, परंतु आधुनिक अतिथि रूपी देवता मेहमान नवाजी का आनंद लेने के चक्कर में मनुष्य की परेशानी भूल जाते हैं। जिस मनुष्य की आर्थिक स्थिति अच्छी न हो उसके लिए आधुनिक देवता का स्वागत करना और भी कठिन हो जाता है|

प्रश्न 4.'तुम कब जाओगे, अतिथि' पाठ की प्रासंगिकता आधुनिक संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'तुम कब जाओगे, अतिथि' नामक पाठ में बिना पूर्व सूचना के आने वाले उस अतिथि का वर्णन है जो मेहमान नवाजी का आनंद लेने के चक्कर मेजबान की परेशानियों को नज़रअंदाज कर जाता है। अतिथि देवता को नाराज़ न करने के चक्कर में मेजबान हर परेशानी को झेलने के लिए विवश रहता है। वर्तमान समय और इस महँगाई के युग में जब मनुष्य अपनी ही ज़रूरतें पूरी करने में अपने आपको असमर्थ पा रहा है और उसके पास समय और साधन की कमी है तब ऐसे अतिथि का स्वागत सत्कार करना कठिन होता जा रहा है। अतः यह पाठ आधुनिक संदर्भो में पूरी तरह प्रासंगिक है|

प्रश्न 5.लेखक को ऐसा क्यों लगने लगा कि अतिथि सदैवृ देवता ही नहीं होते?

उत्तर-लेखक ने देखा कि उसके यहाँ आने वाले अतिथि उसकी परेशानी को देखकर भी अनदेखा कर रहा है और उस पर बोझ बनता जा रहा है। चार दिन बीत जाने के बाद भी वह अभी जाना नहीं चाहता है जबकि देवता दर्शन देकर लौट जाते हैं। वे इतना दिन नहीं ठहरते। इसके अलावा वे मनुष्य को दुखी नहीं करते तथा उसकी हर परेशानी का ध्यान रखते हैं। अपने |घर आए अतिथि का ऐसा व्यवहार देखकर लेखक को लगने लगता है कि हर अतिथि देवता नहीं होता है।

प्रश्न -6.'अतिथि देवो भवउक्ति की व्याख्या करें तथा आधुनिक युग के संदर्भ में इसका आकलन करें। '

उत्तर-भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता का दर्जा दिया गया है। उसे देवता के समान मानकर उसका आदर सत्कार किया जाता है। आज के भौतिकवादी युग में मनुष्य मशीनी जीवन जी रहा है। उसके पास अपने परिवार के लिए समय नहीं रह गया है तो अतिथि के लिए समय कैसे निकाले। इसके अलावा महँगाई के इस युग में जब अपनी जरूरतें पूरी करना कठिन हो रहा तो अतिथि का सत्कार जेब काटने लगता है। ऐसे में मनुष्य को अतिथि से दूर ही रहना चाहिए|

काव्य-पाठ-१२-फूल की चाह

कवि सियारामशरण गुप्त -

जन्म – 1895

पाठ सार:-

प्रस्तुत पाठ गुप्त जी की कविता एक फूल की चाह'' का एक छोटा सा भाग है। यह पूरी कविता छुआछूत की समस्या पर केंद्रित है। कवि कहता है कि एक बड़े स्तर पर फैलने वाली बीमारी बहुत भयानक रूप से फैली हुई थी। उस महामारी ने लोगों के मन में भयानक डर बैठा दिया था। इस कविता का मुख्य पात्र अपनी बेटी जिसका नाम सुखिया था, उसको बारबार बाहर - जाने से रोकता था। लेकिन सुखिया उसकी एक न मानती थी और खेलने के लिए बाहर चली जाती थी। जब भी वह अपनी बेटी को बाहर जाते हुए देखता था तो उसका हृदय डर के मारे काँप उठता था। वह यही सोचता रहता था कि किसी तरह उसकी बेटी उस महामारी के प्रकोप से बच जाए। एक दिन सुखिया के पिता ने पाया कि सुखिया का शरीर बुखार से तप रहा था। उस बच्ची ने अपने पिता से कहा कि वह तो बस देवी माँ के प्रसाद का एक फूल चाहती है ताकि वह ठीक हो जाए। सुखिया के शरीर का अंगअंग कमजोर हो चूका था। सुखिया का - पिता सुखिया की चिंता में इतना डूबा रहता था कि उसे किसी बात का होश ही नहीं रहता था। जो बच्ची कभी भी एक जगह शांति से नहीं बैठती थी, वही आज इस तरह न टूटने वाली शांति धारण किए चुपचाप पड़ी हुई थी। कवि मंदिर का वर्णन करता हुआ कहता है कि पहाड़ की चोटी के ऊपर एक विशाल मंदिर था। उसके विशाल आँगन में कमल के फूल सूर्य की किरणों में इस तरह शोभा दे रहे थे जिस तरह सूर्य की किरणों में सोने के घड़े चमकते हैं। मंदिर का पूरा आँगन धूप और दीपकों की खुशबू से महक रहा था। मंदिर के अंदर और बाहर माहौल ऐसा लग रहा था जैसे वहाँ कोई उत्सव हो। जब सुखिया का पिता मंदिर गया तो वहाँ मंदिर में भक्तों के झुंड मधुर आवाज़ में एक सुर में भक्ति के साथ देवी माँ की आराधना कर रहे थे। सुखिया के पिता के मुँह से भी देवी माँ की स्तुति निकल गई। पुजारी ने सुखिया के पिता के हाथों से दीप और फूल लिए और देवी की प्रतिमा को अर्पित कर दिया। फिर जब पुजारी ने उसे दोनों हाथों से प्रसाद भरकर दिया तो एक पल को वह ठिठक सा

गया। क्योंकि सुखिया का पिता छोटी जाति का था और छोटी जाति के लोगों को मंदिर में आने नहीं दिया जाता था। सुखिया का पिता अपनी कल्पना में ही अपनी बेटी को देवी माँ का प्रसाद दे रहा था। सुखिया का पिता प्रसाद ले कर मंदिर के द्वार तक भी नहीं पहुँच पाया था कि अचानक किसी ने पीछे से आवाज लगाई, "अरे यह अछूत मंदिर के भीतर कैसे आ गया? इसे पकड़ो कही यह भाग न जाए।' वे कह रहे थे कि सुखिया के पिता ने मंदिर में घुसकर बड़ा भारी अनर्थ कर दिया है और लम्बे समय से बनी मंदिर की पवित्रता को अशुद्ध कर दिया है। इस पर सुखिया के पिता ने कहा कि जब माता ने ही सभी मनुष्यों को बनाया है तो उसके मंदिर में आने से मंदिर अशुद्ध कैसे हो सकता है। यदि वे लोग उसकी अशुद्धता को माता की महिमा से भी ऊँचा मानते हैं तो वे माता के ही सामने माता को नीचा दिखा रहे हैं। लेकिन उसकी बातों का किसी पर कोई असर नहीं हुआ। लोगों ने उसे घेर लिया और उसपर घूँसों और लातों की बरसात करके उसे नीचे गिरा दिया। लोग उसे न्यायलय ले गये। वहाँ उसे सात दिन जेल की सजा सुनाई गई। जेल के वे सात दिन सुखिया के पिता को ऐसे लगे थे जैसे कई सदियाँ बीत गईं हों। उसकी आँखें बिना रुके बरसने के बाद भी बिलकुल नहीं सूखी थीं। जब सुखिया का पिता जेल से छूटा तो उसके पैर उसके घर की ओर नहीं उठ रहे थे। सुखिया के पिता को घर पहुँचने पर जब सुखिया कहीं नहीं मिली तब उसे सुखिया की मौत का पता चला। वह अपनी बच्ची को देखने के लिए सीधा दौड़ता हुआ शमशान पहुँचा जहाँ उसके रिश्तेदारों ने पहले ही उसकी बच्ची का अंतिम संस्कार कर दिया था। अपनी बेटी की बुझी हुई चिता देखकर उसका कलेजा जल उठा। उसकी सुंदर फूल सी कोमल बच्ची अब राख के ढ़ेर में बदल चुकी थी|

*-भावार्थ-:

1 एक फूल की चाह भावार्थ : कवि ने एक फूल की चाह कविता में उस वक्त फैली हुई महामारी के बारे में बताया है। इस महामारी की चपेट में ना जाने कितने मासूम बच्चे आ चुके थे। जिन माताओं ने अपने बच्चों को इस महामारी के कारण खोया था, उनके आँसू रुक ही नहीं रहे थे। रोतेरोते उनकी - आवाज़ कमजोर पड़ चुकी थी, पर उस कमजोर पड़ चुके करुणा से भरे स्वर में भी अपार अशांति सुनाई दे रही थी।

2 एक फूल की चाह भावार्थ : प्रस्तुत पंक्ति में एक पिता द्वारा अपने पुत्री को इस महामारी से बचाने के लिए किये जा रहे प्रयासों का वर्णन है। पिता अपनी पुत्री को महामारी से बचाने के लिए, हर बार बाहर खेलने जाने से रोकता था। पर पिता के हर बार मना करने पर भी, पुत्री सुखिया बाहर खेलने चली जाती थी। जब भी पिता सुखिया को बाहर खेलते हुए देखता था, तो डर से उसका हृदय कांप उठता था। वह सोचता था कि किसी भी तरह वह इस बार अपनी पुत्री को इस महामारी से बचा ले।

3 एक फूल की चाह भावार्थ : इन पंक्तियों मर कवि बता रहे हैं कि आखिरकार पिता को जिस बात का डर था वही हूआ। सुखिया एक दिन बुखार से बुरी तरह तड़प रही थी। उसका शरीर आग की तरह जल रहा था। इस बुखार से विचलित होकर सुखिया बोल रही है कि वह किस बात से डरे और किस बात से नहीं, उसे कुछ समझ नहीं आ रहा। बुखार से तड़पते हुए स्वर में वह अपने पिता से देवी माँ के प्रसाद का एक फूल उसे लाकर देने के लिए बोलती है।

4 एक फूल की चाह भावार्थ : तेज बुखार के कारण सुखिया का गला सूख गया था। उसमें कुछ बोलने की शक्ति नहीं बची थी। उसके सारे अंग ढीले पड़ चुके थे। वहीं दूसरी ओर सुखिया के पिता ने तरह-तरह के उपाय करके देख लिए थे, लेकिन कोई भी काम नहीं आया था। इसी वजह से वह गहरी चिंता में मन मार के बैठा था। वह बेचैनी में हर पल यही सोच रहा था कि कहीं से भी ढूंढ के अपनी बेटी का इलाज ले आए। इसी चिंता में कब सुबह से दोपहर हुई, कब दोपहर ख़त्म हुई और निराशाजनक शाम आयी उसे पता ही नहीं चला।

: एक फूल की चाह भावार्थ-5 इन पंक्तियों में कवि बता रहे हैं कि ऐसे निराशाजनक माहौल में अंधकार भी मानो डसने चला आ रहा है। पिता को ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इतनी छोटीसी बच्ची के लिए - पूरा अंधकार ही दैत्य बनकर चला आया है। पिता इस बात से हताश हो चुका है कि वह अपनी बेटी को बचानेके लिए कुछ भी नहीं कर पाया। इसी निराशा में संध्या के समय आकाश में जगमगाते तारे भी पिता को अंगारों की तरह लग रहे हैं। जिससे उनकी आंखे झुलससी गई हैं।-

6 एक फूल की चाह भावार्थ : पिता को यह देखकर बहूत कष्ट हो रहा है कि उसकी बेटी जो एक पल के लिए भी कभी शांति से नहीं बैठती थी और हमेशा उछलकूद मचाती रहती थी, आज चुपचाप बिना किसी हरकत के लेटी हूई है। वो यहाँ से वहां शोर मचाकार मानो पूरे घर में जान फूंक देती थी, लेकिन अब उसके चुपचाप हो जाने से पूरे घर की ऊर्जा समाप्त हो गई है। पिता उसे बारबार उकसा - कर यही सुनना चाह रहा है कि उसे देवी माँ के प्रसाद का एक फूल चाहिए।

7 एक फूल की चाह भावार्थ : दूर किसी पहाड़ी की चोटी पर एक भव्य मंदिर था। जिसके आँगन में खिले कमल के फूल सूर्य की किरणों में ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, मानो सोने के कलश हों। मंदिर पूरी तरह से दीपकों से सजा हूआ था और धूप से महक रहा था। मंदिर में चारों ओर मंत्रो एवं घंटियो की आवाज़ गूँज रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो मंदिर में कोई उत्सव चल रहा हो।

8 एक फूल की चाह भावार्थ : भक्तों का एक बड़ा समूह पूरी श्रद्धा एवं भक्ति के साथ देवी माँ का जाप कर रहा था। सभी एक साथ एक स्वर में बोल रहे थे 'पतित तारिणी पाप हारिणी, माता तेरी जय जय जय।' यह सुनकर ना जाने उस अभागे पिता के अंदर भी कहाँ से ऊर्जा आ गई और उसके मुख से भी निकल पड़ा 'पतित तारिणी, तेरी जय जय'। वह बिना किसी प्रयास के, अपनेआप ही मंदिर के अंदर - चला गया, मानो उसे किसी शक्ति ने मंदिर के अंदर धकेल दिया हो।

9 एक फूल की चाह भावार्थ : इन पंक्तियों में कवि बताते हैं कि मंदिर में प्रवेश करने पर पिता पुजारी के पास जाकर अपने हाथों से पुष्प और दीप पुजारी को देता है। पुजारी उसे लेकर देवी माँ के चरणों में अर्पित करता है। पुजारी अपने हाथों में देवी माँ के प्रसाद को लेकर उसे देने के लिए हाथ आगे

करता है । पिता इस आनंद में प्रसाद लेना भूल ही जाता है कि अब वह अपनी पुत्री को देवी माँ के प्रसाद का फूल दे पायेगा।

10 एक फूल की चाह भावार्थ : सुखिया का पिता अभी आँगन तक भी नहीं पहुँच पाया था कि अचानक पीछे से आवाज़ आयी – 'अरे यह अछूत मंदिर में कैसे घुस गया। पकड़ो इसे कहीं भाग ना जाए। किस तरह इसने मंदिर में घुसकर चालाकी की है। देखो कैसे साफ़ सुथरे कपड़े पहनकर हमारी नक़ल कर रहा है। पकड़ो इस धूर्त को। कहीं भाग ना जाए।'

11 एक फूल की चाह भावार्थ : फिर भीड़ से आवाज़ आयी कि इस पापी ने मंदिर में घुस कर बड़ा अनर्थ किया है। मंदिर की सालोंसाल की गरिमा-, पवित्रता को इसने नष्ट कर दिया। सब मिलकर चिल्लाने लग जाते हैं कि इस पापी ने मंदिर में घुस कर मंदिर को दूषित कर दिया। तब सुखिया का पिता यह सोचने पर विवश हो जाता है कि क्या मेरा अछूतपन देवी माँ की महिमा से भी बड़ा है? क्या मेरे इस अछूतपन में देवी माँ से भी ज्यादा शक्ति है, जिसने देवी माँ के रहते हुए भी इस पूरे मंदिर को अशुद्ध कर दिया?

12 एक फूल की चाह भावार्थ : सुखिया के पिता ने भीड़ से कहा कि तुम माँ के कैसे भक्त हो, जो खुद माँ के गौरव को मेरी तुलना में छोटा कर दे रहे हो। अरे माँ के सामने तो छूत-अछूत सभी एक-समान हैं। परन्तु, सुखिया के पिता की इन बातों को किसी ने नहीं सुना और भीड़ ने उसे पकड़ कर खूब मारा, फिर मारते हुए उसे जमीन पर गिरा दिया।

13 एक फूल की चाह भावार्थ : भीड़ के इस तरह सुखिया के पिता को पकड़ के मारने के कारण, उसके हाथों से प्रसाद भी गिर गया। जिसमें देवी माँ के चरणों में चढ़ा हुआ फूल भी था। सुखिया के पिता मार खाते हुए, दर्द सहते हुए भी सिर्फ यही सोच रहे थे कि अब ये देवी माँ के प्रसाद का फूल उसकी बेटी सुखिया तक कैसे पहुँचेगा। भीड़ उसे पकड़ कर न्यायलय ले गयी। जहाँ पर उसे देवी माँ के अपमान जैसे भीषण अपराध के लिए सात दिन कारावास का दंड दिया गया।

14 एक फूल की चाह भावार्थ : सुखिया के पिता ने चुपचाप दंड को स्वीकार कर लिया। उसके पास कहने के लिए कुछ था ही नहीं। उसे पूरे सात दिन जेल में बिताने पड़े, जो उसे सात सदियों के बराबर प्रतीत हो रहे थे। पुत्री के वियोग में सदैव बहते आंसू भी रुक नहीं पा रहे थे। वह हर पल अपनी प्यारी पुत्री को याद करके रोता रहता था।

15 एक फूल की चाह भावार्थ : जेल से छूट कर वह भय के कारण घर नहीं जा पा रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसके शरीर के अस्थिपंजर को मानो कोई उसके घर की ओर धकेल रहा हो। - जब वह घर पहुंचा, तो पहले की तरह उसकी बेटी दौड़ कर उसे लेने नहीं आयी और ना ही वह खेलती हुई बाहर कहीं दिखाई दी।

16 एक फूल की चाह भावार्थ : जब वह घर पर अपनी बेटी को नहीं देख पाता है, तो वह अपनी बेटी को देखने के लिए श्मशान की ओर दौड़ता है। परन्तु जब वह श्मशान पहुँचता है, तो उसके परिचित बंधु आदि संबंधी पहले ही उसकी पुत्री का अंतिम संस्कार कर चुके होते हैं। अब तो उसकी चिता भी

बुझ चुकी थी। यह देख कर सुखिया के पिता की छाती धधक उठती है। उसकी फूलों की तरह कोमल-सी बच्ची आज राख का ढेर बन चुकी थी।

एक फूल की चाह भावार्थ : अंत में सुखिया के पिता के मन में बस यही मलाल शेष बचता है कि वह अपनी पुत्री को अंतिम बार गोद में भी नहीं ले पाया। वह इतना अभागा है कि अपनी बेटी की अंतिम इच्छा के रूप में, माँ के प्रसाद का एक फूल भी उसे लाकर नहीं दे पाया

*-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) कविता की उन पंक्तियों को निखिए, जिनमें निम्नलिखित अथं का बोध होता है-

(i) सुखिया के बाहर जाने पर पिता का हृदय काँप उठता था।

उत्तर-नहीं खेलना रुकता उसका
नहीं ठहरती वह पल-भर।
मेरा हृदय काँप उठता था,
बाहर गई निहार उसे।

(ii) पर्वत की चोटी पर स्थित मंदिर की अनुपम शोभा।

उत्तर-ऊँचे शैल-शिखर के ऊपर
मंदिर था विस्तीर्ण विशाल;
स्वर्ण-कलश सरसिज विहसित थे
पाकर समुदित रवि-कर-जाल|

(iii) पुजारी से प्रसाद/फूल पाने पर सुखिया के पिता की मन:स्थिति।

उत्तर-भूल गया उसका लेना झट,
परम लाभ-सा पाकर मैं।
सोचा, -बेटी को माँ के ये
पुण्य-पुष्प दें जाकरे मैं|

(iv) पिता की वेदना और उसका पश्चाताप।

उत्तर-बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर
छाती धधक उठी मेरी,
हाय! फूल-सी कोमल बच्ची
हुई राख की थी ढेरी!
अंतिम बार गोद में बेटी,

तुझको ले न सका मैं हा!
एक फूल माँ का प्रसाद भी
तुझको दे न सका मैं हा!

(ख)बीमार बच्ची ने क्या इच्छा प्रकट की?
उत्तर-बीमार बच्ची सुखिया ने अपने पिता के सामने यह इच्छा प्रकट की कि वह देवी माँ के मंदिर के प्रसाद का फूल चाहती है।

(ग) सुखिया के पिता पर कौन-सा आरोप लगाकर उसे दंडित किया गया?
उत्तर-सुखिया का पिता उस वर्ग से संबंधित था, जिसे समाज अछूत समझता था। समाज के कुलीन तथाकथित भक्तों ने इस वर्ग के लोगों का मंदिर में प्रवेश वर्जित कर रखा था। सुखिया का पिता अपनी बेटी की इच्छा पूरी करने के लिए मंदिर में प्रवेश कर गया। मंदिर की पवित्रता नष्ट करने और देवी का अपमान करने का आरोप लगाकर उसे सात दिन का कारावास देकर दंडित किया गया।

(घ)जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता ने अपनी बच्ची को किस रूप में पाया?
उत्तर-जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता ने अपनी बच्ची को राख की ढेरी के रूप में पाया। उसकी मृत्यु हो गई थी। अतः उसके संबंधियों ने उसका दाह संस्कार कर दिया था।

(डी) इस कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर-केंद्रीय भाव- 'एक फूल की चाह' कविता में समाज में फैले वर्ग-भेद, ऊँच-नीच और छुआछूत की समस्या को केंद्र में रखा गया है। समाज दो वर्गों में बँटा हुआ है-एक तथाकथित कुलीन एवं उच्चवर्ग, दूसरो अछूत समझा। जाने वाला निम्न वर्ग। इसी अछूत वर्ग की कन्या सुखिया जो महामारी का शिकार होकर बुखार से तपती अवस्था में अर्ध बेहोशी की स्थिति में पहुँच जाती है। वह अपने पिता से देवी के प्रसाद का फूल लाने के लिए कहती है।उसका पिता मंदिर में जाता है और देवी के प्रसाद का फूल लेकर आते समय पकड़ लिया जाता है। न्यायालय भी मंदिर को अपवित्र करने तथा देवी का अपमान करने के जुर्म में उसे सात दिन कारावास देता है। इसी बीच उसकी पुत्री मर जाती है, और जला दी जाती है। इस प्रकार अछुतों के मंदिरों में प्रवेश, उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर किया गया अन्याय, एक पिता-पुत्री का अंतिम मिलन न हो पाने की वेदना कविता का केंद्रीय भाव है|

*-बहुवैकल्पिक-प्रश्नोत्तर:-

1 - कविता किस समस्या पर केंद्रित है?

(A) सुखिया की बिमारी की समस्या
(B) सुखिया के पिता की समस्या
(C) छुआछूत की समस्या

(D) भक्तों की समस्या

प्रश्न 2 - लोग किसके डर से घबराए हुए थे?
(A) सुखिया की बिमारी से
(B) सुखिया के पिता से
(C) छुआछूत की समस्या से
(D) महामारी के फैलने से

प्रश्न 3 - सुखिया का पिता सुखिया को बाहर जाने से क्यों रोक रहा था**?**
(A) सुखिया की बिमारी के कारण
(B) महामारी के कारण
(C) छुआछूत की समस्या के कारण
(D) भक्तों के डर से

प्रश्न 4 - सुखिया के पिता का हृदय डर के मारे क्यों काँप उठता था**?**
(A) सुखिया की बीमारी के कारण
(B) सुखिया कहीं महामारी की चपेट में ना जाए इस कारण
(C) छुआछूत की समस्या के कारण
(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 5 - सुखिया के पिता को किस बात का डर था?
(A) सुखिया के बिमारी पड़ने का
(B) सुखिया के गिरने का
(C) छुआछूत की समस्या का
(D) मंदिर से बाहर निकाले जाने का

प्रश्न 6 - बच्ची ने बुखार के दर्द में अपने पिता से क्या कहा?
(A) बाहर खेलने जाने को
(B) देवी माँ के प्रसाद का एक फूल माँगा
(C) मंदिर में मन्नत मांगने को
(D) दर्द की दवा लाने को

प्रश्न 7 - चिंता में डूबे सुखिया के पिता को क्या पता नहीं चलता था?
(A) कब सुबह हो गई

(B) कब आलस से भरी दोपहर ढल गई

(C) कब सुनहरे बादलों में सूरज डूबा और कब शाम हो गई

(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 8 - बच्ची के पिता को ऊपर विशाल आकाश में चमकते तारे कैसे लग रहे थे**?**

(A) हीरों के समान

(B) चमकते शीशे के समान

(C) जलते हुए अंगारों के समान

(D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 9 - सुखिया का पिता उसे झकझोरकर खुद ही क्या पूछना चाहता था?

(A) सुखिया की बिमारी के बारे में

(B) देवी माँ के प्रसाद के फूल के बारे में

(C) छुआछूत की समस्या के बारे में

(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 10 - मंदिर के विशाल आँगन में कमल के फूल किस तरह शोभा दे रहे थे?

(A) सोने के घड़ों के समान

(B) सूर्य के समान

(C) खूबसूरत रंगों के समान

(D) इंद्रधनुष के समान

प्रश्न 11 - मंदिर में किस तरह का माहौल लग रहा था?

(A) शादी की तरह

(B) खुशियों का

(C) उत्सव की तरह

(D) जन्मोत्सव की तरह

प्रश्न 12 - सुखिया का पिता मंदिर में क्या कल्पना करने लगा**?**

(A) सुखिया की बिमारी के ठीक होने की

(B) सुखिया को प्रसाद का फूल देने की

(C) छुआछूत की समस्या की समाप्ति की

(D) मंदिर में उत्सव की

प्रश्न 13 - सुखिया के पिता को लोग पापी क्यों कह रहे थे?

(A) प्रसाद लेने के कारण

(B) अछूत होने के कारण

(C) मंदिर में प्रवेश करने के कारण

(D) उपरोक्त सभी

प्रश्न 14 - सुखिया का पिता दुखी क्यों हो गया?

(A) सुखिया की बिमारी के कारण

(B) उसकी पिटाई के कारण

(C) छुआछूत की समस्या के कारण

(D) प्रसाद का फूल अपनी बेटी तक न पहुँचा पाने के कारण

प्रश्न 15 - सुखिया के पिता को क्या सजा हुई?

(A) दो दिन जेल में रहने की

(B) सात दिन जेल में रहने की

(C) पाँच दिन जेल में रहने की

(D) तीन दिन जेल में रहने की

प्रश्न 16 - सुखिया के पिता को सजा क्यों हुई?

(A) सुखिया की बिमारी के कारण

(B) अछूत होते हुए मंदिर में प्रवेश के कारण

(C) छुआछूत की समस्या के कारण

(D) झूठ बोलने के कारण

प्रश्न 17 - जब सुखिया का पिता घर पहुँचा तो क्या हुआ?

(A) सुखिया उसे कहीं नहीं मिली

(B) लोगों ने ताने मारे

(C) उसका सबने मजाक उड़ाया

(D) सब उससे दूर हो गए

प्रश्न 18 - सुखिया के पिता को घर पहुँचने पर सुखिया कहीं क्यों नहीं मिली?

(A) सुखिया बाहर गई हुई थी

(B) सुखिया अस्पताल में थी

(C) सुखिया मर चुकी थी

(D) सुखिया का उसके रिश्तेदारों ने अंतिम संस्कार कर दिया था

प्रश्न 19 - सुखिया के पिता को सुखिया किस रूप में मिली?

(A) राख के ढ़ेर में

(B) मृत रूप में

(C) बीमार रूप में

(D) शमशान में लेटी हुई

प्रश्न 20 - सुखिया के पिता को किस बात का पश्चाताप था?

(A) सुखिया की बिमारी को ठीक न कर पाने का

(B) सुखिया को प्रसाद का फूल न दे पाने का

(C) छुआछूत की समस्या ख़त्म न कर पाने का

(D) सुखिया के साथ न खेल पाने का

*-लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1.महामारी अपना प्रचंड रूप किस प्रकार दिखा रही थी?

उत्तर-बस्ती में महामारी दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। यहाँ कई बच्चे इसका शिकार हो चुके थे। जिन माताओं के बच्चे अभी इसका शिकार हुए थे, उनका रो-रोकर बुरा हाल था। उनके गले से क्षीण आवाज़ निकल रही थी। उस क्षीण आवाज़ में हाहाकार मचाता उनका अपार दुख था। महामारी के इस प्रचंड रूप में चारों ओर करुण क्रंदन सुनाई दे रहा था|

प्रश्न 2.पिता सुखिया को कहाँ जाने से रोकता था और क्यों?

उत्तर-पिता सुखिया को बाहर जाकर खेलने से मना करता था क्योंकि उसकी बस्ती में महामारी अपने प्रचंड रूप में हाहाकार मचा रही थी। इस महामारी की चपेट में कई बच्चे आ चुके थे। सुखिया अपनी बच्ची से बहुत प्यार करता था। उसे डर था कि कहीं सुखिया महामारी की चपेट में न आ जाए।

प्रश्न 3.सुखिया ने अपने पिता से देवी के प्रसाद का फूल क्यों माँगा?

उत्तर-सुखिया महामारी की चपेट में आ चुकी थी। महामारी के कारण उसकी आवाज कमजोर हो गई और शरीर के अंग शिथिल पड़ गए थे। उसे लग गया होगा कि उसकी मृत्यु निकट है। उसे आशा रही होगी कि वह शायद देवी के प्रसाद से ठीक हो जाए। बीमारी की दशा में वह स्वयं तो जा नहीं सकती थी, इसलिए उसने देवी के प्रसाद का फूल माँगा|

प्रश्न 4.मंदिर की भव्यता और सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर-देवी का विशाल मंदिर ऊँचे पर्वत की चोटी पर स्थित था। यह मंदिर बहुत बड़ा था। मंदिर की चोटी पर सुंदर सुनहरा कलश था जो सूर्य की किरणें पड़ने से कमल की तरह खिल उठता था। वहाँ का वातावरण धूप-दीप के कारण सुगंधित था। अंदर भक्तगण मधुर स्वर में देवी का गुणगान कर रहे थे|

प्रश्न 5.न्यायालय द्वारा सुखिया के पिता को क्यों दंडित किया गया?

उत्तर-न्यायालय द्वारा सुखिया के पिता को इसलिए दंडित किया गया, क्योंकि वह अछूत होकर भी देवी

के मंदिर में प्रवेश कर गया था। मंदिर को अपवित्र तथा देवी का अपमान करने के कारण सुखिया के पिता को न्यायालय ने सात दिन के कारावास का दंड देकर दंडित किया|

प्रश्न 6.भक्तों द्वारा सुखिया के पिता के साथ किए गए इस व्यवहार को आप किस तरह देखते हैं?

उत्तर-भक्तों द्वारा सुखिया के पिता का अपमान और मारपीट करना उसकी संकीर्ण मानसिकता और अमानवीय व्यवहार का प्रतीक है। उनका ऐसा कार्य समाज की समरसता और सौहार्द नष्ट करने वाला है। इससे लोगों में तनाव उत्पन्न होता है। ऐसा व्यवहार सदैव निंदनीय होता है।

प्रश्न 7.माता के भक्नों ने सुखिया के पिता के साथ कैसा व्यवहार किया?

उत्तर-माता के भक्त जो माता के गुणगान में लीन थे, उनमें से एक की दृष्टि माता के प्रसाद का फूल लेकर जाते हुए सुखिया के पिता पर पड़ी। उसने आवाज़ दी कि यह अछूत कैसे अंदर आ गया। इसको पकड़ लो। फिर क्या था, माता के अन्य भक्तगण पूजा-वंदना छोड़कर उसके पास आए और कोई बात सुने बिना जमीन पर गिराकर मारने लगे।

प्रश्न 8.पिता अपनी बच्ची को माता के प्रसाद का फूल क्यों न दे सका?

उत्तर-पिता जब मंदिर से देवी के प्रसाद का फूल लेकर बाहर आने वाला था, तभी कुछ सवर्ण भक्तों की दृष्टि उस पर पड़ गई। उन्होंने अछूत कहकर उसे मारा-पीटा और न्यायालय तक ले आए। यहाँ उसे सात दिन का कारावास मिला। इस बीच उसकी बेटी इस दुनिया से जा चुकी थी और वह अपनी बेटी को माँ के प्रसाद का फूल न दे सका|

प्रश्न 9.सुखिया का पिता किस सामाजिक बुराई का शिकार हुआ?

उत्तर-सुखिया का पिता उस वर्ग से संबंधित था, जिसे समाज के कुछ लोग अछूत कहते हैं, इस कारण वह छुआछूत जैसी सामाजिक बुराई का शिकार हो गया था। अछूत होने के कारण उसे मंदिर को अपवित्र करने और देवी का अपमान करने का आरोप लगाकर पीटा गया तथा उसे सात दिन की जेल मिली|

प्रश्न 10.'एक फूल की चाह' कविता की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-प्राचीन समय से ही भारतीय समाज वर्गों में बँटा है। यहाँ समाज के एक वर्ग द्वारा स्वयं को उच्च तथा दूसरे को निम्न और अछूत समझा जाता है। इस वर्ग का देवालयों में प्रवेश आदि वर्जित है, जो सरासर गलत है। सुखिया का पिता भी जाति-पाति का बुराई का शिकार हुआ था। यह कविता हम सभी को समान समझने, ऊँच-नीच, छुआछूत आदि सामाजिक बुराइयों को नष्ट करने की प्रेरणा देती है। अतः यह कविता पूर्णतया प्रासंगिक है|

*- दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर:

प्रश्न 1.आपके विचार से मंदिर की पवित्रता और देवी की गरिमा को कौन ठेस पहुँचा रहा था और कैसे?

उत्तर-मेरे विचार से तथाकथित उच्च जाति के भक्तगण मंदिर की पवित्रता और देवी की गरिमा को ठेस पहुँचा रहे थे, सुखिया का पिता नहीं, क्योंकि वे जातीय आधार पर सुखिया के पिता को अपमानित करते हुए देवी के सामने ही मार-पीट रहे थे। वे जिस देवी की गरिमा नष्ट होने की बात कर रहे थे, वह तो

स्वयं पतित पाविनी हैं तो एक पतित के आने से न तो देवी की गरिमा नष्ट हो रही थी और न मंदिर की पवित्रता। ऐसा सोचना उन तथाकथित उच्च जाति के भक्तों की संकीर्ण सोच और अमानवीयता थी।

प्रश्न 2.'एक फूल की चाह' कविता में देवी के भक्तों की दोहरी मानसिकता उजागर होती हैं। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-'एक फूल की चाह' कविता में देवी के उच्च जाति के भक्तगण जोर-ज़ोर से गला फाड़कर चिल्ला रहे थे, "पतित-तारिणी पाप-हारिणी माता तेरी जय-जय-जय!" वे माता को भक्तों का उद्धार करने वाली, पापों को नष्ट करने वाली, पापियों का नाश करने वाली मानकर जय-जयकार कर रहे थे। उसी बीच एक अछूत भक्त के मंदिर में आ जाने से वे उस पर मंदिर की पवित्रता और देवी की गरिमा नष्ट होने का आरोप लगा रहे थे। जब देवी पापियों का नाश करने वाली हैं तो एक पापी या अछूत उनकी गरिमा कैसे कम कर रहा था। भक्तों की ऐसी सोच से उनकी दोहरी मानसिकता उजागर होती है।|

प्रश्न 3.महामारी से सुखिया पर क्या प्रभाव पड़ा? इससे उसके पिता की दशा कैसी हो गई?

उत्तर-महामारी की चपेट में आने से सुखिया को बुखार हो आया। उसका शरीर तेज़ बुखार से तपने लगा। तेज बुखार के कारण वह बहुत बेचैन हो रही थी। इस बेचैनी में उसका उछलना-कूदना न जाने कहाँ खो गया। वह भयभीत हो गई और देवी के प्रसाद का एक फूल पाने में अपना कल्याण समझने लगी। उसके बोलने की शक्ति कम होती जा रही थी। धीरे-धीरे उसके अंग शक्तिहीन हो गए। उसकी यह दशा देखकर सुखिया का पिता चिंतित हो उठा। उसे कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। सुखिया के पास चिंतातुर बैठे हुए उसे यह भी पता नहीं चल सका कि कब सूर्य उगा, कब दोपहर बीतकर शाम हो गई|

प्रश्न 4.सुखिया को बाहर खेलते जाता देख उसके पिता की क्या दशा होती थी और क्यों?

उत्तर-सुखिया को बाहर खेलते जाता देखकर सुखिया के पिता का हृदय काँप उठता था। उसके मन को एक अनहोनी-सी आशंका भयभीत कर रही थी, क्योंकि उसकी बस्ती के आसपास महामारी फैल रही थी। उसे बार-बार डर सता रहा था कि कहीं उसकी पुत्री सुखिया भी महामारी की चपेट में न आ जाए। वह इस महामारी से अपनी पुत्री को बचाए रखना चाहता था। उसे महामारी का परिणाम पता था, इसलिए अपनी पुत्री की रक्षा के प्रति चिंतित और आशंकित हो रहा था|

*-निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट करते हुए उनका अर्थ-सौंदर्य बताइए-

(क) अविश्रांत बरसा करके भी
आँखें तनिक नहीं रीतीं।

उत्तर-आशय- सुखिया के पिता को मंदिर की पवित्रता नष्ट करने और देवी को अपमानित करने के जुर्म में सात दिन का कारावास मिला। इससे उसे बहुत दुख हुआ। अपनी मरणासन्न पुत्री सुखिया को यादकर वह अपना दुख आँसुओं के माध्यम से प्रकट कर रहा था। सात दिनों तक रोते रहने से उसकी व्यथा कम न हुई।

अर्थ सौंदर्य- बादलों के एक-दो दिन बरसने से ही उनका जल समाप्त हो जाता है और वे अपना अस्तित्व खो बैठते हैं। सुखिया के पिता की आँखों से सात दिन तक आँसू बहते रहे फिर भी आँखें खाली नहीं हुईं । अर्थात् उसके हृदय की वेदना कम न हुई।

(ख) बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर
छाती धधक उठी मेरी।

उत्तर-आशय-जब सुखिया का पिता जेल से छूटा तो वह श्मशान में गया। उसने देखा कि वहाँ उसकी बेटी की जगह राख की ढेरी पड़ी थी। उसकी बेटी की चिता ठंडी हो चुकी थी।
अर्थ-सौंदर्य-इसमें करुणा साकार हो उठी है। चिता का बुझना और उसे देखकर पिता की छाती को धधकना दो मार्मिक दृश्य हैं। ये पाठक को द्रवित करने की क्षमता रखते हैं। चाक्षुष बिंब|

(ग) हाय! वही चुपचाप पड़ी थी।
अटल शांति-सी धारण कर।

उत्तर-(सुखिया का पिता अपनी मरणासन्न पुत्री को देखकर सोच रहा था कि सुखिया, जो दिन भर खेलती-कूदती और यहाँ-वहाँ भटकती रहती थी, बीमारी के कारण शिथिल और लंबी शांति धारण कर लेटी पड़ी है।

अर्थ सौंदर्य- तेज़ बुखार ने सुखिया को एकदम अशक्त बना दिया है। वह बोल भी नहीं पा रही है। सुखिया को उसकी शांति अटल अर्थात् स्थायी लग रही है अब वह शायद ही बोल सके|

(घ) पापी ने मंदिर में घुसकर
किया अनर्थ बड़ा भारी।

उत्तर-आशय-इसमें ढोंगी भक्तों ने सुखिया के पिता पर मंदिर की पवित्रता नष्ट करने का भीषण आरोप लगाया है।
सियारामशरण गुप्त वे कहते हैं-सुखिया का पिता पापी है। यह अछूत है। इसने मंदिर में घुसकर भीषण पाप किया है। इसके अंदर आने से मंदिर की पवित्रता नष्ट हो गई है।

अर्थ-सौंदर्य-तिरस्कार और धिक्कार की भावना प्रकट करने के लिए यह पद्यांश सुंदर बन पड़ा है। 'पापी' और 'बड़ा भारी अनर्थ' शब्द तिरस्कार प्रकट करने में पूर्णतया समर्थ हैं।

*-उत्तर विस्तार से-

प्रश्न 1.'एक फूल की चाह' एक कथात्मक कविता है। इसकी कहानी को संक्षेप में लिखिए।
उत्तर-चारों ओर भीषण महामारी फैली हुई थी। कितने ही लोग इसकी चपेट में आ चुके थे। सब ओर

हाहाकार मचा हुआ था। बच्चों की मृत्यु पर शोक प्रकट करती माताओं का करुण क्रंदने हृदय को दहला देता था।

सुखिया के पिता को भय था कि कहीं उसकी नन्हीं बेटी भी महामारी की चपेट में न आ जाए। वह उसे बहुत रोकता था कि बाहर न जाए। घर में ही टिककर बैठे। परंतु वह बहुत नटखट और चंचल थी। आखिरकार एक दिन उसका भय सच्चाई में बदल गया। वह महामारी के प्रभाव में आ ही गई। उसका नन्हा शरीर ज्वरग्रस्त हो गया। वह बिस्तर पर लेट गई। एक दिन वह पिता से बोली कि मुझे देवी माँ के मंदिर के प्रसाद का एक फूल लाकर दो। पिता सिर झुकाए बैठा रहा। वह जानता था। कि वह अछूत है। उसे मंदिर में घुसने नहीं दिया जाएगा। इसलिए वह सिर नीचा करके बैठी रहा और उसे बचाने के अन्य उपाय सोचता रहा इसी उधेड़बुन में सुबह से दोपहर और शाम हो गई। चारों ओर गहरा अँधेरा छा गया। उसे लगा कि यह महातिमिर उसकी बेटी को निगल जाएगा। सुखिया की आँखें झुलसने लगीं। |

सुखिया के पिता ने बेटी को बचाने के लिए मंदिर में जाने का निश्चय किया। वह मंदिर में पहुँचा। मंदिर पहाड़ी पर था। मंदिर के अंदर उत्सव-सा चल रहा था। भक्त लोग ज़ोर-ज़ोर से 'पतित तारिणी', 'पाप हारिणी' की जय-जयकार कर रहे थे। वह भी भक्तों की भीड़ में पहुँच गया। उसने पुजारी को दीप-फूल दिए। पुजारी ने उसे पूजा के फूल प्रदान किए। फूल को पाकर वह खुशी से फूला न समाया। उसे लगा मानो इससे सुखिया को नया जीवन मिल जाएगा। अतः उत्साह में वह पुजारी से प्रसाद लेना भूल गया।

इस घटना से पुजारी ने उसे पहचान लिया। उसने शोर मचाया। वहाँ उपस्थित भक्तों ने सुखिया के पिता को पकड़ लिया। वे उस पर आरोप लगाने लगे। कहने लगे कि यह धूर्त है। यह साफ सुथरे कपड़े पहनकर हमको धोखा देना चाहता है। इस अछूत ने मंदिर की पवित्रता नष्ट कर दी है। इसे पकड़ो। सुखिया के पिता ने उनसे पूछा-'क्या मेरा कलुष देवी की महिमा से भी अधिक बड़ा है? मैं माता की महिमा के आगे क़हाँ ठहर सकता हूँ।' परंतु भक्तों ने उसकी एक न सुनी। उन्होंने उसे मार-मारकर जमीन पर गिरा दिया। उसके हाथों का प्रसाद भी धरती पर बिखर गया|

वे भक्तगण सुखिया के पिता को न्यायालय में ले गए। न्यायालय ने उसे सात दिनों की सज़ा सुनाई। उस पर आरोप यह था कि उसने मंदिर की पवित्रता नष्ट की है। सुखिया के पिता ने मौन होकर दंड को स्वीकार कर लिया। वे सात दिन उसके लिए सैकड़ों वर्षों के समान भारी थे। उसकी आँखें निरंतर बहती रहीं, फिर भी दुख कम न हो सका।

जब सात दिन बीते। सुखिया का पिता जेल से छूटा। वह मरे हुए मन से घर की ओर चला। उसे पता चला कि सुखिया मर चुकी है। वह श्मशान की ओर भागा। परंतु वहाँ सुखिया की चिता ठंडी पड़ी थी।

उसकी कोमल बच्ची राख की ढेरी बन चुकी थी। वह रो-रोकर पछताने लगा कि वह बच्ची के अंतिम समय में भी उसे गोद में न ले सका।

प्रश्न 3.तत्कालीन समाज में व्याप्त स्पृश्य और अस्पृश्य भावना में आज आए परिवर्तनों पर एक चर्चा आयोजित कीजिए।

उत्तर-पहला छात्र – एक समय था, जबकि हमारे समाज में ऊँच-नीच और छुआछूत का बोलबाला था।
दूसरा छात्र – यह बुराई आज कम हो गई है। परंतु पूरी तरह मिटी नहीं है।
तीसरा छात्र – आज तो छुआछूत को अपराध घोषित कर दिया गया है।
चौथा छात्र – अपराध घोषित होने से कुछ नहीं होता। समाज में समस्या ज्यों की त्यों है। कुछ जातियों को नीच मानकर बड़ी जातियों के लोग उनसे दूर रहते हैं|
पाँचवा छात्र – आरक्षण के कारण यह समस्या और अधिक बढ़ गई है। छठा छात्र-मेरे विचार में आरक्षण के कारण यह समस्या कम होगी|

पाठ-४- मेरा छोटा-सा निजी पुस्तकालय

पाठ सार:

लेखक इस पाठ में अपने बारे में बात कर रहा है। लेखक साल 1989 जुलाई की बात करता हुआ कहता है कि उस समय लेखक को तीनअटैक आए थे और -तीन जबरदस्त हार्ट- वो भी एक के बाद एक। उनमें से एक तो इतना खतरनाक था कि उस समय लेखक की नब्ज बंद, साँस बंद और यहाँ तक कि धड़कन भी बंद पड़ गई थी। उस समय डॉक्टरों ने यह घोषित कर दिया था कि अब लेखक के प्राण नहीं रहे। लेखक कहता है कि उन सभी डॉक्टरों में से एक डॉक्टर बोर्जेस थे जिन्होंने फिर भी हिम्मत नहीं हारी थी। उन्होंने लेखक को नौ सौ वॉल्ट्स के शॉक्स)shocks) दिए। लेखक के प्राण तो लौटे, पर इस प्रयोग में लेखक का साठ प्रतिशत हार्ट सदा के लिए नष्ट हो गया। अब लेखक का केवल चालीस प्रतिशत हार्ट ही बचा था जो काम कर रहा था। लेखक कहता है कि उस चालीस प्रतिशत काम करने वाले हार्ट में भी तीन रुकावटें थी। जिस कारण लेखक का ओपेन हार्ट ऑपरेशन तो करना ही होगा पर सर्जन हिचक रहे हैं।सर्जन को डर था कि अगर ऑपरेशन कर भी दिया तो हो सकता है कि ऑपरेशन के बाद न हार्ट रिवाइव ही न हो। सभी ने तय किया कि हार्ट के बारे में अच्छी जानकारी रखने वाले अन्य विशेषज्ञों की राय ले ली जाए, उनकी राय लेने के बाद ही ऑपरेशन की सोचेंगे। तब तक लेखक को घर जाकर बिना हिलेडुले आराम करने की सलाह दी गई। लेखक ने जिद - की कि उसे बेडरूम में नहीं बल्कि उसके किताबों वाले कमरे में ही रखा जाए। लेखक की जिद जिद मानते हुए लेखक को वहीं लेटा दिया गया। लेखक को लगता था कि लेखक के प्राण किताबों के उस कमरे की हजारों किताबों में बसे हैं जो पिछले चालीसधीरे -पचास साल में धीरे- लेखक के पास जमा होती गई थी। ये इतनी सारी किताबें लेखक के पास कैसे जमा हुईं, उन किताबों को इकठ्ठा करने की शुरुआत कैसे हुई, इन सब की कथा लेखक हमें बाद में सुनाना चाहता है। पहले तो लेखक हमें यह बताना जरूरी समझता है कि लेखक को किताबें पढ़ने और उन्हें सम्भाल कर रखने का शौक कैसे जागा। लेखक बताता है कि यह सब लेखक के बचपन से शुरू हुआ था। लेखक अपने बचपन के बारे में बताता हुआ कहता है कि उसके पिता की अच्छीखासी सरकारी नौकरी थी। जब बर्मा रोड बन रही- थी तब लेखक के पिता ने बहुत सारा धन कमाया था। लेकिन लेखक के जन्म के पहले ही गांधी जी के द्वारा बुलाए जाने पर लेखक

के पिता ने सरकारी नौकरी छोड़ दी थी। सरकारी नौकरी छोड़ देने के कारण वे लोग रूपएपैसे - संबड़े बंधी कष्टों से गुजर रहे थे, इसके बावजूद भी लेखक के घर में पहले की ही तरह हररोज - 'आर्यमित्र सासाहिक' पत्रिकाओं में-पत्रिकाएँ आती रहती थीं। इन पत्र-पत्र, 'वेदोदम', 'सरस्वती', 'गृहिणी-थी और दो बाल पत्रिकाएँ खास तौर पर लेखक के लिए आती थी। जिनका नाम था ' 'बालसखा। लेखक के घर में बहुत सी पुस्तकें भी थ'चमचम' और 'ीं। लेखक की प्रिय पुस्तक थी स्वामी दयानंद की एक जीवनी, जो बहुत ही मनोरंजक शैली में लिखी हुई थी, अनेक चित्रों से सज्जी हुई। लेखक की माँ लेखक को स्कूली पढ़ाई करने पर जोर दिया करती थी। लेखक की माँ लेखक को स्कूली पढ़ाई करने पर जोर इसलिए देती थी क्योंकि लेखक की माँ को यह चिंतित लगी रहतीं थी कि उनका लड़का हमेशा पत्रपत्रिकाओं को पढ़ता रहता है-, कक्षा की किताबें कभी नहीं पढ़ता। कक्षा की किताबें नहीं पढ़ेगा तो कक्षा में पास कैसे होगालेखक ! स्वामी दयानन्द की जीवनी पढ़ा करता था जिस कारण लेखक की माँ को यह भी डर था कि लेखक कहीं खुद साधु बनकर घर से भाग न जाए। लेखक कहता है कि जिस दिन लेखक को स्कूल में भरती किया गया उस दिन शाम को लेखक के पिता लेखक की उँगली पकड़कर लेखक को घुमाने ले गए। लोकनाथ की एक दुकान पर लेखक को ताजा अनार का शरबत मिट्टी के बर्तन में पिलाया और लेखक के सिर पर हाथ रखकर बोले कि लेखक उनसे वायदा करे कि लेखक अपने पाठ्यक्रम की किताबें भी इतने ही ध्यान से पढ़ेगा जितने ध्यान से लेखक पत्रिकाओं को पढ़ता है और लेखक अपनी माँ की चिंता को भी मिटाएगा। लेखक कहता है कि यह उसके पिता का आशीर्वाद था या लेखक की कठिन मेहनत कि तीसरी और चौथी कक्षा में लेखक के अच्छे नंबर आए और पाँचवीं कक्षा में तो लेखक प्रथम आया। लेखक की मेहनत को देखकर लेखक की माँ ने आँसू भरकर लेखक को गले लगा लिया था, परन्तु लेखक के पिता केवल मुसकुराते रहे, कुछ बोले नहीं। क्योंकि लेखक को अंग्रेजी में सबसे ज्यादा नंबर मिले थे, अतः इसलिए लेखक को स्कूल से इनाम में दो अंग्रेजी किताबें मिली थीं। उनमें से एक किताब में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और घने पेड़ों के बीच में भटकते हैं और इस बहाने उन बच्चों को पक्षियों की जातियों, उनकी बोलियों, उनकी आदतों की जानकारी मिलती है। दूसरी किताब थी जिसमें पानी के जहाजों की कथाएँ थीं। उसमें बताया गया था कि 'ट्रस्टी द रग' जहाज कितने प्रकार के होते हैं, कौनसा माल लादकर लाते हैं-कौन-, कहाँ से लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, वाले जहाजों पर रहने नाविकों की जिंदगी कैसी होती है, उन्हें कैसेकैसे द्वीप मिलते हैं-, समुद्र में कहाँ ह्वेल मछली होती है और कहाँ शार्क होती है।लेखक कहता है कि स्कूल से इनाम

में मिली उन अंग्रेजी की दो किताबों ने लेखक के लिए एक नयी दुनिया का द्वार लिए खोल दिया था। लेखक के पास अब उस दुनिया में पक्षियों से भरा आकाश था और रहस्यों से भरा समुद्र था। लेखक कहता है कि लेखक के पिता ने उनकी अलमारी के एक खाने से अपनी चीजें हटाकर जगह बनाई थी और लेखक की वे दोनों किताबें उस खाने में रखकर उन्होंने लेखक से कहा था कि आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का है। अब यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है। लेखक कहता है कि यहीं से लेखक की लाइब्रेरी शुरू हुई थी जो आज बढ़तेबढ़ते एक बहुत - बड़े कमरे में बदल गई थी। लेखक बच्चे से किशोर अवस्था में आया, स्कूल से कॉलेज, कॉलेज से युनिवर्सिटी गया, डॉक्टरेट हासिल की, यूनिवर्सिटी में बच्चों को पढ़ाने का काम किया, पढ़ाना छोड़कर इलाहाबाद से बंबई आया, लेखों को अच्छी तरह से पूरा करने का काम किया। और उसी अनुपात में अर्थात दोदो करके अपनी लाइब्रेरी का विस्तार करता गया। - अपनी लाइब्रेरी को बढ़ाता चला गया। लेखक अपनी बचपन की बातों को बताता हुआ कहता है कि हम लोग लेखक से यह पूछ सकते हैं कि लेखक को किताबें पढ़ने का शौक तो था यह मान लेते हैं पर किताबें इकट्ठी करने का पागलपन क्यों सवार हुआ? इसका कारण भी लेखक अपने बचपन के एक अनुभव को बताता है। लेखक बताता है कि इलाहाबाद भारत के प्रसिद्ध शिक्षाकेंद्रों में एक रहा है। इलाहाबाद में ई-स्ट इंडिया द्वारा स्थापित की गई पब्लिक लाइब्रेरी से लेकर महामना मदनमोहन मालवीय द्वारा स्थापित भारती भवन तक है। इलाहाबाद में विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी तथा अनेक कॉलेजों की लाइब्रेरियाँ तो हैं ही, इसके साथ ही इलाहाबाद के लगभग हर मुहल्ले में एक अलग लाइब्रेरी है। इलाहाबाद में हाईकोर्ट है, अतः वकीलों की अपनी अलग से लाइब्रेरियाँ हैं, अध्यापकों की अपनी अलग से लाइब्रेरियाँ हैं। उन सभी लाइब्रेरियों को देख कर लेखक भी सोचा करता था कि क्या उसकी भी कभी वैसी लाइब्रेरी होगी?, यह सब लेखक सपने में भी नहीं सोच सकता था, पर लेखक के मुहल्ले में एक लाइब्रेरी थी जिस्म नाम था। लेखक की जैसे ही स्कूल से छुटी होती थी कि लेखक 'हरि भवन' में खूब सारे उपन्यास थे। जैसे 'हरि भवन' से-लाइब्रेरी में चला जाता था। मुहल्ले के उस छोटे ही लाइब्रेरी खुलती थी लेखक लाइब्रेरी पहुँच जाता था और जब शुक्ल जी जो उस लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन थे वे लेखक से कहते कि बच्चा, अब उठो, पुस्तकालय बंद करना है, तब लेखक बिना इच्छा के ही वहां से उठता था। लेखक के पिता की मृत्यु के बाद तो लेखक के परिवार पर रुपयेपैसे से संबंधित इतना अधिक संकट बढ़ गया था कि लेखक को फीस जुटान-ा तक मुश्किल हो गया था। अपने शौक की किताबें खरीदना तो लेखक के लिए उस समय संभव ही

नहीं था। एक ट्रस्ट की ओर से बेसहारा छात्रों को पाठ्यपुस्तकें खरीदने के लिए सत्र के आरंभ में कुछ रुपये मिलते थे। लेखक उन से केवल प्रमुख पाठ्यपुस्तकें खरीदता था 'हैंड-सेकंड', बाकी अपने सहपाठियों से लेकर पढ़ता और नोटिस बना लेता था। लेखक कहता है कि रुपये-पैसे की इतनी तंगी होने के बाद भी लेखक ने अपने जीवन की पहली साहित्यिक पुस्तक अपने पैसों से कैसे खरीदी, यह आज तक लेखक को याद है। लेखक अपनी याद को हमें बताता हुआ कहता है कि उस साल लेखक ने अपनी माध्यमिक की परीक्षा को पास किया था। लेखक पुरानी पाठ्यपुस्तकें बेचकर बीहैंड बुकशाॅप पर गया। इस -की पाठ्यपुस्तकें लेने एक सेकंड .ए. बार न जाने कैसे सारी पाठ्यपुस्तकें खरीदकर भी दो रुपये बच गए थे। लेखक ने देखा की लगा था 'देवदास' सामने के सिनेमाघर में। न्यू थिएटर्स वाला। उन दिनों उसकी बहुत चर्चा थी। थी। लेकिन लेखक की माँ को सिनेमा देखना बिलकुल पसंद नहीं था। लेखक की माँ को लगता था कि सिनेमा देखने से ही बच्चे बिगड़ते हैं। लेखक ने माँ को बताया कि किताबें बेचकर दो रुपये लेखक के पास बचे हैं। वे दो रुपये लेकर माँ की सहमति से लेखक फ़िल्म देखने गया। लेखक बताता है कि पहला शो छूटने में अभी देर थी, पास में लेखक की परिचित किताब की दुकान थी। लेखक वहीं उस दुकान के आसपास चक्कर लगाने लगा। अचानक लेखक ने देखा - '-कि काउंटर पर एक पुस्तक रखी हैदेवदास। जिसके लेखक शरत्चंद्र चट्ट'ोपाध्याय हैं। उस किताब का मूल्य केवल एक रुपया था। लेखक ने पुस्तक उठाकर उलटी-पलटी। तो पुस्तक-विक्रेता को पहचानते हुए बोला कि लेखक तो एक विद्यार्थी है। लेखक उसी दुकान पर अपनी पुरानी किताबें बेचता है। लेखक उसका पुराना ग्राहक है। वह दुकानदार लेखक से बोले कि वह लेखक से कोई कमीशन नहीं लेगा। वह केवल दस आने में वह किताब लेखक को दे देगा। यह सुनकर लेखक का मन भी पलट गया। लेखक ने सोचा कि कौन डेढ़ रुपये में पिक्चर देख कर डेढ़ रुपये खराब करेगा? लेखक ने दस आने में जल्दी घर -किताब खरीदी और जल्दी 'देवदास' लौट आया, और जब लेखक ने वह किताब अपनी माँ को दिखाई तो लेखक की माँ के आँखों में आँसू आ गए। लेखक नहीं जानता कि वह आँसू खुशी के थे या दुख के थे। लेखक यहाँ बताता है कि वह लेखक के अपने पैसों से खरीदी लेखक की अपनी निजी लाइब्रेरी की पहली किताब थी। लेखक कहता है कि जब लेखक का ऑपरेशन सफल हो गया था तब मराठी के एक बड़े कवि विंदा करंदीकर लेखक से उस दिन मिलने आये थे। उन्होंने लेखक से कहा था कि भारती, ये सैकड़ों महापुरुष जो पुस्तकरूप में तुम्हारे चारों ओर उपस्थित हैं-, इन्हीं के आशीर्वाद से तुम बचे हो। इन्होंने तुम्हें दोबारा जीवन दिया है। लेखक ने मन-मन सभी को प्रणाम किया-ही-

विंदा को भी, इन महापुरुषों को भी। यहाँ लेखक भी मानता था कि उसके द्वारा इकठ्ठी की गई पुस्तकों में उसकी जान बसती है जैसे तोते में राजा के प्राण बसते थे|

-प्रश्नोत्तर-लघु-*

प्रश्न 1.लेखक का ऑपरेशन करने से सर्जन क्यों हिचक रहे थे?
उत्तर-लेखक को तीन-तीन हार्ट अटैक हुए थे। बिजली के झटकों से प्राण तो लौटे, मगर दिल को साठ प्रतिशत भाग नष्ट हो गया। बाकी बचे चालीस प्रतिशत में भी रुकावटें थीं। सर्जन इसलिए हिचक रहे थे कि चालीस प्रतिशत हृदय ऑपरेशन के बाद हरकत में न आया तो लेखक की जान भी जा सकती थी|
प्रश्न 2.'किताबों वाले कमरे में रहने के पीछे लेखक के मन में क्या भावना थी?
उत्तर-किताबों वाले कमरे में रहने के पीछे लेखक के मन में यह भावना थी कि जिस प्रकार परी कथाओं के अनुसार राजा के प्राण उसके शरीर में नहीं बल्कि तोते में रहते हैं, वैसे ही उसके (लेखक) निकले प्राण अब इन हज़ारों किताबों में बसे हैं, जिन्हें उसने जमा किया है|

प्रश्न 3.लेखक के घर कौन-कौन-सी पत्रिकाएँ आती थीं?
उत्तर-लेखक के घर वेदोदम, सरस्वती, गृहिणी, बालसखा और चमचम आदि पत्रिकाएँ आती थीं।
प्रश्न 4.लेखक को किताबें पढ़ने और सहेजने का शौक कैसे लगा?
उत्तर-लेखक के घर में पहले से ही बहुत-सी पुस्तकें थीं। दयानंद की एक जीवनी, बालसखा और 'चमचम' पुस्तकें पढ़ते-पढ़ते उसे पढ़ने का शौक लगा। पाँचवीं कक्षा में प्रथम आने पर पुरस्कार स्वरूप मिली दो पुस्तकों को पिताजी की प्रेरणा से उसे सहेजने का शौक लग गया।
प्रश्न 5.माँ लेखक की स्कूली पढ़ाई को लेकर क्यों चिंतित रहती थी?
उत्तर-माँ लेखक की स्कूली पढाई को लेकर इसलिए चिंतित रहती थी, क्योंकि लेखक हर समय कहानियों की पुस्तकें ही पढ़ता रहता था। माँ सोचती थी कि लेखक पाठ्यपुस्तकों को भी इसी तरह रुचि लेकर पढेगा या नहीं|
प्रश्न 6.स्कूल से ईनाम में मिली अंग्रेजी की पुस्तकों ने किस प्रकार लेखक के लिए नई दुनिया के द्वार खोल दिए?
उत्तर-पाँचवी कक्षा में फर्स्ट आने पर लेखक को दो पुस्तकें पुरस्कारस्वरूप मिली। उनमें से एक में विभिन्न पक्षियों की जातियों, उनकी बोलियों, उनकी आदतों की जानकारी थी। दूसरी किताब 'टस्टी दे रग' में पानी के जहाजों, नाविकों की जिंदगी, विभिन्न प्रकार के द्वीप, वेल और शार्क के बारे में थी। इस प्रकार इन पुस्तकों ने लेखक के लिए नई दुनिया का द्वार खोल दिया|
प्रश्न 7.'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है'-पिता के इस कथन से लेखक को क्या प्रेरणा मिली?
उत्तर-पिता के इस कथन से लेखक के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। लेखक को पुस्तक सहेजकर रखने तथा पुस्तक संकलन करने की प्रेरणा मिली|

प्रश्न 8.लेखक द्वारा पहली पुस्तक खरीदने की घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
उत्तर-लेखक पुरानी पुस्तकें खरीदकर पढ़ता और उन्हें बेचकर अगली कक्षा की पुरानी पुस्तकें खरीदता। ऐसे ही एक बार उसके पास दो रुपए बच गए। माँ की आज्ञा से वह देवदास फ़िल्म देखने गया। शो छूटने में देर होने के कारण वह पुस्तकों की दुकान पर चला गया। वहाँ देवदास पुस्तक देखी। उसने डेढ़ रुपए में फ़िल्म देखने के बजाए दस आने में पुस्तक खरीदकर बचे पैसे माँ को दे दिए। इस प्रकार लेखक ने पुस्तकालय हेतु पहली पुस्तक खरीदी|
प्रश्न 9.'इन कृतियों के बीच अपने को कितना भरा-भरा महसूस करता हूँ'-को आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर-लेखक के पुस्तकालय में अनेक भाषाओं के अनेक लेखकों, कवियों की पुस्तकें हैं। इनमें उपन्यास, नाटक, कथा । संकलन, जीवनियाँ, संस्मरण, इतिहास, कला, पुसतात्विक, राजनीतिक आदि अनगिनत पुस्तकें हैं। वह देशी-विदेशी लेखकों, चिंतकों की पुस्तकों के बीच स्वयं को अकेला महसूस नहीं करता। वह स्वयं को भरा-भरा महसूस करता है|
*-निम्नलिखित प्रश्नों के दीर्घ उत्तर दीजिए –
प्रश्न 1 - लेखक का ऑपरेशन करने से सर्जन क्यों हिचक रहे थे?
उत्तर - लेखक को तीन-तीन ज़बरदस्त हार्ट-अटैक आए थे और वो भी एक के बाद एक। उनमें से एक तो इतना खतरनाक था कि उस समय लेखक की नब्ज बंद, साँस बंद और यहाँ तक कि धड़कन भी बंद पड़ गई थी। उस समय डॉक्टरों ने यह घोषित कर दिया था कि अब लेखक के प्राण नहीं रहे। उन सभी डॉक्टरों में से एक डॉक्टर बोर्जेस थे जिन्होंने फिर भी हिम्मत नहीं हारी थी। उन्होंने लेखक को नौ सौ वॉल्ट्स के शॉक्स दिए। यह एक बहुत ही भयानक प्रयोग था। उनका प्रयोग सफल रहा। लेखक के प्राण तो लौटे, पर इस प्रयोग में लेखक का साठ प्रतिशत हार्ट सदा के लिए नष्ट हो गया। अब लेखक का केवल चालीस प्रतिशत हार्ट ही बचा था जो काम कर रहा था। उस चालीस प्रतिशत काम करने वाले हार्ट में भी तीन रुकावटें थी। जिस कारण लेखक का ओपेन हार्ट ऑपरेशन तो करना ही होगा पर सर्जन हिचक रहे हैं। क्योंकि लेखक का केवल चालीस प्रतिशत हार्ट ही काम कर रहा था। सर्जन को डर था कि अगर ऑपरेशन कर भी दिया तो हो सकता है कि ऑपरेशन के बाद न हार्ट रिवाइव ही न हो।
प्रश्न 2 - 'किताबों वाले कमरे' में रहने के पीछे लेखक के मन में क्या भावना थी?
उत्तर - लेखक ने बहुत-सी किताबें जमा कर रखी थीं। किताबें बचपन से लेखक की सुख-दुख की साथी थीं। दुख के समय म
प्रश्न 3 - लेखक के घर कौन-कौन-सी पत्रिकाएँ आती थीं?
उत्तर - लेखक के घर में हर-रोज पत्र-पत्रिकाएँ आती रहती थीं। इन पत्र-पत्रिकाओं में 'आर्यमित्र साप्ताहिक', 'वेदोदम', 'सरस्वती', 'गृहिणी' थी और दो बाल पत्रिकाएँ खास तौर पर लेखक के लिए आती थी। जिनका नाम था-'बालसखा' और 'चमचम'।

प्रश्न 4 - लेखक को किताबें पढ़ने और सहेजने का शौक कैसे लगा?

उत्तर - लेखक के पिता नियमित रुप से पत्र-पत्रिकाएँ मँगाते थे। लेखक के लिए खासतौर पर दो बाल पत्रिकाएँ 'बालसखा' और 'चमचम' आती थीं। इनमें राजकुमारों, दानवों, परियों आदि की कहानियाँ और रेखा-चित्र होते थे। इससे लेखक को पत्रिकाएँ पढ़ने का शौक लग गया। जब वह पाँचवीं कक्षा में प्रथम आया, तो उसे इनाम स्वरूप दो अंग्रेज़ी की पुस्तकें प्राप्त हुईं। लेखक के पिता ने उनकी अलमारी के एक खाने से अपनी चीजें हटाकर जगह बनाई थी और लेखक की वे दोनों किताबें उस खाने में रखकर उन्होंने लेखक से कहा था कि आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का है। अब यह तुम्हारी अपनी लाइब्रेरी है। लेखक कहता है कि यहीं से लेखक की लाइब्रेरी शुरू हुई थी जो आज बढ़ते-बढ़ते एक बहुत बड़े कमरे में बदल गई थी। पिताजी ने उन किताबों को सहेजकर रखने की प्रेरणा दी। यहाँ से लेखक का निजी पुस्तकालय बनना आरंभ हुआ।

प्रश्न 5 - माँ लेखक की स्कूली पढ़ाई को लेकर क्यों चिंतित रहती थी?

उत्तर - लेखक की माँ लेखक को स्कूली पढ़ाई करने पर जोर दिया करती थी। लेखक की माँ लेखक को स्कूली पढ़ाई करने पर जोर इसलिए देती थी क्योंकि लेखक की माँ को यह चिंतित लगी रहतीं थी कि उनका लड़का हमेशा पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ता रहता है, कक्षा की किताबें कभी नहीं पढ़ता। कक्षा की किताबें नहीं पढ़ेगा तो कक्षा में पास कैसे होगा! लेखक स्वामी दयानन्द की जीवनी पढ़ा करता था जिस कारण लेखक की माँ को यह भी डर था कि लेखक कहीं खुद साधु बनकर घर से भाग न जाए।

प्रश्न 6 - स्कूल से इनाम में मिली अंग्रेज़ी की दोनों पुस्तकों ने किस प्रकार लेखक के लिए नयी दुनिया के द्वार खोल दिए?

उत्तर - लेखक पाँचवीं कक्षा में प्रथम आया था। उसे स्कूल से इनाम में दो अंग्रेज़ी की किताबें मिली थीं। दोनों ज्ञानवर्धक पुस्तकें थीं। उनमें से एक किताब में दो छोटे बच्चे घोंसलों की खोज में बागों और घने पेड़ों के बीच में भटकते हैं और इस बहाने उन बच्चों को पक्षियों की जातियों, उनकी बोलियों, उनकी आदतों की जानकारी मिलती है। दूसरी किताब थी 'ट्रस्टी द रग' जिसमें पानी के जहाजों की कथाएँ थीं। उसमें बताया गया था कि जहाज कितने प्रकार के होते हैं, कौन-कौन-सा माल लादकर लाते हैं, कहाँ से लाते हैं, कहाँ ले जाते हैं, वाले जहाजों पर रहने नाविकों की जिंदगी कैसी होती है, उन्हें कैसे-कैसे द्वीप मिलते हैं, समुद्र में कहाँ ह्वेल मछली होती है और कहाँ शार्क होती है। इन अंग्रेजी की दो किताबों ने लेखक के लिए एक नयी दुनिया का द्वार लिए खोल दिया था। लेखक के पास अब उस दुनिया में पक्षियों से भरा आकाश था और रहस्यों से भरा समुद्र था।

प्रश्न 7 -'आज से यह खाना तुम्हारी अपनी किताबों का। यह तुम्हारी लाइब्रेरी है' - पिता के इस कथन से लेखक को क्या प्रेरणा मिली?

उत्तर - पिताजी के इस कथन ने लेखक को पुस्तकें जमा करने की प्रेरणा दी तथा किताबों के प्रति उसका लगाव बढ़ाया। अभी तक लेखक मनोरंजन के लिए किताबें पढ़ता था परन्तु पिताजी के इस कथन ने उसके ज्ञान प्राप्ति के मार्ग को बढ़ावा दिया। आगे चलकर उसने अनगिनत पुस्तकें जमा करके अपना स्वयं का पुस्तकालय बना डाला। अब उसके पास ज्ञान का अतुलनीय भंडार था।

प्रश्न 8 - लेखक द्वारा पहली पुस्तक खरीदने की घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर - लेखक आर्थिक तंगी के कारण पुरानी किताबें बेचकर नई किताबें लेकर पड़ता था। इंटरमीडिएट पास करने पर जब उसने पुरानी किताबें बेचकर बी.ए. की सैकंड-हैंड बुकशॉप से किताबें खरीदीं, तो उसके पास दो रुपये बच गए। उन दिनों देवदास फिल्म लगी हुई थी। उसे देखने का लेखक का बहुत मन था। माँ को फिल्में देखना पसंद नहीं था। अतः लेखक वह फिल्म देखने नहीं गया। लेखक इस फिल्म के गाने को अकसर गुनगुनाता रहता था। एक दिन माँ ने लेखक को वह गाना गुनगुनाते सुना। पुत्र की पीड़ा ने उन्हें व्याकुल कर दिया। माँ बेटे की इच्छा भाँप गई और उन्होंने लेखक को 'देवदास' फिल्म देखने की अनुमति दे दी। माँ की अनुमति मिलने पर लेखक फिल्म देखने चल पड़ा। पहला शो छूटने में अभी देर थी, पास में लेखक की परिचित किताब की दुकान थी। लेखक वहीं उस दुकान के आस-पास चक्कर लगाने लगा। अचानक लेखक ने देखा कि काउंटर पर एक पुस्तक रखी है-'देवदास'। जिसके लेखक शरत्चंद्र चट्टोपाध्याय हैं। उस किताब का मूल्य केवल एक रुपया था। लेखक ने पुस्तक उठाकर उलटी-पलटी। तो पुस्तक-विक्रेता को पहचानते हुए बोला कि लेखक तो एक विद्यार्थी है। लेखक उसी दुकान पर अपनी पुरानी किताबें बेचता है। लेखक उसका पुराना ग्राहक है। वह दुकानदार लेखक से बोले कि वह लेखक से कोई कमीशन नहीं लेगा। वह केवल दस आने में वह किताब लेखक को दे देदा। यह सुनकर लेखक का मन भी पलट गया। लेखक ने सोचा कि कौन डेढ़ रुपये में पिक्चर देख कर डेढ़ रुपये खराब करेगा? लेखक ने दस आने में 'देवदास' किताब खरीदी और जल्दी-जल्दी घर लौट आया। वह लेखक के अपने पैसों से खरीदी लेखक की अपनी निजी लाइब्रेरी की पहली किताब थी। इस प्रकार लेखक ने अपनी पहली पुस्तक खरीदी।

प्रश्न 9 - 'इन कृतियों के बीच अपने को कितना भरा-भरा महसूस करता हूँ' - का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर दुख की साथी थीं। कई बार दुख के क्षणों में इन-किताबें लेखक के सुख -किताबों ने लेखक का साथ दिया था। वे लेखक की ऐसी मित्र थीं, जिन्हें देखकर लेखक को हिम्मत मिला करती थीं। किताबों से लेखक का आत्मीय संबंध था। बीमारी के दिनों में जब डॉक्टर ने लेखक को बिना हिलेडुले बिस्तर - पर लेटे रहने की हिदायत दीं, तो लेखक ने इनके मध्य रहने का निर्णय किया। इनके मध्य वह स्वयं को अकेला महसूस नहीं करता था। ऐसा लगता था मानो उसके हज़ारों प्राण इन पुस्तकों में समा गए हैं। ये सब उसे अकेलेपन का अहसास ही नहीं होने देते थे। उसे इनके मध्य असीम संतुष्टि मिलती थी। भराभरा होने से लेखक का तात्पर्य पुस्तकें- के साथ से है, जो उसे अकेला नहीं होने देती थीं। लेखक को ऐसा महसूस होता था जैसे उसके प्राण भी इन पुस्तकों में ऐसे बसे हैं जैसे राजा के प्राण तोते में बसे थे|

व्याकरण-

दो स्वरों के मेल से होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर-संधि कहते हैं। जैसे - विद्या + आलय = विद्यालय।

स्वर-संधि पाँच प्रकार की होती हैं-

1. दीर्घ संधि
2. गुण संधि
3. वृद्धि संधि
4. यण संधि
5. अयादि संधि

दीर्घ संधि-

सूत्र- अकः सवर्णे दीर्घः अर्थात् अक् प्रत्याहार के बाद उसका सवर्ण आये तो दोनो मिलकर दीर्घ बन जाते हैं। ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई और ऊ हो जाते हैं। जैसे -

(क) अ/आ + अ/आ = आ

अ + अ = आ --> धर्म + अर्थ = धर्मार्थ /

अ +अ=आ

अ + आ = आ --> हिम + आलय = हिमालय /

अ+ आ=आ

अ + आ =आ--> पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

क+अ

अ+आ=आ

आ + अ = आ --> विद्या + अर्थी = विद्यार्थी /

आ +अ=आ

आ + आ = आ --> विद्या + आलय = विद्यालय

आ+आ=आ

(ख) इ और ई की संधि

इ + इ = ई --> रवि + इंद्र = रवींद्र ; मुनि + इंद्र = मुनींद्र

इ +इ =ई इ +इ =ई

इ + ई = ई --> गिरि + ईश = गिरीश ; मुनि + ईश = मुनीश

इ+ई=ई इ+ ई =ई

ई + इ = ई- मही + इंद्र = महींद्र ; नारी + इंदु = नारींदु

ई + ई = ई- नदी + ईश = नदीश ; मही + ईश = महीश .

(ग) उ और ऊ की संधि

उ + उ = ऊ- भानु + उदय = भानूदय ; विधु + उदय = विधूदय

उ+ उ=ऊ उ+ उ =ऊ

उ + ऊ = ऊ- लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ; सिधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि

उ+ ऊ =ऊ उ+ ऊ= ऊ

ऊ + उ = ऊ- वधू + उत्सव = वधूत्सव ; वधू + उल्लेख = वधूल्लेख

ऊ +उ=ऊ

ऊ + ऊ = ऊ- भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व ; वधू + ऊर्जा = वधूर्जा

गुण संधिइसमें अ, आ के आगे इ, ई हो तो ए ; उ, ऊ हो तो ओ तथा ऋ हो तो अर् हो जाता है। इसे गुण-संधि कहते हैं। जैसे -

(क) अ + इ = ए ; नर + इंद्र = नरेंद्र

अ +इ = ए

अ + ई = ए ; नर + ईश= नरेश

आ + इ = ए ; महा + इंद्र = महेंद्र

आ + ई = ए महा + ईश = महेश

(ख) अ + उ = ओ ; ज्ञान + उपदेश = ज्ञानोपदेश ;

अ +उ =ओ

आ + उ = ओ महा + उत्सव = महोत्सव

आ +उ =ओ

अ + ऊ = ओ जल + ऊर्मि = जलोर्मि ;

आ + ऊ = ओ महा + ऊर्मि = महोर्मि।

(ग) अ + ऋ = अर् देव + ऋषि = देवर्षि

(घ) अ +ऋ =अर

(घ) आ + ऋ = अर् महा + ऋषि = महर्षि

आ +ऋ =अर

वृद्धि संधि

अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर ऐ तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर औ हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे -

(क) अ + ए = ऐ ; एक + एक = एकैक ;

(ख) अ +ए =

अ + ऐ = ऐ मत + ऐक्य = मतैक्य

अ +ऐ=ऐ

आ + ए = ऐ ; सदा + एव = सदैव

आ + ऐ = ऐ ; महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

(ग) अ + ओ = औ वन + औषधि = वनौषधि ;

(घ) आ + ओ = औ महा + औषधि = महौषधि ;

अ + औ = औ परम + औषध = परमौषध ;

आ + औ = औ महा + औषध = महौषध

यण संधि

(क) इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है।

(ख) उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है।

(ग) 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र्' हो जाता है। इन्हें यण-संधि कहते हैं।

इ + अ = य् + अ ; यदि + अपि = यद्यपि

ई + आ = य् + आ ; इति + आदि = इत्यादि।

ई + अ = य् + अ ; नदी + अर्पण = नद्यर्पण

ई + आ = य् + आ ; देवी + आगमन = देव्यागमन

(घ)

उ + अ = व् + अ ; अनु + अय = अन्वय

उ + आ = व् + आ ; सु + आगत = स्वागत

उ + ए = व् + ए ; अनु + एषण = अन्वेषण

ऋ + अ = र् + आ ; पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

अयादि संधि

ए, ऐ और ओ औ से परे किसी भी स्वर के होने पर क्रमशः अय्, आय्, अव् और आव् हो जाता है। इसे अयादि संधि कहते हैं।

(क) ए + अ = अय् + अ ; ने + अन = नयन

(ख) ऐ + अ = आय् + अ ; गै + अक = गायक

(ग) ओ + अ = अव् + अ ; पो + अन = पवन

(घ) औ + अ = आव् + अ ; पौ + अक = पावक

औ + इ = आव् + इ ; नौ + इक = नाविक

व्यंजन संधि

व्यंजन का व्यंजन से अथवा किसी स्वर से मेल होने पर जो परिवर्तन होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। जैसे-शरत् + चंद्र = शरच्चंद्र। उज्जवल

(क) किसी वर्ग के पहले वर्ण क्, च्, ट्, त्, प् का मेल किसी वर्ग के तीसरे अथवा चौथे वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह या किसी स्वर से हो जाए तो क् को ग् च् को ज्, ट् को ड् और प् को ब् हो जाता है। जैसे -

क् + ग = ग्ग दिक् + गज = दिग्गज। क् + ई = गी वाक + ईश = वागीश

च् + अ = ज् अच् + अंत = अजंत ट् + आ = डा षट् + आनन = षडानन

प + ज + ब्ज अप् + ज = अब्ज

(ख) यदि किसी वर्ग के पहले वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) का मेल न् या म् वर्ण से हो तो उसके स्थान पर उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे -

क् + म = ं वाक + मय = वाङ्मय च् + न = ं अच् + नाश = अंनाश

ट् + म = ण् षट् + मास = षण्मास त् + न = न् उत् + नयन = उन्नयन

प् + म् = म् अप् + मय = अम्मय

ग) त् का मेल ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व या किसी स्वर से हो जाए तो द् हो जाता है। जैसे -

त् + भ = द्भ सत् + भावना = सद्भावना त् + ई = दी जगत् + ईश = जगदीश

त् + भ = द्भ भगवत् + भक्ति = भगवद्भक्ति त् + र = द्र तत् + रूप = तद्रूप

त् + ध = द्ध सत् + धर्म = सद्धर्म

(घ) त् से परे च् या छ् होने पर च, ज् या झ् होने पर ज्, ट् या ठ् होने पर ट्, ड् या ढ् होने पर ड् और ल होने पर ल् हो जाता है। जैसे -

त् + च = च्च उत् + चारण = उच्चारण त् + ज = ज्ज सत् + जन = सज्जन

त् + झ = ज्झ उत् + झटिका = उज्झटिका त् + ट = ट्ट तत् + टीका = तट्टीका

त् + ड = ड्ड उत् + डयन = उड्डयन त् + ल = ल्ल उत् + लास = उल्लास

(ङ) त् का मेल यदि श् से हो तो त् को च् और श् का छ् बन जाता है। जैसे -

त् + श् = च्छ उत् + श्वास = उच्छ्वास त् + श = च्छ उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

त् + श = च्छ सत् + शास्त्र = सच्छास्त्र

(च) त् का मेल यदि ह् से हो तो त् का द् और ह् का ध् हो जाता है। जैसे -

त् + ह = द्ध उत् + हार = उद्धार त् + ह = द्ध उत् + हरण = उद्धरण

त् + ह = द्ध तत् + हित = तद्धित

(छ) स्वर के बाद यदि छ् वर्ण आ जाए तो छ् से पहले च् वर्ण बढ़ा दिया जाता है। जैसे -

अ + छ = अच्छ स्व + छंद = स्वच्छंद आ + छ = आच्छ आ + छादन = आच्छादन

इ + छ = इच्छ संधि + छेद = संधिच्छेद उ + छ = उच्छ अनु + छेद = अनुच्छेद

(ज) यदि म् के बाद क् से म् तक कोई व्यंजन हो तो म् अनुस्वार में बदल जाता है। जैसे -

म् + च् = ं किम् + चित = किंचित म् + क = ं किम् + कर = किंकर
म् + क = ं सम् + कल्प = संकल्प म् + च = ं सम् + चय = संचय
म् + त = ं सम् + तोष = संतोष म् + ब = ं सम् + बंध = संबंध
म् + प = ं सम् + पूर्ण = संपूर्ण
(झ) म् के बाद म का द्वित्व हो जाता है। जैसे -
म् + म = म्म सम् + मति = सम्मति म् + म = म्म सम् + मान = सम्मान
(ञ) म् के बाद य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह् में से कोई व्यंजन होने पर म् का अनुस्वार हो जाता है। जैसे -
म् + य = ं सम् + योग = संयोग म् + र = ं सम् + रक्षण = संरक्षण
म् + व = ं सम् + विधान = संविधान म् + व = ं सम् + वाद = संवाद
म् + श = ं सम् + शय = संशय म् + ल = ं सम् + लग्न = संलग्न
म् + स = ं सम् + सार = संसार
(ट) ऋ, र्, ष् से परे न् का ण् हो जाता है। परन्तु चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, श और स का व्यवधान हो जाने पर न् का ण् नहीं होता। जैसे -
र् + न = ण परि + नाम = परिणाम र् + म = ण प्र + मान = प्रमाण
(ठ) स् से पहले अ, आ से भिन्न कोई स्वर आ जाए तो स् को ष हो जाता है। जैसे -
भ् + स् = ष अभि + सेक = अभिषेक नि + सिद्ध = निषिद्ध वि + सम + विषम

विसर्ग-संधि : ह

विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने पर विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग-संधि कहते हैं। जैसे- मनः + अनुकूल = मनोनुकूल
(क) विसर्ग के पहले यदि 'अ' और बाद में भी 'अ' अथवा वर्गों के तीसरे, चौथे पाँचवें वर्ण, अथवा य, र, ल, व हो तो विसर्ग का ओ हो जाता है। जैसे -
मनः + अनुकूल = मनोनुकूल ; अधः + गति = अधोगति ; मनः + बल = मनोबल
(ख) विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और बाद में कोई स्वर हो, वर्ग के तीसरे, चौथे, पाँचवें वर्ण अथवा य्, र, ल, व, ह में से कोई हो तो विसर्ग का र या र् हो जाता है। जैसे -
निः + आहार = निराहार ;
निः + आशा = निराशा
निः + धन = निर्धन
(ग) विसर्ग से पहले कोई स्वर हो और बाद में च, छ या श हो तो विसर्ग का श हो जाता है। जैसे -
निः + चल = निश्चल ; निः + छल = निश्छल ; दुः + शासन = दुश्शासन
(घ) विसर्ग के बाद यदि त या स हो तो विसर्ग स् बन जाता है। जैसे -
नमः + ते = नमस्ते ;

निः + संतान = निस्संतान ;

दुः + साहस = दुस्साहस

(ङ) विसर्ग से पहले इ, उ और बाद में क, ख, ट, ठ, प, फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग का ष हो जाता है। जैसे -

निः + कलंक = निष्कलंक ;

चतुः + पाद = चतुष्पाद ;

निः + फल = निष्फल

(च) विसर्ग से पहले अ, आ हो और बाद में कोई भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे -

निः + रोग = निरोग ;

निः + रस = नीरस

(छ) विसर्ग के बाद क, ख अथवा प, फ होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे -

अंतः + करण = अंतःकरण

*लेखन-अनुच्छेद-

१-महानगरीय जीवन-एक वरदान या अभिशाप-

संकेत बिंदु

शहरों की ओर बढ़ते कदम

दिवास्वप्न

वरदान रूप

महानगरीय जीवन-एक अभिशाप

आदिकाल में जंगलों में रहने वाले मनुष्य ने ज्यों-ज्यों सभ्यता की दिशा में कदम बढ़ाए, त्यों-त्यों उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती गईं। उसने इन आवश्यकताओं की पूर्ति का केंद्र शहर प्रतीत हुए और उसने शहरों की ओर कदम बढ़ा दिए। महानगरों का अपना विशेष आकर्षण होता है। यही चमक-दमक गाँवों में या छोटे शहरों में रहने वालों को विशेष रूप से आकर्षित करती है। उसे यहाँ सब कुछ आसानी से मिलता प्रतीत होता है। इसी दिवास्वप्न को देखते हुए उसके कदम महानगरों की ओर बढ़े चले आते हैं। इसके अलावा वह रोज़गार और बेहतर जीवन जीने की लालसा में इधर चला आता है।धनी वर्ग के लिए महानगर किसी वरदान से कम नहीं। उनके कारोबार यहाँ फलते-फूलते हैं। कार, ए.सी., अच्छी सड़कें, विलासिता की वस्तुएँ, चौबीसों घंटे साथ निभाने वाली बिजली यहाँ जीवन को स्वर्गिक आनंद देती हैं। इसके विपरीत गरीब आदमी का जीवन यहाँ दयनीय है। रहने को मलिन स्थानों पर झुग्गियाँ, चारों ओर फैली

गंदगी, मिलावटी वस्तुएँ, दूषित हवा, प्रदूषित पानी यहाँ के जीवन को नारकीय बना देते हैं। ऐसा जीवन किसी अभिशाप से कम नहीं|

२--ऋतुराज-वसंत-

- ऋतुराज क्यों
- जड़-चेतन में नवोल्लास
- स्वास्थ्यवर्धक ऋतु
- वसंत ऋतु के त्योहार

हमारे देश भारत में छह ऋतुएँ पाई जाती हैं। इनमें से वसंत को ऋतुराज कहा जाता है। इस काल में न शीत की अधिकता होती है और न ग्रीष्म का तपन। वर्षा ऋतु का कीचड़ और कीट-पतंगों का आधिक्य भी नहीं होता है। माघ महीने की शुक्ल पंचमी से फाल्गुन पूर्णिमा तक ही यह ऋतु बहुत-ही सुहावनी होती है। इस समय पेड़-पौधों में नवांकुर फूट पड़ते हैं। लताओं पर कलियाँ और फूल आ जाते हैं। चारों दिशाओं में फूलों की सुगंध, कोयल कूक तथा वासंती हवा की सरसर से वातावरण उल्लासमय दिखता है। इस ऋतु का असर बच्चों, युवा, प्रौढ़ों और वृद्धों पर दिखता है।उनका तन-मन उल्लास से भर जाता है। यह ऋतु स्वास्थ्यवर्धक मानी गई है। स्वास्थ्य के अनुकूल जलवायु, सुंदर वातावरण तथा प्राणवायु की अधिकता के कारण संचार बढ़ जाता है। इससे मन में एक नया उल्लास एवं उमंग भर उठता है। वसंत पंचमी, होली इस ऋतु के त्योहार हैं। वसंत पंचमी के दिन ज्ञानदायिनी सरस्वती की पूजा-आराधना की जाती है तथा होली के दिन रंगों में सराबोर हम खुशी में डूब जाते हैं।

३--बदलती दुनिया में पीछे छूटते जीवन मूल्य-

संकेत बिंदु-

- संसार परिवर्तनशील
- बदलाव का प्रभाव

खोते नैतिक मूल्य

यह संसार परिवर्तनशील है। यह पल-पल परिवर्तित हो रहा है। इस परिवर्तन के कारण कल तक जो नया था वह आज पुराना हो जाता है। कुछ ही वर्षों के बाद दुनिया का बदला रूप नज़र आने लगता है। इस परिवर्तन से हमारे जीवन मूल्य भी अछूते नहीं हैं। इन जीवन मूल्यों में बदलाव आता जा रहा है। इससे व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल रहा है। यह बदलाव व्यक्ति के व्यवहार में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। विज्ञान की खोजों के कारण हर क्षेत्र में बदलाव आ गया है। पैदल और बैलगाड़ी पर सफ़र करने वाला मनुष्य वातानुकूलित रेलगाड़ियों और तीव्रगामी विमानों

से सफ़र कर रहा है। हरकोर और कबूतरों से संदेश भेजने वाला मनुष्य आज टेलीफ़ोन और तार की दुनिया से भी आगे आकर मोबाइल फ़ोन पर आमने-सामने बातें करने लगा है।दुर्भाग्य से हमारे जीवन मूल्य इस प्रगति में पीछे छूटते गए। कल तक दूसरों के लिए त्याग करने वाला, अपना सर्वस्व दान देनेवाला मनुष्य आज दूसरों का माल छीनकर अपना कर लेना चाहता है। परोपकार, उदारदता, मित्रता, परदुखकातरता, सहानुभूति, दया, क्षमा, साहस जैसे मूल्य जाने कहाँ छूटते जा रहे हैं। हम स्वार्थी और आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं|

४--सच्चा मित्र-

संकेत बिंदु-

- मित्र की आवश्यकता क्यों
- सच्चे मित्र के गुण
- मित्र चयन में सावधानियाँ

सच्चे मित्र कौन?

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसके जीवन में सुख-दुख आते रहते हैं। वह अपनी बातें दूसरों को बताकर दुख कम करना चाहता है। ऐसे में उसे एक ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत पड़ती है तो उसका सच्चा हमराज़ बन सके, उसके सुख-दुख में साथ दे। इन्हें ही मित्र कहा जाता है। एक सच्चा मित्र औषधि के समान होता है जो व्यक्ति की हर दुख-तकलीफ को हर लेता है। वह आपत्ति के समय व्यक्ति को अकेला नहीं छोड़ता है। वह अपने मित्र के कुमार्ग पर बढ़ते कदमों को रोककर सन्मार्ग की ओर अग्रसर करता है। वह अपने मित्र की कटु बातों को मन पर नहीं लेता है तथा मित्र की भलाई के विषय में ही सदैव सोचता है। मित्र का चयन करते समय सावधान रहना चाहिए|चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाले, विपत्ति के समय न टिकने वाले मित्रों से सावधान रहना चाहिए। ऐसे लोग संकटकाल में अपने मित्र को उसी प्रकार छोड़ देते हैं; जैसे-जाल पड़ने पर पानी मछलियों का साथ छोड़ देता है। आज कपटी मित्रों की भी कमी नहीं। अतः इनसे सदैव सावधान रहने की ज़रूरत है। विपत्ति के समय साथ देने वाले, नि:स्वार्थ मदद करने वाले, की हुई मदद का गान न करने वाले हमारे सच्चे मित्र होते हैं|

५--देश हमारा सबसे प्यारा-

संकेत बिंदु-

- भारत का नामकरण
- प्राकृतिक सौंदर्य
- अनेकता में एकता
- प्राचीन परंपरा

वर्तमान में भारत

स्वर्ग के समय जिस धरा पर मैं रहता हूँ, दुनिया उसे भारत के नाम से जानती-पहचानती है। प्राचीन काल में यहाँ आर्यों (सभ्य) का निवास था, इस कारण इसे आर्यावर्त कहा जाता था। प्राचीन साहित्य में इसे जंबूद्वीप के नाम से भी जाना जाता था। कहा जाता है कि प्रतापी राजा दुष्यंत और शकुंतला के प्रतापी पुत्र भरत के नाम पर इसका नाम भारत पड़ा। भारत का प्राकृतिक सौंदर्य अप्रितम है। यहाँ छह ऋतुएँ बारी-बारी से आकर अपना सौंदर्य बिखरा जाती हैं। इसके उत्तर में मुकुट रूप में हिमालय है। दक्षिण में सागर चरण पखारता है। गंगा-यमुना जैसी पावन नदियाँ इसके सीने पर धवल हार की भांति प्रवाहित होती हैं। यहाँ के हरे-भरे वन इस सौंदर्य को और भी बढ़ा देते हैं। यहाँ विभिन्न भाषा-भाषी, जाति-धर्म के लोग रहते हैं| उनकी वेषभूषा, रहन-सहन, खान-पान और रीति-रिवाजों में पर्याप्त अंतर है फिर भी हम सभी भारतीय हैं और मिल-जुलकर रहते हैं। यहाँ की परंपरा अत्यंत प्राचीन, महान और समृद्धशाली है। भारतीय संस्कृति की गणना प्राचीनतम संस्कृतियों में की जाती है। वर्तमान में भारत को स्वार्थपरता, आतंकवाद, गरीबी, निरक्षरता आदि का सामना करना पड़ रहा है तथा मानवीय मूल्य कहीं खो गए-से लगते हैं। नेताओं की स्वार्थलोलुपता ने रही-सही कसर पूरी कर दी है, फिर भी हमें निराश होने की जरूरत नहीं है। भारत एक-न-एक दिन अपना खोया गौरव अवश्य प्राप्त करेगा||

*-पत्र-लेखन-

१-अपने मित्र को अपने भाई की शादी में आमंत्रित करने के लिए एक पत्र लिखें।

अ ब स अपार्टमेंट,
लोधी रोड,
नई दिल्ली|
29 सितंबर,
प्रिय दीपिका,
यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करती हूँ वहां भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.
मेरे भाई की शादी इसी साल दिसंबर में हो रही है। क्या आपको पिछले साल मेरे जन्मदिन की पार्टी में शिरकत करने आए उनकी दोस्त याद है? यह वही लड़की है। वे तब से एक-दूसरे को जानते हैं। अब दोनों ने माता-पिता की सहमति से शादी के बंधन में बंधने का फैसला किया है और इस अवसर पर दोनों परिवार खुश हैं। आप सादर आमंत्रित हैं।
कार्यक्रम 10 दिसंबर से शुरू होगी और 15 दिसंबर तक चलेगी। सतःल वही 'महराजा फोर्ट' है जहां हमने आपके चचेरे भाई की शादी में शिरकत की थी। मैं आपसे एक सप्ताह पहले पहुंचने

का अनुरोध करती हूं| ताकि हम एक साथ योजना बना सकें और खरीदारी कर सकें। मैं जानती हूं कि आप भी उतनी ही उत्साहित होंगी जितना कि मैं हूं। मेरी मां ने पहले ही आपके परिवार से संपर्क किया है और उन्हें समारोह की तारीख, समय और स्थान के बारे में सूचित किया है। आप सभी से निवेदन है कि सुंदर क्षण में उपस्थित रहें। लेकिन यह मेरे सबसे अच्छे दोस्त के लिए मेरा व्यक्तिगत निमंत्रण है। अपने व्यस्त कार्यक्रम से समय निकालें क्योंकि किसी भी बहाने अनुमति नहीं है।

तुम्हारे जवाब का इंतज़ार कर रही हु। आपसे मिलने की उम्मीद है।

तुम्हारा सहेली

य र ल

2-अपने मित्र को लगभग 150 शब्दों में अपने बोर्डिंग स्कूल के अनुभव का वर्णन करते हुए एक पत्र लिखें|

अ ब स अपार्टमेंट

लोधी रोड

नई दिल्ली

29 सितंबर, 20

प्रिय मित्र

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करता हूँ वहां भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.

जैसा कि आप जानते हैं कि मुझे एक बोर्डिंग स्कूल में प्रवेश मिला है। मैं अपने शुरुआती दिनों के अनुभव आपके साथ साझा करना चाहता था। पहले मुझे काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा था क्योंकि मैं बचपन से अपने परिवार से कभी दूर नहीं हुआ हूं। लेकिन हम अपने आप को एक छोटी सी दुनिया में कैद नहीं कर सकते हैं जो हमारे आराम के स्तर से मेल खाता है। मैं उस समय आपकी कीमती सलाह के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं जब मुझे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। आपने कहा था कि हमें परिसर में आए बिना निष्कर्ष पर नहीं पहुंचना चाहिए। आपके शब्द वास्तव में उत्साहजनक थे|उस समय यह एक साहसिक निर्णय लगता था लेकिन अब मैं धीरे-धीरे और खुशी से नए वातावरण के प्रति सजग हो रहा हूं। समय बीतने के साथ मुझे महसूस हुआ कि यहाँ का स्टाफ इतना समझदार और सहयोगी है। मुझे उनके साथ समायोजित होने में आसानी हुई। यहां पढ़ाने का तरीका बहुत प्रभावशाली है और मेरे पिछले स्कूल से बिल्कुल अलग है। सह-पाठयक्रम गतिविधियों पर अधिक ध्यान विभिन्न ब्लॉकों से दोस्त बनाने में बहुत मदद करता है। मुझे लगने लगा है कि मैं अब इस संस्था का हिस्सा हूं। मेरे नए स्कूल के बारे में साझा करने के लिए बहुत कुछ है जब हम मिलेंगे।

बेसब्री से इंतजार है जल्द ही आपको देखने का|

तुम्हारा दोस्त
अभिनव

3-अपने मित्र को एक पत्र लिखें जो सिर्फ एक दुर्घटना के साथ मिला, जो उसे लगभग 150 शब्दों में एक सांत्वना भरे स्वर में उसकी त्वरित वसूली के बारे में सूचित करता है।

अ ब स अपार्टमेंट
लोधी रोड
नई दिल्ली
29 सितंबर, 20

प्रिय माधव,

यहाँ सब कुशल मंगल हैं , आशा करता हूँ वहां भी सब प्रसन्नता पूर्वक होंगे.

मैं कल कॉफ़ी हाउस में शिव से मिला था और उन्होंने मुझे बताया था कि पिछले सप्ताह आप एक गंभीर दुर्घटना से ग्रसित हुए। खबर सुनकर मैं वास्तव में चौंक गया था और आपकी भलाई के बारे में चिंतित था। शिव ने मुझसे कहा कि तुम्हारे बाएं हाथ में भी मामूली फ्रैक्चर आया है। सड़क दुर्घटनाएं वास्तव में अब एक चिंता का कारण बन रही हैं।

सरकार द्वारा 'मोटर वाहन अधिनियम' जैसी कठोर नीतियों के बाद भी, उन्हें पूरी तरह से रोकना मुश्किल है। आपको अभी से सावधान रहना चाहिए। हमारी सुरक्षा हमारी जिम्मेदारी है। एक छोटी सी गलती से भारी भूल हो सकती है। मैं आपको वाहन चलाते समय चौकस और अनुशासित रहने की सलाह देता हूं। मैं सप्ताहांत में आपसे मिलने की योजना बना रहा हूं। मुझे उम्मीद है और आप जल्द ठीक हो जाएं|

ख्याल रखना।

तुम्हारा दोस्त
य र ल

==========

व्याकरण-

शब्द का वर्ण-विच्छेद :

किसी शब्द या ध्वनि के समूह के वर्गों को अलग-अलग लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। आइए, वर्ण-विच्छेद के कुछ उदाहरण देखते हैं –

सड़क = स् + अ + ड् + अ + क् + अ

भक्त = भ् + अ + क् + त् + अ

महात्मा = म् + अ + ह् + आ + त् + म् + आ

कविता = क् + अ + व् + इ + त् + आ

प्रयोग = प + र् + अ + य् + ओ + ग् + अ

अद्भुत = अ + द् + भ् + उ + त् + अ

कलम = क् + अ + ल् + अ + म् + अ

पाठशाला = प् + आ + ठ् + अ + श् + आ + ल् + आ

आराधना = आ + र् + आ + ध् + अ + न् + आ

प्राकृतिक = प् + र् + आ + क् + ऋ + त + इ + क् + अ

सर्वमान्य = स् + अ + र् + व् + अ + म् + आ + न् + य् + अ

अर्जुन = अ + र् + ज् + उ + न् + अ

परिश्रम = प् + अ + र + इ + श् + र् + अ + म् + अ

क्षत्रिय = क् + ष् + अ + त् + र् + इ + य् + अ

परिक्रमा = प् + अ + र् + इ + क् + र् + अ + म् + आ

क्षमा = क् + ष् + अ + म् + आ

विज्ञान = व् + इ + ज् + ञ् + आ + न् + अ
गुरुद्वारा = ग् + उ + र् + उ + द् + व् + आ + र् + आ
आइए इन्हें भी जानें –

वर्ण-विच्छेद करते समय निम्नलिखित बातों को जानना आवश्यक है –

(i) 'रि' और 'ऋ' के रूप –
परिचय = प् + अ + र् + इ + च् + अ + य् + अ
रिषभ = र् + इ + ष् + अ + भ् + अ ।
पृथक = प् + ऋ + थ् + अ + क् + अ
कृपा = क् + ऋ + प् + आ

(ii) 'र' और ' ' तथा ' ' की मात्राएँ –
रुस्तम = र् + उ + स् + त् + अ + म् + अ
रुपया = र् + उ + प् + अ + य् + आ
रूपा = र् + ऊ + प् + आ
रूठना = र् + ऊ + ठ् + अ + न् + आ

(iii) 'ह' के विभिन्न संयुक्त –
रूपह्रस्व = ह् + र + अ + स् + व् + अ
हृदय = ह् + ऋ + द् + अ + य् + अ
प्रह्लाद = प् + र् + अ + ह् + ल् + आ + द् + अ
चिह्न = च् + इ + ह् + न् + अ

(iv) 'द' के संयुक्त –
रूपद्वार = द् + व् + आ + र् + अ
द्रव्य = द् + र् + अ + व् + य् + अ
उद्देश्य = उ + द् + द् + ए + श् + य् + अ
विरुद्ध = व् + इ + र् + उ + द् + ध् + अ

(v)
'इ' की मात्रा—शब्दों में 'इ' की मात्रा 'ि' लिखी पहले जाती है और बोली बाद में, इसलिए
समय 'इ' की मात्रा को बाद में लगाया जाता है; जैसे–

(vi)

अनुस्वार में लगे बिंदु को (ं) जानना—

अंगूर = अं + ग् + ऊ + र् + अ

गंगा = ग् + अ + ङ् + ग् + आ

कंबल = क् + अं(अ + म्) + ब् + अ + ल् + अ

पम्प = प् + अ + म् + प् + अ

चंद्र = च् + अं(अ + न्) + द् + र् + अ

ठंडक = ठ् + अं + ड् + अ + क् + अ

चंदन = च् + अं(अ + न्) + द् + अ + न् + अ

चंचु = च् + अं(अ + ञ्) + च् + उ

ठंडा = ठ् + अं(अ + ण्) + ड् + आ

वर्ण-विच्छेद के उदाहरण –

अंग = अं + ग् + अ

अंधा = अं+ ध् + आ

अंग्रेज़ = अं+ ग् + र् + ए + ज् + अ

अंगार = अँ + ग् + आ + र

अचला _ = अ + च् + अ + ल् + आ

अधुना = अ + ध् + उ + न् + आ

अक्षर = अ + क् + ष् + अ + र् + अ

अवश्य = अ + व् + अ + श् + य् + अ

अग्नि = अ + ग् + न् + इ

अमृत = अ + म् + ऋ + त् + अ

अप्रतिभ = अ + प् + र् + अ + त् + इ + भ् + अ

अभ्यागत = अ + भ् + य् + आ + ग् + अ + त् + अ

आश्रम = आ + श् + र् + अ + म् + अ

इज़्ज़त = इ + ज् + ज् + अ + त् + अ

इस्तेमाल = इ + स् + त् + ए + म् + आ + ल् + अ

उक्ति = उ + क् + त् + इ

उच्चारण = उ + च् + च् + आ + र् + अ + ण् + अ

ऋचा = ऋ+ च् + आ

एकाग्र = ए + क् + आ + ग् + र् + अ

एकाक्षर = ए + क् + आ + क् + ष् + अ + र् + अ

औषधि = औ + ष् + अ + ध् + इ

कंगारू = क् + अं+ ग् + आ + र् + ऊ

कन्हाई = क् + अ + न् + ह् + आ + ई

कुशाग्र = क् + उ + श् + आ + ग् + र् + अ

अव्वल = अ + व् + व् + अ + ल् + अ

आकार = आ + क् + आ + र् + अ

आख्यान = आ + ख् + य् + आ + न् + अ

आक्रांत = आ + क् + र् + आ + न् + त् + अ

आजीवन = आ + ज् + ई + व् + अ + न् + अ

आज्ञा = आ + ज् + ञ् + आ

आधार = आ + ध् + आ + र् + अ

आपूर्ति = आ + प् + ऊ + र् + त् + इ

आरूढ़ = आ + र् + ऊ + द + अ

गृहस्थ = ग् + ऋ + ह् + अ + स् + थ् + अ

ग्राहक = ग् + र् + आ + ह् + अ + क् + अ

ग्राह्य = ग् + र् + आ + ह् + य् + अ

घृणित = घ् + ऋ + ण् + इ + त् + अ

घंटी = घ् + अं+ ट् + ई

चकोर = च् + अ + क् + ओ + र् + अ

चक्कर = च् + अ + क् + क् + अ + र् + अ

चक्र = च् + अ + क् + र् + अ

चतुर्थ = च् + अ + त् + उ + र् + थ् + अ

चाँदनी = च् + आँ + द् + अ + न् + ई ।

चक्षु = च् + अ + क् + ष् + उ

चित्रित = च् + इ + त् + र् + इ + त् + अ

चिह्नित = च् + इ + ह् + न् + इ + त् + अ

ज़ख्मी = ज् + अ + ख् + म् + ई

जीवन = ज् + ई + व् + अ + न् + अ

जुर्माना = ज् + उ + र् + म् + आ + न् + आ

जागृति = ज् + आ + ग् + ऋ + त् + इ

जिज्ञासा = ज् + इ + ज् + ञ् + आ + स् + आ

जिह्वा = ज् + इ + ह् + व् + आ

जुझारू = ज् + उ + झ् + आ + र् + ऊ

ज्ञापित _ = ज् + ञ् + आ + प् + इ + त् + अ

ज्योत्स्ना = ज् + य् + ओ + त् + स् + न् + आ

झंडा = झ् + अं+ ड् + आ

टिप्पणी = ट् + इ + प् + प् + अ + ण + ई

ठाकुर = ठ् + आ + क् + उ + र् + आ

ढूँढना = द् + ऊ + * + द + अ + न् + अ

तांत्रिक = त् + आ + अं+ त् + र् + इ + क् + अ

त्रुटि = त् + र् + उ + ट् + इ

त्वरित = त् + व् + अ + र् + इ + त् + अ

तालाब = त् + आ + ल् + आ + ब् + अ

कौतुक = क् + औ + त् + उ + क् + अ

क्रय = क् + र् + अ + य् + अ

कृत्रिम = क् + ऋ + त् + र् + इ + म् + अ

क्रोध = क् + र् + ओ + ध् + अ

क्ले श = क् + ल् + ए + श् + अ

खट्टा = ख् + अ + ट् + ट् + आ

ख्याति = ख + य् + आ + त् + इ

गाँठ = ग् + आँ + ठ् + अ

गद्य = ग् + अ + द् + य् + अ

त्रिभुज = त् + र + इ + भ् + उ + ज् + अ

तृष्णा = त् + ऋ + ष् + ण् + आ

दफ़्तर = द् + अ + फ़् + त् + अ + र् + अ

देवत्व = द् + ए + व् + अ + त् + व् + अ

दंभी = द् + अं+ भ् + ई

दृष्टि = द् + ऋ + ष् + ट् + इ

द्रवित = द् + र् + अ + व् + इ + त् + अ

दैनंदिनी = द् + ऐ + न् + अं + द् + इ + न् + ई

द्युति = द् + य् + उ + त् + इ

द्वापर = द् + व् + आ + प् + अ + र् + अ

द्वितीया = द् + व + इ + त् + ई + य् + आ

दविज = द् + व् + इ + ज् + अ

द्वैत = द् + व् + ऐ + त् + अ

ध्वजा = ध् + व् + अ + ज् + आ

ध्वस्त = ध् + व् + अ + स् + त् + अ

नंदिनी = न् + अं + द् + इ + न् + ई

नक्काशी = न् + अ + क् + क् + आ + श् + ई

निरुपम = न् + इ + र् + उ + प् + अ + म् + अ

नास्तिक = न् + आ + स् + त् + इ + क् + अ

निस्तब्ध = न् + इ + स् + त् + अ + ब् + ध् + अ

नृत्य = न् + ऋ + त् + य् + अ

पुष्प = प् + उ + ष् + प् + अ

प्रधान = प् + र् + अ + ध् + आ + न् + अ

प्राच्य = प् + र् + आ + च् + य् + अ

पृथ्वी = प् + ऋ + थ् + व् + ई

फलदार = फ् + अ + ल् + अ + द् + आ + र् + अ

फिक्र = फ् + इ + क् + र् + अ

बाँस = ब् + आँ + स् + अ

बृहद = ब् + ऋ + ह् + अ + द् + अ

ब्रह्मा = ब् + र् + अ + ह् + म् + आ

लक्षण = ल् + अ + क् + ष् + अ + ण् + अ

वत्सल = व् + अ + त् + स् + अ + ल् + अ

विरुद्ध = व् + इ + र् + उ + द् + ध् + अ

व्योम = व् + य् + ओ + म् + अ

व्रत = व् + र् + अ + त् + अ

शक्ति = श् + अ + क् + त् + इ

सृष्टि = स् + ऋ + ष् + ट् + इ

हार्दिक = ह् + आ + र् + द् + इ + क् + अ

लेखन-चित्र वर्णन के उदाहरण

दिए गए चित्रों को देखकर 20-30 शब्दों में उनका वर्णन कीजिए।

1.

प्रस्तुत चित्र मंदिर का है। मंदिर एक ऐसा स्थान है, जहाँ व्यक्ति श्रद्धाभाव से जाता है और अपने इष्टदेव की पूजा करके मानसिक शांति पाता है। अतः प्रातः काल सभी लोग मंदिर जाते हैं। इस चित्र में एक महिला हाथ में पूजा की थाली लिए मंदिर जा रही है। हिंदू धर्म में वृक्ष की पूजा का विधान है इसलिए प्रत्येक मंदिर के बाहर पीपल या केला का पेड़ एवं तुलसी का पौधा होता है। इस चित्र में भी एक वृक्ष है जिसके सामने खड़े होकर एक महिला पूजा कर रही है। एक बच्चा पूजा के लिए जाती हुई महिला से भिक्षा माँग रहा है उसके एक हाथ में पात्र है और उसने दूसरा हाथ भिक्षा के लिए फैला रखा है। सीढ़ियों के पास एक बच्चा बैठा है, जो कि अपाहिज है। वह मंदिर में आने वाले भक्तों से दया की भीख चाहता है।

२-

यह चित्र रेलवे प्लेटफार्म का है। जिसमें एक गाड़ी खड़ी है। गाड़ी के अंदर यात्री बैठे हुए हैं। दो कुली सिर पर सामान रखकर हाथ में अटैची पकड़े चल रहे हैं। जिस व्यक्ति का सामान है वह

उनके साथ चल रहा है। एक बच्चा हाथ में अखबार लिए बेचने के लिए घूम रहा है। दूसरी तरफ एक बच्चा अपनी बूट-पॉलिश की दुकान लगाए बैठा है। एक व्यक्ति हाथ में समाचार-पत्र लिए पढ़ रहा है। बच्चा उनके जूते की पॉलिश कर रहा है। किनारे पर एक कूड़ेदान रखा हुआ है, लेकिन कूड़ा चारों ओर फैला हुआ है। सरकार की ओर से साफ़-सफ़ाई की ओर ध्यान दिया जाता है। मगर जब तक प्रत्येक नागरिक अपना कर्तव्य नही निभाएँगे तब तक सभी प्रयत्न विफल होते रहेंगे|

3.

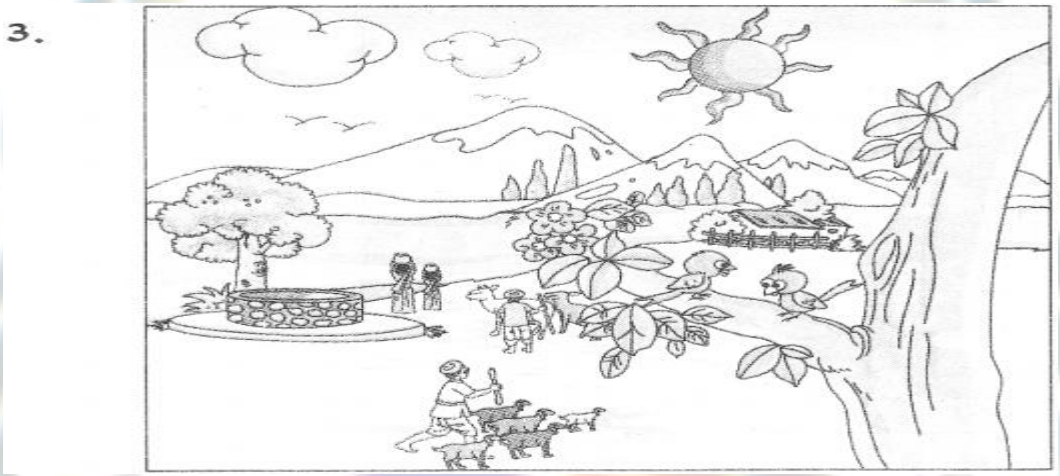

यह दृश्य प्रात:काल सूर्योदय का है। आसमान का रंग सूर्य की लालिमा लिए हुए एक अनूठी छटा बिखेर रहा है।कुछ पक्षी उड़ रहे हैं कुछ पेड़ की डाल पर बैठे उड़ने की तैयारी में हैं। दो घर दिखाई दे रहे हैं जिनके बाहर सुन्दर फूलों के पौधे हैं। सामने कुआँ है उसके पास एक बड़ा वृक्ष है। दो स्त्रियाँ सिर पर घड़े रखकर कुएँ से पानी लेने जा रही हैं। चरवाहा भेड़ों को चराने के लिए ले जा रहा है। पूरा दृश्य मनमोहक छटा बिखेर रहा है। प्रात:काल का समय सबसे उत्तम समय माना जाता है। इस समय भ्रमण करने से मनुष्य का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

==========

व्याकरण-संस्कृत के उपसर्ग-इन उपसर्गों को तत्सम उपसर्ग भी कहा जाता है। ये प्रायः तत्सम शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं।संस्कृत के उपसर्ग और उनसे बने शब्द |

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
अति	बहुत अधिक, परे, अधिक	अतिवृष्टि, अतिशय, अतिक्रमण, अत्याचार, अतिरिक्त, अत्यंत
अधि	ऊँचा श्रेष्ठ	अधिवक्ता, अधिनायक, अधिगम, अधिकार, अधिकृत, अधिपति
अनु	पीछे, बाद में, गौण	अनुगमन, अनुसार, अनुशासन, अनुरोध, अनुभव, अनुकूल
अप	अनुचित, बुरा, दूर	अपमान, अपयश, अपशब्द, अपहरण, अपकीर्ति, अपव्यय
अभि	सामने, पास, चारों ओर	अभिमान, अभिशाप, अभिनय, अभिनव, अभिप्राय, अभियोग

विशेषता बताने के लिए

अव	बुरा, हीन, उप	अवगुण, अवनति, अवसान, अवमूल्यन, अवशेष, अवरोध
आ	तक, समेत, पर्यंत	आजन्म, आजीवन, आमरण, आगमन, आवास, आरक्षण
उत्	श्रेष्ठ, ऊपर	उन्नति, उन्नयन, उत्थान, उद्घाटन, उन्नायक, उच्छवास
उप	निकट, समान, गौण	उपवन, उपसर्ग, उपवास, उपहास, उपग्रह, उपयोग
दुस्	कठिन, बुरा	दुस्साहस दुष्कर्म, दुष्कर, दुस्साध्य
दुर्	कठिन, बुरा	दुर्बल, दुर्दिन, दुर्जन, दुर्योग, दुर्विजय, दुर्भाग्य दुर्लभ
निस्	निर्, रहित, नहीं	निष्काम, निश्चल, निष्पाप, निर्मम, निरपराध, निराहार
नि	समूह, आदेश, समीपता	नियम, निबंध, निकेतन, निषेध
परा	उलटे, पीछे, विपरीत	पराजय, पराधीन, पराश्रयी, पराक्रम, पराकाष्ठा, पराभव
परि	चारों ओर, पूर्णतः, क्रम	परिधि, परिक्रम, पर्यावरण, परिवार, परिश्रम, परित्याग
प्र	आगे, सामने, उत्तम, सम्मान	प्रमाण, प्रचार, प्रहार, प्रहर, प्रसाद, प्रकांड, प्रवेश
प्रति	हर एक, विरुद्ध	प्रतिशत, प्रत्येक, प्रतिकूल, प्रतिध्वनि, प्रत्याशा
वि	विशेष, विभिन्नता, अभाव	वियोग, विराम, विमल, विकार, विहार, विज्ञान, विशिष्ट, विशुद्ध
सम्	संयोग, अच्छा, सहित	संन्यास, संपर्क, संबंध, संचय, संयोग संचार, संग्राम सम्मुख
सु	अच्छी तरह, सुंदर	सुफल, सुकर्म, सुदिन, सुपुत्र, स्वागत, सुपात्र, सुशिक्षित, सुलभ

(ख)हिंदी के उपसर्ग-इन उपसर्गों का दूसरा नाम तद्भव उपसर्ग भी है। इनका प्रयोग हिंदी के शब्दों के साथ किया जाता है।

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
अ	अभाव, रहित, हीन	अथाह, अछूत, अजान, असार, अनाथ
अन	निषेध, अभाव	अनजान, अनपढ़, अनभल, अनचाहा, अनमना, अनहोनी, अनगढ़
अध	आधा	अधपका, अधजला, अधमरा, अधखिला, अधकपारी, अधकचरा
औ	हीन, बुरा	औघट, औजार, औगुन
उन	एक कम	उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर
क/कु	बुरा	कपूत, कुलटा, कुकर्म, कुफल
चौ	चार	चौराहा, चौमासा, चौपाटी, चौतरफा, चौमुखी
दु	रहित, दो	दुबला, दुगुना, दुविधा, दुकूल
नि	रहित	निकम्मा, निडर, निहत्था, निदान
बिन	बिना	बिनबात, बिनखाए, बिनव्याहा, बिनकहे, बिनचाहे, बिन बुलाए

(घ)आगत या विदेशी उपसर्ग-इन उपसर्गों का प्रयोग विदेशी भाषा के शब्दों में होता है। उर्दू, अरबी, फारसी और अंग्रेज़ी भाषा के उपसर्ग इसी कोटि में आते है

बा	सहित	बाइज़्ज़त, बाकायदा, बाअदब, बाअसर
बद	बुरा, खराब	बदकिस्मत, बदहवास, बदसूरत, बदचलन, बदनाम, बदनीयत
बर	ऊपर, बाहर	बरखास्त, बरदाश्त
बे	बिना	बेईमान, बेरहम, बेशरम बेवफा, बेराह, बेकायदा।
बिला	बिना	बिलावजह, बिलाशर्त।
ला	बिना, रहित	लावारिस, लाइलाज लापरवाह, लापता, लाजवाब
सर	श्रेष्ठ, मुख्य	सरकार, सरपंच, सरताज़, सरहद
हम	साथ	हमराज, हमराह, हमदम, हमदर्द
हर	प्रत्येक	हरदिन, हररोज़, हरवक्त, हरहाल

उपसर्ग	अर्थ	उपसर्गयुक्त शब्द
अल	निश्चित, इसलिए	अलगस्त, अलगरज, अलस्सुबह, अलगस्त
ऐन	ठीक	ऐनवक्त, ऐनमौके
कम	थोड़ा	कमतर, कमउम्र, कमअक्ल, कमज़ोर कमसिन
खुश	प्रसन्न, अच्छा	खुशमिज़ाज़, खुशकिस्मत, खुशबू, खुशदिल, खुशखबरी
गैर	पराया, नहीं	गैरहाज़िर, गैरज़रूरी, गैरवाजिब, गैरकानूनी, गैरमतलब
दर	में	दरअसल, दरमियान, दरहकीकत
ना	बिना नहीं	नादान, नासमझ, नालायक, नाकारा, नासमझ
नीम	आधा	नीमहकीम, नीमहोश, नीमपावाल
ब	साथ, सहित	बखूबी, बदौलत, बदस्तूर, बनाम

*-संवाद लेखन-

श्नः 1.आजकल महँगाई बढ़ती ही जा रही है। इससे परेशान दो महिलाओं की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

उत्तर:

रचना – अलका बहन नमस्ते! कैसी हो?

अलका – नमस्ते रचना, मैं ठीक हूँ पर महँगाई ने दुखी कर दिया है।

रचना – ठीक कहती हो बहन, अब तो हर वस्तु के दाम आसमान छूने लगे हैं।

अलका – मेरे घर में तो नौकरी की बँधी-बधाई तनख्वाह आती है। इससे सारा बजट खराब हो गया है।

रचना – नौकरी क्या रोज़गार क्या, सभी परेशान हैं।

अलका – हद हो गई है कोई भी दाल एक सौ बीस रुपये किलो से नीचे नहीं है।

रचना – अब तो दाल-रोटी भी खाने को नहीं मिलने वाली।

अलका – बहन कल अस्सी रुपये किलो तोरी और साठ रुपये किलो टमाटर खरीदकर लाई। आटा, चीनी, दाल, चावल मसाले दूध सभी में आग लगी है।

रचना – फल ही कौन से सस्ते हैं। सौ रुपये प्रति किलो से कम कोई भी फल नहीं हैं। अब तो लगता है कि डाक टर जब लिखेगा तभी फल खाने को मिलेगा।

अलका – सरकार भी कुछ नहीं करती महँगाई कम करने के लिए। वैसे जनता की भलाई के दावे करती है। जमाखोरों पर कार्यवाही भी नहीं करती है।

रचना – नेतागण व्यापारियों से चुनाव में मोटा चंदा लेते हैं फिर सरकार बनाने पर कार्यवाही कैसे करे।

अलका – गरीबों को तो ऐसे ही पिसना होगा। इनके बारे में कोई नहीं सोचता|

प्रश्नः 2.

यमुना की दुर्दशा पर दो मित्रों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

उत्तरः

अजय – नमस्कार भाई साहब, शायद आप दिल्ली के बाहर से आए हैं।

प्रताप – नमस्कार भाई, ठीक पहचाना तुमने, मैं हरियाणा से आया हूँ।

अजय – मैं भी अलवर से आया हूँ। तुम यहाँ कैसे?

प्रताप – दिल्ली आया था। सोचा सवेरे-सवेरे यमुना में स्नान कर लेता हूँ पर

अजय – कल मेरा यहाँ साक्षात्कार था और आज कुछ और काम था। मैं भी यहाँ स्नान के लिए आया था।

प्रताप – इतनी गंदी नदी में कैसे नहाया जाए?

अजय – मैंने भी यमुना का बड़ा नाम सुना था, पर यहाँ ती उसका उल्टा निकला।

प्रताप – इसका पानी तो काला पड़ गया है।

अजय – फैक्ट्रियों और घरों का पानी लाने वाले कई नाले इसमें मिल जाते हैं न।

प्रताप – देखो, वे सज्जन फूल मालाएँ और राख फेंककर पुण्य कमा रहे हैं।

अजय – इनके जैसे लोग ही तो नदियों को गंदा करते हैं।

प्रताप – सरकार को नदियों की सफ़ाई पर ध्यान देना चाहिए।

अजय – केवल सरकार को दोष देने से कुछ नहीं होने वाला। हमें खुद सुधरना होगा।

प्रताप – ठीक कहते हो। यदि सभी ऐसा सोचें तब न।

अजय – यहाँ की शीतल हवा से मन प्रसन्न हो गया। अब चलते हैं।

प्रताप – ठीक कहते हो। अब हमें चलना चाहिए।

प्रश्नः 3.

बढ़ती गरमी और कम होती वर्षा के बारे में दो मित्रों की बातचीत का संवाद-लेखन कीजिए।

उत्तर:

रवि – रमन, कैसे हो?

रमन – मत पूछ यार गरमी से बुरा हाल है।

रवि – गरमी इसलिए बढ़ गई है क्योंकि वर्षा भी तो नहीं हो रही है।

रमन – 24 जुलाई भी बीतने को है पर बादलों का नामोनिशान भी नहीं है।

रवि – मेरे दादा जी कह रहे थे, पहले इतनी गरमी नहीं पड़ती थी और तब वर्षा भी खूब हुआ करती थी।

रमन – ठीक कह रहे थे तुम्हारे दादा जी। तब धरती पर आबादी कम थी परंतु पेड़-पौधों की कमी न थी।

रवि – वर्षा और पेड़ पौधों का क्या संबंध?

रमन – पेड़-पौधे वर्षा लाने में बहुत सहायक हैं। जहाँ अधिक वन हैं वहाँ वर्षा भी खूब होती है। इससे गरमी अपने आप कम हो जाती है।

रवि – फिर तो हमें भी अपने आसपास खूब सारे पेड़-पौधे लगाने चाहिए।

रमन – और हरे-भरे पेड़ों को कटने से बचाना भी चाहिए।

रवि – इस गरमी के बाद वर्षा ऋतु में खूब पौधे लगाएँगे।

रमन – यही ठीक रहेगा।

==========

व्याकरण-

जब हम अपने मनभावों को किसी के सामने प्रकट करते हैं तो अपनी बातों को समझाने या किसी कथन पर बल देने के लिए बीचबीच में रुकते हैं। लिखित भाषा में भाव स्पष्ट करने या कथन पर बल देने के लिए कुछ निश्चित चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन चिह्नों को विरामचिह्न कहते हैं-।

विराम-चिह्न के प्रकार –
हिंदी भाषा में मुख्य रूप से निम्नांकित विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है –

विराम-चिह्न का नाम और चिह्न

1. पूर्ण विराम (Full stop) ।
2. अर्ध विराम (Semi-colon) ;
3. अल्प विराम (Comma) ,
4. प्रश्नवाचक चिह्न (Question mark) ?
5. विस्मयवाचक चिह्न (Exclamation mark) !
6. योजक या विभाजक (Hyphen) –
7. निर्देशक (Dash) –
8. उद्धरण चिह्न (Inverted comma) ‘ ’,“ ”
9. विवरण चिह्न (Sign of following) :-
10. कोष्ठक (Bracket) ( )
11. हंस पद (Sign of leftout) ,
12. लाघव चिह्न (Sign of abbreviation) ०

1. पूर्ण विराम (।) – इस चिह्न का प्रयोग प्रश्नवाचक और विस्मयवाचक वाक्यों को छोड़कर प्रायः सभी प्रकार के वाक्यों के अंत में किया जाता है; जैसे –

- अध्यापक छात्रों को पढ़ाते हैं।
- माली पौधों की देखभाल करता है।

- हमें अपने आस-पास हरा-भरा बनाए रखना चाहिए।
- कभी-कभी अप्रत्यक्ष प्रश्न के अंत में भी पूर्ण विराम लगाया जाता है; जैसे –
- अच्छा अब बताओ कि तुम्हें क्या चाहिए।
- कुछ देर पहले यहाँ कौन आया था।

2. अर्ध विराम (;)- जब पूर्ण विराम से कम समय के लिए रुकते हैं, तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे –

- वह घर आया; थोड़ी देर बाद चला गया।
- जो यहाँ फूल-माला चढ़ाते हैं; उनकी मनोकामना पूर्ण होती है।
- तुम्हारी इन बातों पर कोई विश्वास नहीं करेगा; क्योंकि ये झूठी हैं।
- यहाँ कई भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं; जैसे-अंग्रेज़ी, तमिल, मलयालम आदि।

3. अल्प विराम (,) – वाक्य के मध्य में अर्ध विराम से भी कम समय तक रुकने के लिए किया जाता है; जैसे –

- राम, मोहन, श्याम और उदय यहाँ आएँगे।
- हाँ, मैं यह चित्र बना लूँगा।
- नहीं, तुम अभी अंदर नहीं आ सकते हो।
- सरकार बदल जाने से, मैं समझता हूँ, कुछ बदलाव होगा।
- मि. शर्मा एम.ए., बी.एड., पी.एच.डी. हैं।
- सुभाषचंद्र बोस ने कहा, “तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।”
- चलो, चलो जल्दी चलो, ट्रेन आ गई है।
- हमारा देश 15 अगस्त, 1947 को आजाद हुआ।
- इस व्यक्ति के लिए लाभ और हानि, यश और अपयश बराबर हैं।
- सवेरा हुआ, पक्षी बोलने लगे।
- वह काम, जिसे आपने बताया था, मैंने कर दिया था।
- यहाँ आओ, सुमन, मेरी बात तो सुनो।
- पूज्या माता जी, भवदीया आदि।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?) – इस चिह्न का प्रयोग प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में, अनिश्चय या संदेह प्रकट करने के लिए संदेह स्थल पर कोष्ठक में किया जाता है; जैसे –

- सुमन, तुम कब आई?

- क्या कहा, वह परिश्रमी है?
- वह क्या पढ़ता है, क्या लिखता है, क्या याद करता है, यह मुझसे क्यों पूछ रहे हो?

5. विस्मयवाचक चिह्न (!) – इस चिह्न का प्रयोग विस्मय (आश्चर्य), हर्ष, घृणा, शोक आदि मनोभावों को व्यक्त करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे –

- अरे! बरसात होने लगी।
- अहा! कितने सुंदर फूल खिले हैं।
- हाय! चोरों ने सब कुछ लूट लिया।
- छि:! यहाँ तो कूड़ा फैला है।

शाबाश! तुम्हें 'ए' ग्रेड मिला है।

6. योजक या विभाजक चिह्न (-) – इस चिह्न का प्रयोग सामासिक शब्दों, सा, सी, से आदि से पूर्व, शब्द युग्मों, द्वित्व शब्दों, पूर्णांक से कम संख्या भाग बताने के लिए किया जाता है –

- सुख-दुख, आगमन प्रस्थान, जीवन-मरण, यश-अपयश।
- हिरनी-सी आँखें, मोती-से अक्षर, फूल-सा बच्चा।
- उठते-बैठते, सोते जागते, हँसते-हँसते, पढ़ते-पढ़ते।
- एक-तिहाई, तीन-दसवाँ, एक-चौथाई।

7. निर्देशक चिह्न (-) यह चिह्न योजक-चिह्न से बड़ा होता है। इसका प्रयोग किसी के कहे वाक्यों से पूर्व, कहा, लिखा
आदि क्रियाओं के बाद, संवादों में, किसी शब्द या वाक्यांश की व्याख्या से पूर्व किया जाता है; जैसे –

- गांधी जी ने कहा-"हम स्वराज लाएँगे।"
- अध्यापक ने लिखा-पाठ दोहराकर आना।
- राणा प्रताप-देखो, भामाशाह आ रहे हैं।
- भामाशाह-राजन, आप मेरी यह दौलत स्वीकार कर लें।
- इस दुकान पर आपको कई चीजें मिल जाएंगी-चीनी, चावल, दाल, तेल आदि।

8. उद्धरण चिह्न ('.....', "...") – इस चिह्न का प्रयोग किसी कथन को मूल रूप में लिखने, पुस्तक या कथन का मूल अंश उद्धृत करने व्यक्ति, पुस्तक, उपनाम आदि के लिए किया है।

इसके दो भेद हैं

(क) इकहरा उद्धारण चिह्न (.....')

- इस कविता के रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं।
- 'रामचरित मानस' तुलसीदास की विश्व प्रसिद्ध कृति है।

(ख) दोहरा उद्धारण चिह्न (".....")

- स्व. इंदिरा गांधी ने नारा दिया-'गरीबी हटाओ।"
- ग्रेसम का कहना था-"पुराना नोट नए नोट के चलन में बाधक होता है।"

9. विवरण चिह्न (:-) – कुछ सूचना, निर्देश आदि देने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे –

- कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते है:-अकर्मक और सकर्मक।
- राजा दशरथ के चार पुत्र थे: – राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।

10. कोष्ठक ( ) -कोष्ठक में उस अंश को दिया जाता है जो वाक्य का मुख्य अंश होने के बाद भी अलग से दिया जा सकता है; जैसे –

- राष्ट्रीय त्योहार (स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस) राष्ट्रीय एकता बढ़ाने में सहायक हैं।
- यहाँ लेखन सामग्री (रजिस्टर, पेन, इंक आदि) मिल जाएगी।
- (क) और (ख) दोनों विकल्प सही हैं।

11. हंसपद चिह्न (∗)-लिखते समय कुछ अंश छूट जाने पर इस चिह्न को लगाकर उसके ऊपर लिख दिया जाता है; जैसे –

- यहाँ बस, ट्रक और कार की मरम्मत की जाती है।
- अप्रैल, मई और जून गरमी के महीने हैं।
- आप विश्वास कीजिए, यह काम मैंने ही किया है।

12. लाघव चिह्न (०)- इसे संक्षेप सूचक चिह्न भी कहते हैं। किसी बड़े अंश का लघुरूप लिखने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे –

- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय = (स.ही०वा० अज्ञेय)
- गोस्वामी तुलसीदास = (गो० तुलसीदास), डॉक्टर = (डॉ०)
- कृपया पन्ना उलटिए= (कृ०प०उ०)
- अभ्यास प्रश्न

प्रश्नः

निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग करते हुए दोबारा लिखिए

1. लोगों ने मिस्टर शर्मा को एम पी चुन लिया
2. सुभाष चंद्र बोस ने कहा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा
3. क्या प्रधानाचार्य आज नहीं आए हैं
4. तुलसी ने रामचरित मानस में लिखा है परहित सरसि धर्म नहिं भाई
5. तुम कौन हो कहाँ रहते हो क्या करते हो यह सब मैं क्यों पूछू
6. बूढे ने डॉक्टर चड्ढा से कहा इसे एक नज़र देख लीजिए शायद बच जाए
7. कामायनी कवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कृति है
8. उस कवि सम्मेलन में रामधारी सिंह दिनकर, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे कई महान कवि आए थे
9. वसंत ऋतु के त्योहार होली वसंत पंचमी वैसाखी हमें उल्लास से भर जाते हैं
10. हाय फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी
11. क्या कहा तुम अनुत्तीर्ण हो गए
12. रोहन 125 राजौरी गार्डन दिल्ली में रहता है
13. यह पत्र 25 जुलाई 2014 को लिखा गया है
14. बचो बचो सामने से साँड आ रहा है
15. सुमन तुमने कितना स्वादिष्ट खाना बनाया है

उत्तरः

1. लोगों ने मि. शर्मा को एम.पी. चुन लिया है।
2. सुभाष चंद्र बोस ने कहा, “तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।”
3. “क्या आज प्रधानाचार्य नहीं आए हैं?”
4. तुलसी ने ‘रामचरित मानस’ में लिखा है-‘परहित सरसि धर्म नहिं भाई’।
5. तुम कौन हो, कहाँ रहते हो, क्या करते हो, यह सब मैं क्यों पूछू ?
6. बूढे ने डॉ. चड्ढा से कहा, “इसे एक नज़र देख लीजिए, शायद बच जाए।”
7. ‘कामायनी’ कवि जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कृति है।

8. उस कवि सम्मेलन में रामधारी सिंह 'दिनकर', सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे कई महान कवि आए थे।
9. वसंत ऋतु के त्योहार (होली, वसंत पंचमी, बैसाखी) हमें उल्लास से भर जाते हैं।
10. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।
11. क्या कहा, तुम अनुत्तीर्ण हो गए!
12. रोहन 125, राजौरी गार्डन, दिल्ली में रहता है।
13. यह पत्र 25 जुलाई, 2014 को लिखा गया है।
14. बचो बचो! सामने से साँड आ रहा है।
15. सुमन, तुमने कितना स्वादिष्ट खाना बनाया है।

पाठ्यपुस्तक के पाठों पर आधारित विराम-चिह्न संबंधी कुछ वाक्य

प्रश्नः

निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न का प्रयोग करते हुए दुबारा लिखिए

1. हिंदी कविता की सुंदर पंक्ति है जिसके कारण धूलि भरे हीरे कहलाए
2. नीचे को धूरि समान वेद वाक्य नहीं है
3. धूल धूलि धूली धूरि आदि व्यंजनाएँ अलग अलग हैं
4. एक आदमी ने घृणा से कहा क्या ज़माना है जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है
5. दूसरे साहब कह रहे थे जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है
6. कल जिसका बेटा चल बसा आज वह बाज़ार में सौदा बेचने चली है हाय रे पत्थर-दिल
7. उन्होंने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखते हुए कहा तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए
8. हमारे नेता कर्नल खुल्लर के शब्दों में यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा कार्य का एक ज़बरदस्त साहसिक कार्य था
9. कर्नल खुल्लर मेरी ओर मुड़कर कहने लगे क्या तुम भयभीत थीं
10. नहीं मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया
11. तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री
12. साउथ कोल पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर जगह के नाम से प्रसिद्ध है
13. कर्नल खुल्लर ने बधाई देते हुए कहा मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा
14. तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझे कहा मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ
15. चलो चलते हैं मैंने कहा ।

16. यह जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है कुछ और क्यों नहीं
17. रामन ने बी ए और एम ए दोनों ही परीक्षाओं में काफी ऊँचे अंक हासिल किए
18. शोध कार्यों के दौरान उनके अध्ययन के दायरे में जहाँ वायलिन, चैलो जैसे विदेशी वाद्य यंत्र आए वहीं वीणा, तानपुरा और मृदंगम पर भी उन्होंने काम किया
19. हम आकाश का वर्णन करते हैं पृथ्वी का वर्णन करते हैं जलाशयों का वर्णन करते हैं पर कीचड़ का वर्णन कभी किसी ने किया है
20. प्रत्येक आदमी का कर्तव्य यह है कि वह भली-भाँति समझ ले कि महात्मा जी के धर्म का स्वरूप क्या है
21. कभी-कभी अपना परिचय उनके पीर बावर्ची भिश्ती खर रूप में देने में वे गौरव का अनुभव किया करते थे
22. गांधी जी कहते थे-महादेव के लिखे नोट के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था न

उत्तरः

1. हिंदी-कविता की सुंदर पंक्ति है, 'जिसके कारण धूलि भरे हीरे कहलाए'।
2. 'नीचे को धूरि समान' वेद वाक्य नहीं है।
3. धूल, धूलि, धूली, धूरि आदि व्यंजनाएँ अलग-अलग हैं।
4. एक आदमी ने घृणा से कहा, "क्या ज़माना है। जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है।
5. दूसरे साहब कह रहे थे, "जैसी नीयत होती है अल्ला भी वैसी ही बरकत देता है।
6. कल जिसका बेटा चल बसा, आज वह बाज़ार में सौदा बेचने चली है, हाय रे पत्थर-दिल।
7. उन्होंने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखते हुए कहा, "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।
8. हमारे नेता कर्नल खुल्लर के शब्दों में, "यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा-कार्य का एक ज़बरदस्त साहसिक कार्य था।"
9. कर्नल खुल्लर मेरी ओर मुड़कर कहने लगे, "क्या तुम भयभीत थीं?"
10. "नहीं, मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया।"
11. "तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली, बचेंद्री?"
12. साउथ कोल 'पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर जगह' के नाम से प्रसिद्ध है।
13. कर्नल खुल्लर ने बधाई देते हुए कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देता हूँ।"
14. तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझे कहा, "मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।"
15. "चलो, चलते हैं।" मैंने कहा।

16. यह जिज्ञासा उनसे सवाल कर बैठी-'आखिर समुद्र का रंग नीला ही क्यों होता है, कुछ और क्यों नहीं?'
17. रामन ने बी.ए. और एम.ए.-दोनों ही परीक्षाओं में काफ़ी ऊँचे अंक हासिल किए।
18. शोध कार्यों के दौरान उनके अध्ययन के दायरे में जहाँ वायलिन, चैलो जैसे विदेशी वाद्य आए, वहीं वीणा, तानपुरा – और मृदंगम पर भी उन्होंने काम किया।
19. हम आकाश का वर्णन करते हैं, पृथ्वी का वर्णन करते हैं, जलाशयों का वर्णन करते हैं पर कीचड़ का वर्णन कभी किसी ने किया है?
20. प्रत्येक आदमी का कर्तव्य यह है कि वह भली-भाँति समझ ले कि महात्मा जी के 'धर्म' का स्वरूप क्या है?
21. कभी-कभी अपना परिचय उनके 'पीर-बावर्ची-भिश्ती-खर' रूप में देने में वे गौरव का अनुभव किया करते थे
22. गांधी जी कहते थे-"महादेव के लिखे 'नोट' के साथ थोड़ा मिलान कर लेना था न।"

*-लेखन-संकेतों के आधार पर कहानियाँ:-

१-संकेत

एक किसान के लड़के लड़ते- किसान मरने के निकट- सबको बुलाया- लकड़ियों को तोड़ने को दिया- किसी से न टूटा- एक-एक कर लकड़ियों तोड़ी- शिक्षा। उपर्युक्त संकेतों को पढ़ने और थोड़ी कल्पना से काम लेने पर पूरी कहानी इस प्रकार बन जायेगी-

एकता

एक था किसान। उसके चार लड़के थे। पर, उन लड़कों में मेल नहीं था। वे आपस में बराबर लड़ते-झगड़ते रहते थे। एक दिन किसान बहुतबीमार पड़ा। जब वह मृत्यु के निकट पहुँच गया, तब उसने अपने चारों लड़कों को बुलाया और मिलजुलकर रहने की शिक्षा दी। किन्तु लड़कों पर उसकी बात का - कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब किसान ने लकड़ियों का गट्ठर माँगाया और लड़कों को तोड़ने को कहा। किसी से वह गट्ठर न टूटा। फिर, लकड़ियाँ गट्ठर से अलग की गयीं। किसान ने अपने सभी लड़कों को बारीअलग तोड़ने को कहा। सबने आसानी से ऐसा किया -बारी से बुलाया और लकड़ियों को अलग-एक कर टूटती गयीं। अब लड़कों की आँखें खुलीं। तभी उन्होंने समझा कि आपस -और लकड़ियाँ एक जुलकर रहने में कितना बल है-में मिल|

२-संकेत -(बारिश का आभाव, एक भेड़िया, चरागाह में भेड़ों का झुंड, सारा पानी भी पी जाना, भेड़ें वहाँ से भाग गई(

भेड़िए की योजना

एक बार पूरे देश में सूखा पड़ गया। बारिश के अभाव में सभी नदीनाले सूख गए। कहीं पर भी अन्न - का एक दाना नहीं उपजा। बहुत से जानवर भूख औरप्यास से मर गए। पास ही के जंगल में एक भेड़िया रहता था। उस दिन वह अत्यधिक भूखा था। भोजन न मिलने की वजह से वह बहुत दुबला हो गया था। एक दिन उसने जंगल के पास स्थित चरागाह में भेड़ों का झुंड देखा। चरवाहा उस समय वहाँ पर नहीं था।वह अपनी भेड़ों के लिए पीने के पानी की बाल्टियाँ भी छोड़कर गया था। भेड़ों को देखकर भेड़िया खुश हो गया और सोचने लगा, 'मैं इन सब भेड़ों को मारकर खा जाऊँगा और सारा पानी भी पी जाऊँगा।फिर वह उनसे बोला, "दोस्तो, मैं अत्यधिक बीमार हूँ और चलनेफिरने में असमर्थ हूँ। क्या - तुम में से कोई मुझे पीने केलिए थोड़ा पानी दे सकता है। "उसे देखकर भेड़ें सतर्क हो गई। तब उनमें से एक भेड़ बोली,"क्या तुम हमें बेवकूफ समझते हो? हम तुम्हारे पास तुम्हारा भोजन बनने के लिए हरगिज नहीं आएँगे। "इतना कहकर भेड़ें वहाँ से भाग गई। इस प्रकार भेड़ों की सतर्कता के कारण भेड़िए की योजना असफल हो गई और बेचारा भेड़िया बस हाथ मलता ही रह गया।

शिक्षा बुद्धि सबसे बड़ा धन है -|

3.

संकेत -

(आलसी लड़का, पैसों से भरा एक थैला, बिना प्रयास के ही इतने सारे पैसे, व्यर्थ खर्च, कार्य करने की कोई आवश्यकता ही नहीं, कद्र और उपयोगिता)

मेहनत की कमाई

सोनू एक आलसी लड़का था। वह अपना समय यूँ ही आवारागदी करने में व्यतीत करता था। इस कारण वह हमेशा कार्य करने से जी चुराता था। एक दिन उसे पैसों से भरा एक थैला मिला।

वह अपने भाग्य पर बहुत खुश हुआ। वह यह सोच-सोचकर खुश हो रहा था कि उसे मिल गए। सोनू ने कुछ पैसों से मिठाई खरीदी, कुछ पैसों से कपड़े व अन्य सामान खरीदा।

इस प्रकार उसने पैसों को व्यर्थ खर्च करना प्रारंभ कर दिया। तब उसकी माँ बोली, "बेटा, पैसा यूँ बर्बाद न करो। इस पैसे का उपयोग किसी व्यवसाय को शुरू करने में करो।" सोनू बोला, "माँ मेरे पास बहुत पैसा है।

इसलिए मुझे कार्य करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है।" धीरे-धीरे सोनू ने सारा पैसा खर्च कर दिया अब उसके पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। इस तरह वह एक बार फिर अपनी उसी स्थिति में आ गया। सोनू को एहसास हुआ कि यदि उसने वह धन परिश्रम से कमाया हुआ

होता तो उसने अवश्य उसकी कद्र और उपयोगिता समझी होती।
शिक्षा - धन की उपयोगिता तभी समझ आती है जब वह मेहनत से कमाया हुआ हो।

4.
संकेत - (आश्रम, नटखट शिष्य, दीवार फाँदना, उसके गुरुजी यह बात जानते थे, दीवार पर सीढ़ी लगी दिखाई दी, नीचे उतरने में मदद, गुरुजी के प्रेमपूर्ण वचन, गलती के लिए क्षमा)
सबक
एक समय की बात है। एक आश्रम में रवि नाम का एक शिष्य रहता था। वद बहुत अधिक नटखट था। वह प्रत्येक रात आश्रम की दीवार फाँदकर बाहर जाता था परन्तु उसके बाहर जाने की बात कोई नहीं जानता था।
सुबह होने से पहले लौट आया। वह सोचता था कि उसके आश्रम से घूमने की बात कोई नहीं जानता लेकिन उसके गुरुजी यह बात जानते थे। वे रवि को रंगे हाथ पकड़ना चाहते थे। एक रात हमेशा की तरह रवि सीढ़ी पर चढ़ा और दीवार फॉदकर बाहर कूद गया।
उसके जाते ही गुरुजी जाग गए। तब उन्हें दीवार पर सीढ़ी लगी दिखाई दी। कुछ घंटे बाद रवि लौट आया और अंधेरे में दीवार पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। उस वक्त उसके गुरुजी सीढ़ी के पास ही खड़े थे। उन्होंने रवि की नीचे उतरने में मदद की और बोले, "बेटा, रात में जब तुम बाहर जाते हो तो तुम्हें अपने साथ एक गर्म साल अवश्य रखनी चाहिए।
गुरुजी के प्रेमपूर्ण वचनों का रवि पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने अपनी गलती के लिए क्षमा माँगी। साथ ही उसने गुरु को ऐसी गलती दोबारा न करने का वचन भी दिया।
शिक्षा - प्रेमपूर्ण वचनों का सबक जिंदगी भर याद रहता है।

5.
संकेत - (पालतु चिड़िय, ताजा पानी और दाना, चालाक बिल्ली डॉक्टर का वेश धारण कर वहाँ पहुँची, स्वास्थ्य परीक्षण, बिल्ली की चाल को तुरंत समझ गईं, दुश्मन बिल्ली, मायूस होकर बिल्ली वहाँ से चली गई)
चालाक चिड़िया
एक व्यक्ति ने अपने पालतु चिड़ियों के लिए एक बड़ा-सा पिंजरा बनाया उस पिंजरे के अंदर चिड़िया आराम से रह सकती थीं। वह व्यक्ति प्रतिदिन उन चिड़ियों को ताजा पानी और दाना देता।
एक दिन उस व्यक्ति की अनुपस्थिति में एक चालाक बिल्ली डॉक्टर का वेश धारण कर वहाँ

पहुँची और बोली, "मेरे प्यारे दोस्तो पिंजरे का दरवाजा खोलो। मैं एक डॉक्टर हूँ और तुम सब के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए यहाँ आई हूँ।"
समझदार चिड़ियाएँ बिल्ली की चाल को तुरंत समझ गईं। वे उससे बोली, "तुम हमारी दुश्मन बिल्ली हो। हम तुम्हारे लिए दरवाजा हरगिज नहीं खोलेंगे। यहाँ से चली जाओ।" तब बिल्ली बोली,"नहीं, नहीं। मैं तो एक डॉक्टर हूँ। तुम मुझे गलत समझ रहे हो। मैं तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगी। कृपया दरवाजा खोल दो।" लेकिन चिड़िया उसकी बातों में नहीं आई। उन्होंने उससे स्पष्ट रूप से मना कर दिया। आखिरकार मायूस होकर बिल्ली वहाँ से चली गई।
शिक्षा - समझदारी किसी भी मुसीबत को टाल सकती है।

*-विज्ञापन-

1. अपने विद्यालय की संस्था 'पहरेदार' की ओर से जल का दुरुपयोग रोकने का आग्रह करते हुए लगभग 30 शब्दों में एक विज्ञापन का आलेख तैयार कीजिए।

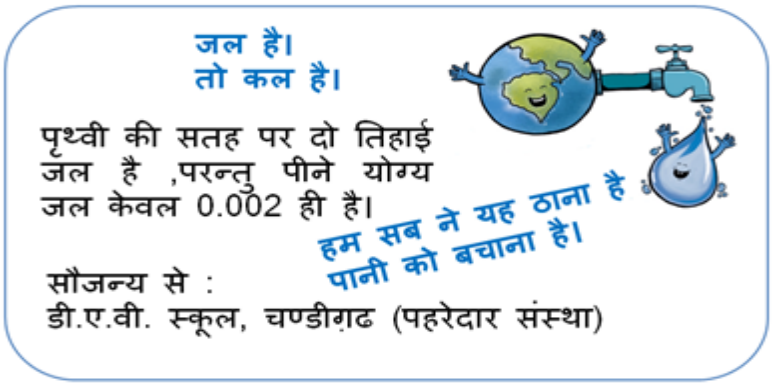

2. विद्यालय की कलाविथि में कुछ चित्र (पेंटिंग्स) बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। इसके लिए एक विज्ञापन लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

3. हिंदी की पुस्तकों की प्रदर्शनी में आधे मूल्य पर बिक रही महत्तवपूर्ण पुस्तकों को खरीदकर लाभ उठाने के लिए लगभग 25-30 शब्दों में एक विज्ञापन लिखिए।

==